Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा चैत्र १९५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112531

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

88-541

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल-पत्रिका, गुरुकुल काँगड़ी.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
6-2842
पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी

राष्ट्रभाषा

ओस और अंगारा

मिला तनिक अवकाश अगर तो, यह भी कभी विचारा ?
तुम आभामय ओस बनोगे या अरुणिम अंगारा ?
ओस, प्रकृतिकी देन रसीली, पलभरकी अुजियाली,
अमर अुषाका अंगराग है, अंगारोंकी लाली ।
अेक मधुर मुसकान, दूसरा है भीषण-रव गर्जन,
जन्म दूसरेका है, पहलेका अनिवार्य विसर्जन ।
ओस झलकती, मगर सदा पैरोंसे कुचली जाती,
लग न सका पग, अगर दहकता रहा सजग अंगारा ।

—शिवसिंह 'सरोज'

जुलाअी, १९५१

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मुखपत्र
संपादक
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

विषय-सूची

१.	सम्पादकीय	२४५
२.	कर्नाटक दर्शन	२४८
३.	प्रश्नपत्रके प्रति	२४९
४.	परीक्षकके प्रति	२४९
५.	वाच्य और प्रयोग	२५०
६.	विरोधी शब्द	२५०
७.	पारितोषिक तथा पुरस्कार	२५१
८.	विश्व कहानी-प्रतियोगिता	२५१
९.	हमारी दृष्टि	२५२
१०.	प्रान्तीय हलचल	२५४
११.	परीक्षा विभाग	२५७

आवश्यक सूचनाअें

डाक

डाक विभागकी नअी व्यवस्थाके अनुसार समितिके नामपर भेजे हुये बहुतसे पत्र बैरंग हो रहे हैं। अतः निवेदन है कि समिति द्वारा आपकी सेवामें भेजे गये अैसे सभी छपे हुअे परिपत्रों (अु० विभिन्न प्रकारके स्वीकृतिपत्र, अुत्तर-पुस्तक तथा अन्य सामग्री पहुँच-पत्र, परीक्षकका वक्तव्य, जांच-पारिश्रमिक-विवरण आदि) को, जिनकी खानापूर्ति करके आपको भेजना होता है— **बुकपोस्टसे न भेजकर लिफाफेमें बंद करके नियमानुसार टिकिट लगाकर ही भेजें।** अिससे समिति दूना पोस्टेज देनेके खर्चेसे बच जावेगी।

तारका पता

वर्धा समितिका तारका पता नीचे लिखे अनुसार है। समितिके नाम तार भजते समय अिसका खयाल रखें ताकि अनावश्यक खर्चेका अवसर न आये।

"राष्ट्रभाषा" वर्धा

"Rastrbhasa" Wardha

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112531
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
112531

राष्ट्रभाषा

वर्ष १०] वर्धा, जुलाअी— १९५१ [अंक ९

सम्पादकीय—

भारत सरकारकी हिन्दी-शिक्षा समिति

गत १२, १३, १४ जूनको राष्ट्रपति-भवन, नयी दिल्लीमें लगातार तीन दिनोंतक अेक बैठक होती रही। अुसमें भाग लेनेवाले थे—

(१) राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, (२) श्री दिवाकर, (३) काका कालेलकर, (४) पंडित मौलिचन्द्र शर्मा, (५) पंडित जयचन्द्र विद्यालंकार, (६) भदन्त आनन्द कौसल्यायन, (७) पंडित सीताराम चतुर्वेदी, (८) डा० ताराचन्द, (९) श्री शंकरराव देव, (१०) श्री अमृतलाल नाणावटी, (११) श्री मगनभाअी देसाअी और (१२) श्री सत्यनारायण। शिक्षा-विभागके विशेष-अधिकारी डा० नरसिंहय्या भी अुपस्थित थे।

तीन दिनके विचार-विमर्श, शंकाओं-प्रतिशंकाओं, अुनके निराकरण, अविश्वास और विश्वासके मिले-जुले वातावरणमें जो निर्णय हुआ अुसके लिअे सभी सदस्य बधाअीके पात्र हैं। हमें भरोसा है और विश्वास करना चाहिये कि भारत सरकारकी यह हिन्दी-शिक्षा-समिति हिन्दीतर प्रान्तोंमें हिन्दी-प्रचारके कार्यमें लगे हुअे हजारों कार्यकर्ताओंकी आशाओंको पूरा करेगी।

तीनों दिनकी कान्फ्रेंसके बाद जो निर्णय हुआ, वह अिस प्रकार है—

“भारत सरकारके शिक्षा-विभागके तत्वावधानमें ‘हिन्दी-शिक्षा-समिति’ नामक अेक केन्द्रीय समितिकी स्थापना की जाय जो हिन्दीतर प्रदेशोंमें हिन्दीके प्रचार कार्यको आगे बढ़ायेगी। हिन्दीतर प्रदेशोंमें अिनकी गणना की गयी है- जम्मू और कश्मीर, पंजाब और पटियाला राज्य संघका पंजाबी-भाषी क्षेत्र, असम, पश्चिमी बंगाल, अुड़ीसा, त्रावणकोर-कोचीन, मैसूर, कुर्ग, हैद्राबाद, बम्बअी, मध्यप्रान्तका मराठी-भाषी क्षेत्र, सौराष्ट्र, कच्छ, मणिपुर और त्रिपुरा तथा अन्य अैसे क्षेत्र जहांके निवासियोंकी भाषा हिन्दी नहीं है।

२–अिस समितिका कार्य होगा छात्रोंके शिक्षण और अुनकी परीक्षाके स्तर और पाठ्य-पुस्तकों आदिका निर्णय करना; (२) शिक्षणकी व्यवस्था करना और विद्यालय खोलना; (३) परीक्षाओंकी व्यवस्था और हिन्दीकी विशेष-योग्यताको मान्यता देना; (४) शिक्षकोंकी ट्रेनिंगकी व्यवस्था करना; (५) हिन्दी शीघ्रलिपि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टाअिपिंग आदिकी शिक्षाका प्रबन्ध; (६) हिन्दी शिक्षण और परीक्षाओंके सम्बन्धमें राज्यों और विश्वविद्यालयोंको सलाह देना; (७) हिन्दीतर प्रदेशोंमें हिन्दी प्रचारका कार्य करनेवाली विभिन्न संस्थाओंकी गतविधिमें समानता और अेकीकरणका अुद्योग करना; (८) शिक्षण और परीक्षोपयोगी पुस्तकोंके निर्माण और प्रकाशनकी व्यवस्था करना तथा (६) हिन्दीतर प्रदेशोंमें हिन्दी प्रचारके लिये केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंसे अर्थिक सहायताकी व्यवस्था करना।

३–केन्द्रीय समितिमें ११ से अधिक सदस्य नहीं रहेंगे। ये सदस्य हिन्दीतर प्रदेशोंमें हिन्दी-प्रचारका कार्य करनेवाली संस्थाओं और चार क्षेत्रीय समितियों तथा भारत सरकारके शिक्षा विभागके प्रतिनिधियोंमेंसे चुने जायेंगे। ये चार क्षेत्रीय समितियाँ अिन भागोंकी होंगी—(क) अुत्तर: जम्मू कश्मीर, पंजाब और पटियाला राज्य संघके पंजाबी भाषी और सिन्धी भाषी क्षेत्र। (ख) पूर्व: असमिया, बंगला और अुड़िया भाषी क्षेत्र। (ग) दक्षिण: तमिल, तेलगू, कन्नड़ और मलयालम भाषी क्षेत्र। (घ) पश्चिमः मराठी और गुजराती भाषी क्षेत्र। अिन क्षेत्रीय समितियोंमें अिन क्षेत्रोंकी हिन्दी-प्रचारक संस्थाओं और सम्बन्धित राज्योंके प्रतिनिधि तथा केन्द्रीय समितिके कुछ प्रतिनिधि रहेंगे। क्षेत्रीय समितिमें १५ से अधिक ६ से कम सदस्य न होंगे। ये क्षेत्रीय समितियां केन्द्रीय समितिके निर्णयोंको कार्यान्वित करेंगी।"

अिसमें कोअी सन्देह नहीं कि सभी हिन्दी-प्रेमी हिन्दी-शिक्षा-समितिके निर्माणका स्वागत करेंगे।

जब तक हिन्दी-शिक्षा समितिका निर्माण नहीं हो जाता और वह अपना कार्य आरम्भ नहीं कर देती, तबतक अुसके विषयमें अिससे अधिक और कुछ भी कहना योग्य नहीं।

पूर्वी-पंजाबमें "पंजाबी" और "हिन्दी"

पटियालाका समाचार है कि गत १४ जूनको वहां ५ हजार सिखोंने काले झंडे लेकर अेक जुलूस निकाला। प्रदर्शनकारी मंत्रिमंडलके अिस प्रस्तावका विरोध कर रहे थे कि हिन्दीको पटियालाके पंजाबी-भाषी क्षेत्रमें अतिरिक्त राजभाषा मान लिया जाय। जुलूसका नेतृत्व अकाली नेता मा० तारासिंह कर रहे थे। अिसी संबंधमें दो सौ सिख छात्रोंके अेक दूसरे जुलूसको भंग करनेके लिअे लाठीचार्ज भी करना पड़ा। तनातनी बढ़नेके कारण धारा १४४ लागू कर दी गयी है।

कुछ समाचार देखनेमें "विशेष" प्रतीत न होते हुअे भी "विशेष" होते हैं। यह समाचार "विशेष" है और बताता है कि हवाका रुख़ किधर है।

हमारा ख्याल है कि "पंजाबी" और "हिन्दी" के वर्तमान झगड़ेका मूल पंजाबमें अुर्दू-हिन्दीके प्रचारके अितिहासमें निहित है। पंजाबमें शासनके सहारे अुर्दू फली और फैली तथा आर्य-समाज और सनातन धर्मका बल पाकर हिन्दीकी बेलने अूपर चढ़ानेका प्रयत्न किया। 'अुर्दू-वाले' और 'हिन्दी-वाले' दोनों अिस बातको भूल गये कि बंगालमें 'बंगला' और गुजरातमें 'गुजराती' की तरह पंजाबमें 'पंजाबी' का अपना स्थान है और होना चाहिये। नतीजा यह हुआ कि अुर्दू और हिन्दी लड़ती रहीं और पंजाबी मरी पड़ी रही।

यदि कहीं स्वराज्य-प्राप्तिसे पहले भारतका सिर कलम न कर दिया गया होता, यदि 'पश्चिमी पंजाब' भारतसे पृथक होकर 'पाकिस्तान' न बन गया होता तो हमारा विश्वास है कि पंजाबमें पंजाबीका आन्दोलन अुतने ही ज़ोरसे अुठता जितने जोरसे किसी भी अस्वाभाविक दबावकी प्रतिक्रिया होती है।

अिस समय 'आधे तीतर-आधे बटेर' पूर्वी-पंजाबमें जो पंजाबीको अपनाने और चलानेकी लहर चली है, वह तो अुस भावनाका संकेत-मात्र है जिसकी अब केवल कल्पना ही की जा सकती है।

अिस समय अुर्दू तो जैसी 'रिटायर' हो गयी। "धर्म-क्षेत्र" में हैं पंजाबी और हिन्दी। 'धर्म-क्षेत्र' शब्दका प्रयोग हमने जान बूझकर किया है, क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी आन्दोलन सिख-आन्दोलन बन गया है और हिन्दी-आन्दोलन हिन्दू-आन्दोलन । पाकिस्तानके निर्माणके बाद भी हमने अपनी समस्याओंको धार्मिक दृष्टिसे देखने और सुलझानेकी ग़लतीको नहीं समझा । पंजाबी और हिन्दीकी भिड़न्तका नया पहलू यह है कि पंजाबीकी लिपिपर विवाद अुठ खड़ा हुआ है । अेक पक्ष जो पंजाबी भक्त और सिख है चाहता है कि पंजाबी गुरुमुखी लिपिमें ही लिखी जाय, दूसरा पक्ष चाहता है कि पंजाबी देवनागरीमें भी लिखी जाय ।

यूं हमारा मत है कि अेक 'पंजाबी' ही क्या 'गुजराती', 'बंगला' आदि सभी प्रान्तीय भाषाअें भी यदि अुसी प्रकार देवनागरी लिपिमें लिखी जाने लगें जैसे 'हिंन्दी' और 'मराठी' लिखी जाती हैं तो समस्त देशको साक्षर बनानेका कार्य बड़ा ही सुकर हो जाय । प्रत्येक पंजाबी, गुजराती अथवा बंगला भाषा-भाषी दो दो लिपियोंके सीखनेके झंझटसे बच जाय और प्रत्येक नागरी लिपिके ज्ञाताके लिअे पंजाबी, गुजराती और बंगला आदि सभी प्रान्तीय भाषाओंका सीखना बहुत आसान हो जाय ।

किन्तु, कोअी भी प्रान्तीय भाषा कि॰ लिखी जाय, अिसका निर्णय अुस प्रान्तका और भाषाका अपना प्रश्न है । हमारा यह निश्चित मत कि जो अपनेको हिन्दीवाले कहते और समझते हैं वे यदि अिस प्रश्नमें अुलझेंगे तो किसी प्रान्तीय-भाषाका कुछ भी हित न कर सकेंगे और "हिन्दी"का अहित कर बैठेंगे ।

यदि पंजाबी-प्रेमियोंका अधिकांश गुरुमुखीके ही पक्षमें है तो हमें अभी नागरीका आग्रह छोड़ देना चाहिये । गुरुमुखी और नागरी दोनोंकी वर्णमाला अेक सी ही है । दोनोंमें कोअी अितना बड़ा अन्तर नहीं कि अिस विषयको विवाद और सिर फुटव्वलका विषय बनाया जाय ।

हां, चुनाव सिरपर है । यदि अिस गुरुमुखी-नागरी कलहका भी चुनाव-प्रेमियोंके लिअे कुछ अुपयोग हो तो हमें कुछ भी नहीं कहना है ।

—आनन्द कौसल्यायन

हिन्दी शिक्षकोंको विशेष सुविधा

राजकोट—

सौराष्ट्र सरकारने अपने यहां नियुक्त किये जानेवाले हिन्दी शिक्षकोंकी योग्यता निर्धारणके सम्बन्धमें प्रस्ताव नं० ९८ में जो निर्णय किया है वह अिस प्रकार है—

राष्ट्रभाषा कोविद, विशारद, काबिल तथा गुजरात-विद्यापीठकी हिन्दी विनीत परीक्षा अुत्तीर्ण सज्जन हिन्दी शिक्षकके रूपमें नियुक्त किये जा सकेंगे । ये अुपाधिधारी हिन्दी पढ़ानेवाले शिक्षक ४०-३/२-६४-३-८५ का वेतनमान पानेके अधिकारी होंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटक दर्शन

श्री रामचन्द्र कृष्ण जोशी, प्रमाणित प्रचारक, गदग।

कर्नाटकके अितिहासका दर्शन सभी दृष्टियोंसे अुज्वल है। अिसके साहित्यिक, राजनैतिक, अैतिहासिक, सांस्कृतिक, वाणिज्य आदि सभी कालोंको और अुसके गत वैभवको जब देखेंगे तब हम अुसकी प्राचीन परंपरा और वैभव देखकर आश्चर्यचकित होंगे।

अिसकी भाषा कन्नडकी प्राचीनता लगभग पांच हजार बरसकी होती है। दक्षिण भारतकी भाषाओंमें कन्नड अेक प्राचीन और स्वतंत्र भाषा मानी जाती है। आर्योंके दक्षिण भारतमें आनेके पहले ही कन्नड भाषा भाषी सुसंस्कृत बन गये थे। प्राचीनतामें तमिलके बाद अिसीका स्थान है।

प्राचीन कर्नाटककी हद गोदावरी नदीसे कावेरी नदी तक मानी जाती है। और अिस प्रदेशमें प्राचीन कालके कन्नडके राजाओंने राज्य किया। प्राचीन भारतीय साहित्यके अत्यंत प्राचीन और पूज्य ग्रंथ रामायण और महाभारतमें भी कर्नाटकका अुल्लेख हमें मिलता है। महाभारतके सभापर्व–भीष्मपर्व अिस कथन के निदर्शन भी हैं। "वनवासिका" "महीषिका" "कुंतलके बनवासी" शब्दोंसे मैसूर और अुत्तर कर्नाटकका भी अुल्लेख हो सकता है।

कर्नाटक पुराणकालसे ही पहले प्रसिद्ध है। प्राचीनताके संबंधमें मैंने जो अुदाहरण बताये अिनसे हमें यह ज्ञात होगा कि ये सब आधार कर्नाटककी प्राचीनता, अुसकी महत्ता तथा अुसकी संस्कृति और अितिहास पर अेक नया प्रकाश डालते हैं। स्मृतिकालमें मनु आदि स्मृतिकारोंने कहा— "नटश्च करणश्चैव" यहाँ "करण" शब्दका अर्थ कन्नड जनांगसे ही लगता है। मत्स्य पुराणसे भी ज्ञात होता है कि करण "कण्ण" यदु, तुर्वसु वंशके ही हैं।

ऋग्वेदमें यदु, तुर्वसु वंश प्रसिद्ध हैं। ये दोनों वंश कन्नड जनांगके हैं। आगे चलकर ये ही कन्नड जनांग राष्ट्रकूट, गंग नामसे प्रसिद्ध हो गये। राज्य स्थापनके पहले ये लोग "हट्टिकार" (नोमैड्स) होकर अिधर अुधर घुमक्कड होकर फिरते थे। ये ही आगे चलकर आर्य (आरेरू) तेलगू भी हो गये हैं।

छांदोग्योपनिषत्में "मडची" शब्द कन्नडमें "मिडिचे" हो गया। कन्नडके संशोधक श्री. शं. बा जोशी, डॉ. जाकोबी, डा. भांडारकर आदि लोग अनुमान करते हैं कि ऋग्वेद कालसे छांदोग्योपनिषत् कालके अंत तक आंध्र-कर्नाटक भाषाकी जननी प्राचीन कन्नड भाषा भी अेक स्वरूपकी निश्चित हदतक पहुँच चुकी थी। अिस प्रकार विचार करें तो कन्नड भाषाकी मूल प्राचीनता ऋग्वेद कालतक पहुँच सकती है।

कर्नाटकके संशोधकोंने "कन्नड" और कर्नाटक भिन्न शब्दोंके बारेमें अनेक अभिप्राय प्रकट किये हैं, कर्नाट, अथवा कन्नड; करुनाड या (कालीजमीन) कर्नाड भी कहा जा सकता है। कर्नाडका तद्भवरूप ही कन्नड है। कन्, कर्ण या "कन्" (ज्ञान) अिन शब्दोंसे ही कन्नडकी व्युत्पत्ति हुअी है।

मोहनजोदडो हडप्पाकी सफल खोजके बाद "कण्णनीर" जो शब्द निकला है अुसका अर्थ कण कन् शब्दसे हो हो सकता है। कन्नडके संशोधकों तथा अन्य भाषा भाषी शोधकोंका भी मत यही है कि "कण्णनीर" का अर्थ कन्नडिग है। अिस शोधसे कन्नड तथा कर्नाटककी प्राचीनता अी. पू. पूर्व ५६०० वर्ष तक प्रमाणित हो सकती है।

प्राचीन कर्नाटक तथा कन्नडके अितिहासको चार विभागोंमें विभक्त कर सकते हैं। प्राक् वेदकाल, प्राचीन युग, मध्ययुग तथा अर्वाचीन काल।

[शेष पृष्ठ २५३ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्नपत्र के प्रति

बार बार तू आया । पर मैंने पहचान न पाया !
तू आया ले अुलझी भाषा, शब्दोंमें कुछ लिअे तमाशा !
तूने मेरा धक्का खाया ।
बार बार तू आया ।
'कुंजी' में से निकल पड़ा तू,
बड़ा सरल था कठिन बड़ा तू,
पर मैं गफलत में भरमाया !
बार बार तू आया !
लाल लाल कुछ चिन्ह लगाये,
आया फिर तू अलख जगाये ।
हटकर मैंने तुझे हटाया
बार बार तू आया ।।

परीक्षक के प्रति

तुम तुंग 'परीक्षक' शैल और मैं अेक 'छात्र' बेचारा।
तुम आलोचक संहारकर, मैं मूढ भाग्यका मारा ?
तुम ग्रन्थ और मैं भूल,
तुम ज्ञान गर्वके अन्धकार, मैं हूँ जड़ताकी भूल ।
तुम प्रश्न-पत्रके जटिल प्रश्न, मैं गोलमोलसी भाषा,
तुम वह भू की हो मृगतृष्णा मैं हूँ नटखट मृगशाखा,
तुम ज्वर मैं दुर्बल काया,
तुम भीम भयंकर ज्ञान ब्रह्म, मैं महा मूढ़ता माया ।
तुम जीर्ण तरीके कर्णाधार, मैं हूँ तरनेकी आशा,
तुम कठिन परीक्षा सिन्धु पार जानेकी मैं अभिलाषा,
तुम आभा, मैं कालिमा,
मुझे पास करनेमें होगी, तुमको गौरव-गरिमा ।

रचियता—श्री सुधीन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षोपयोगी—

वाच्य और प्रयोग

वाच्य—क्रियाके जिस रूपसे यह जाना जाता है कि क्रियाके द्वारा कर्ता, कर्म अथवा भावके विषयमें कुछ कहा गया है अुसे वाच्य कहते हैं।

प्रकार—वाच्य तीन प्रकारके होते हैं। १ कर्तृ-वाच्य, २ कर्मवाच्य, ३ भाववाच्य।

कर्तृवाच्य—अिसमें वाक्यका अुद्देश्य क्रियाका कर्ता रहता है। अुदा०—सकर्मक कर्तृवाच्य—गोपाल "राष्ट्रभाषा" मासिक-पत्र पढ़ता है। सरला भावगीत गाती थी। अकर्मक कर्तृवाच्य अुदा०— वसन्त बैठता है। घोडे दौड़ते थे।

कर्मवाच्य— अिसमें वाक्यका अुद्देश्य क्रियाका न कर्म रहता है। अुदा०— लड़केसे पुस्तक पढ़ी जाती है। लडकियोंसे गीत गाये जायेंगे।

भाववाच्य— अिसमें वाक्यका अुद्देश्य न कर्ता, कर्म होता है; केवल भाव होता है। अुदा०— सकर्मक भाववाच्य— रामसे पुस्तकको पढ़ा जाता है। अकर्मक भाववाच्य अुदा०—यहाँ कैसे बैठा जायेगा? मुझसे नहीं दौड़ा गया।

प्रयोग— क्रियाके जिस रूपसे यह जाना जाता है कि क्रियाके पुरुष, लिंग और वचन कर्ताकारक अथवा कर्मकारकके अनुसार है अथवा नहीं अुस रूप-को प्रयोग कहते हैं।

प्रकार— प्रयोग तीन प्रकारके होते हैं। (१) कर्तरि प्रयोग (२) कर्मणि प्रयोग (३) भावे प्रयोग।

कर्तरि प्रयोग— अिसमें क्रियाके पुरुष, लिंग, वचन कर्ताके अनुसार होते हैं। अुदा० सकर्मक कर्तरि प्रयोग— राम पुस्तक पढ़ता है। लड़की गाना गाती थी। अकर्मक कर्तरि प्रयोग अुदा०— वह बैठता है। वे दौड़ते थे।

कर्मणि प्रयोग— अिसमें क्रियाके पुरुष, लिंग, वचन कर्मके अनुसार होते हैं। अुदा०— रामने पुस्तक पढ़ी। लडकियोंने गीत गाये।

भावे प्रयोग— अिसमें क्रियाके पुरुष, लिंग और वचन न कर्ताके न कर्मके अनुसार होते हैं। कर्ताके साथ 'ने' और कर्मके साथ 'को' रहता है। अुदा०— रामने पुस्तकको पढ़ा। लडकियोंने गीतोंको गाया।

प्रारंभिक और प्रवेशके परीक्षार्थियोंके लिये —

विरोधी शब्द

नीचे लिखे शब्दोंके विरोधी अर्थ दर्शक शब्द लिखिये और अपने अध्यापक द्वारा जँचवाकर सही शब्दोंको समझ लीजिये।

अमीर …………	**बड़ा** …………	**गरमी** …………	**खुशनसीब** …………
जाड़ा …………	**दिन** …………	**नीचे** …………	**घना** …………
सस्ता …………	**हार** …………	**दीन** …………	**बहुत** …………
बीमार …………	**महीन** …………	**होशियार** …………	**सुस्त** …………
टेढ़ा …………	**चिकना** …………	**साहस** …………	**भारी** …………
खुशबू …………	**खूबसूरत** …………	**भरपेट** …………	**खुरदरा** …………

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य ज्ञान —

"हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागके" के संवत् २००८ के विविध

पारितोषिक तथा पुरस्कार

श्री मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक

१२००) का अुक्त पारितोषिक अिस वर्ष साहित्यके काव्य विषयपर दिया जायगा। काव्यके अंतर्गत काव्य [गद्य और पद्य], नाटक, अुपन्यास और कहानी सम्बन्धी साहित्यकी गणना की जायगी। यह पारितोषिक निम्न विषयोंमेंसे प्रत्येक वर्ष अेक-अेक विषयपर दिया जाता है। यथाः–काव्य, निबन्ध, अितिहास, समाजशास्त्र, दर्शन, तात्विक विज्ञान और व्यावहारिक विज्ञान। क्रमानुसार अिस वर्षका पारितोषिक काव्य विषयपर दिया जायगा।

श्री सेकसरिया महिला पारितोषिक

५००) का अुक्त महिला पारितोषिक किसी महिला लेखिकाको अुनकी स्वरचित हिन्दी मौलिक रचनाके सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री मुरारका पारितोषिक

५००) का अुक्त पारितोषिक बंगाली, अुड़िया या आसामी भाषा-भाषी लेखक या लेखिका द्वारा लिखी गयी हिन्दीकी किसी रचनाके सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री रत्नकुमारी पुरस्कार

२५०) का अुक्त पुरस्कार हिन्दीके किसी मौलिक नाटकके सम्मानार्थ दिया जायगा।

श्री नेमीचन्द्र पुरस्कार

५००) का अुक्त पुरस्कार वीररसपूर्ण बाल साहित्य विषयपर हिन्दीकी किसी मौलिक रचनाके सम्मानार्थ दिया जायगा। बाल साहित्यके अन्तर्गत वे सभी रचनाअें गृहीत होंगी, जो देश, धर्म, समाज अेवं बालकोंके चतुर्दिक विकास और अुत्थानको ध्यानमें रखकर लिखी गयी होंगी।

——०——

विश्व कहानी-प्रतियोगिता

'हिंदुस्तान टाअिम्स' द्वारा कहानी प्रतियोगिताका संयोजन हुआ था। अिसमें 'हिन्दुस्तान' की हिन्दी कहानी प्रतियोगिताकी सर्वश्रेष्ठ चार कहानियाँ सम्मिलित की गयी थीं। अिसका परिणाम प्रगट हो गया है। निम्न लिखित आठ कहानियोंपर ५२५०) के पुरस्कार प्रदान किये गये हैं –

कहानीका शीर्षक	लेखक	पुरस्कार
१. आँखें	श्री के०टी० मुहम्मद	१५००)
२. तूफान	श्री पी० पद्मराज	१०००)
३. पठान	श्री यू० अेस० मेनन	७५०)
४. पहलवान	श्री जी०डी० खोसला	६००)
५ मनहूस सीढ़ियाँ	श्री अेस०के चेट्टूर	५००)
६. जननी	श्री अीश्वर पेटलीकर	४००)
७. हृदयकी रानी	श्री जी० अेस० राव	३००)
८. कायरता	श्री वेणगोपाल रेड्डी	२००)

अिनमेंसे प्रथम दो कहानियाँ —'आँखें' और 'तूफान'— विश्व कहानी-प्रतियोगिताके लिअे चुनी गयी हैं। अिस प्रतियोगितामें विश्वके २३ राष्ट्रोंकी कहानियाँ सम्मिलित की गयी हैं। अिनमेंसे सर्वश्रेष्ठ कहानीको ५००० डालरका पुरस्कार मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी-दृष्टिमें

प्राणोंके स्वर— ले०-श्री. दामोदर; प्रकाशक— भावना प्रकाशन मंदिर, मअूकोठी, आर्यनगर, गोरखपुर। पृष्ठ संख्या— ६६; मूल्य २॥)

अिसमें किशोर कवि 'दामोदर' के पैंतीस गीत संग्रहीत हैं। ये गीत सरल हैं, साफ हैं प्रवाहमय हैं और अनेक पुराने गीतकारोंके गीतोंसे अच्छे हैं, मगर...... । भावुकताका अतिरेक हर गीतमें है, यहाँतक कि अंतिम गीत तक पहुँचते-पहुँचते कविने लिखा है—

पहले मेरा गला घोंट दो लो अपना शिर पीट,
कौवे, आँख मूँद फिर पी जाओ मेरी जहरीली साँस;
गिद्ध, चील खा जायें हमें निचोर-निचोर!
छोड़ प्यारकी बस्ती अब तुम चलो मौतकी ओर!!

हम भाअी दामोदरसे अपनी रुचि और प्रयत्नकी दिशाको बदलनेका आग्रह करते हैं।

— भवानी प्रसाद मिश्र

आचार्य शुक्ल और अुनकी त्रिवेणी— ले०- प्रो० शिवनन्दन प्रसाद, प्रकाशक— रामसहायलाल बुकसेलर, गया। पृष्ठ संख्या १४३, मूल्य १॥।)

प्रस्तुत पुस्तकमें आचार्य रामचन्द्र शुक्लजीके तुलसी, सूर, कबीर आदिपर छात्रोपयोगी ढंगसे विद्वत्तापूर्ण निबंध संग्रहीत किये गये हैं। ग्रंथके प्रारंभमें आचार्य शुक्लजीकी समालोचना पद्धति, अुनके जीवन और काव्य संबंधी सिद्धान्त आदिकी भी विवेचना की गयी है।

—शीलभद्र साहित्यरत्न

हिन्दी-शुद्धलेखन— ले०—श्री. यशश्चन्द्र; प्रकाशिका— श्रीमती अुषादेवी गर्ग, विद्या-ग्रंथ— प्रकाशन, वर्धा। पृष्ठ संख्या ६४; मूल्य ॥=)

यह अनुभवकी बात है कि प्रायः अशुद्ध लिखने के कारण ही बहुतसे विद्यार्थी राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें सुयश नहीं पा सकते हैं। सुयश प्राप्तिकी दिशामें प्रस्तुत पुस्तक अुपयोगी सिद्ध होगी।

अिसमें व्याकरणके साथ हिन्दीकी विशेषताअें समझायी गयी हैं अेवं अहिन्दी भाषियोंके हिन्दी लेखन की भूलोंका दिग्दर्शन कराया गया है।

अिसकी भूमिकामें हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्र. मंत्री श्री. रायचरणजी अग्रवालके लिखें अनुसार यह पुस्तक केवल राष्ट्रभाषा परीक्षार्थियोंके लिअे ही नहीं, अपितु सभी अहिन्दी भाषा क्षेत्रोंमें हिन्दी सीखने वालोंके लिअे अुपयोगी सिद्ध होगी।

—श्रीराम अट्रावलकर

"जयभारती" मासिक-पत्र — संपादक अेवं प्रकाशक—श्री पं. मु. डांगरे, संचालक, महाराष्ट्र राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, पूना। अप्रैल-मअी १९५१ पृष्ठ-संख्या १५६ मूल्य १) । जून ५१ अंक पृष्ठसंख्या—३६, मूल्य ।=)

'जयभारती' के प्रस्तुत अंक सामने हैं। अप्रैल और मअीका संयुक्तांक 'अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलनका विशेषांक' भी है। यह विशेषांक विशेषांकके अनुरूप मोटा है, अच्छा भला लगता है। अिसमें श्री वियोगी हरिजी अेवं आचार्य श्री क्षितिमोहन सेनजीका परिचय है। बाकी विविधता अिसकी विशेषता है।

जीवनियाँ, कहानियाँ, परीक्षोपयोगी अेवं जानकारीपूर्ण लेखों, का अच्छा संचयन अिस अंकमें हुआ है। राष्ट्रभाषाके कुछ प्रमुख कर्मठ महानुभावोंके दर्शन चित्रद्वारा कराये गये हैं। महाराष्ट्रके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपूर्ण प्रमाणित प्रचारकों और केन्द्रव्यवस्थापकोंका थोड़ेमें किन्तु अपने आपमें पूरा परिचय दिया गया है।

सम्मेलन विशेषांकके पश्चात जूनका अंक सामने है। सच्चे अर्थोंमें जूनका अंक सम्मेलन विशेषांक है। अिसमें सम्मेलन अधिवेशनका पूरा विवरण, भाषण, प्रस्ताव आदि हैं।

दोनों अंकोंको सब तरहसे अुपयुक्त अेवं संग्रहणीय बनानेमें संपादकने कोअी कसर बाकी नहीं रखी। जिस ढंगसे अंकोंका संपादन किया है, अुसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी ही होगी।

छपाअीकी भूलें कहीं कहीं विशेष रूपसे हैं। छपाअी, सफाअी सुन्दर है।

— दीनदयाल 'दिनश'

प्राप्ति-स्वीकार

मेरी विकास कथा अर्थात् दिव्य दर्शन — ले०— स्वामी सत्यभक्त; प्रकाशक— मंत्री, सत्यसन्देश ग्रंथमाला, सत्याश्रम, वर्धा; पृष्ठ संख्या १२०, मूल्य ।।।)

क्या संसार दुःखमय है? — ले०— स्वामी सत्यभक्त; प्रकाशक — सत्याश्रम, वर्धा; पृष्ठ संख्या ३२; मूल्य ।)

हिन्दी बाल कहानियाँ और बाल हिन्दी पाठावली— संपादक— श्री. मगनभाअी देसाअी, प्रकाशक—नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद। प्रथम पुस्तक पृष्ठसंख्या ३६; कीमत ।)। दूसरी पुस्तक पृष्ठ संख्या ६४; कीमत ।=)

संगीत प्रदीप— लेखिका— सुश्री बुलबुल मित्रा; प्रकाशक— मानस मंदिर, जबलपुर। पृष्ठसंख्या १४१, मूल्य ३।।)

—व्यवस्थापक

(पृष्ठ २४८ का शेष)

कर्नाटक दर्शन

प्राचीन कालमें कर्नाटक सुप्रसिद्ध था। अिसका परिचय हमें पुराणोंसे अच्छी तरह प्राप्त होता है। कहा जाता है कि हनुमानने होन्नावरमें राज्य किया था। (हनुम+अवर) होन्नावर हुआ है। तथा गोकर्णमें महाबलेश्वर और पंचलिंगोंकी स्थापना रामायण कालमें ही हुअी है।

कर्नाटकमें अैसे स्थान भी हैं जिनके नाम मात्रसे ही रामायण कालका पता चलता है वे अभी देखने लायक भी हैं। मैसूर रियासतके चित्रदुर्ग जिलोंमें "जटिंग" नामक स्थान है जो जटायुका वधस्थल माना जाता है और पंपा सरोवर, हंपी, सितेय सेरगु हानगल्ल नामक गांवके पास "कुंतियदिब्ब" रावणन केरे (तालाब), तथा भीमन जारुगुंडी (फिसली), पांडवर मनेगलु कीचकन गरडीमने (अखाड़ा) आदि जगहोंसे अच्छी तरह ज्ञात होता है। रामायण और महाभारत कालमें कर्नाटकका केवल अस्तित्व ही नहीं अुसका प्रभाव और महत्व भी अैतिहासिक दृष्टिसे महत्वका था।

भागवतमें लिखा है कि बलरामने पंपासरोवर, भीमा, कावेरी नदियोंमें स्नान करके श्रीशैल, गोकर्ण, आदि कर्नाटकके पुण्य क्षेत्रोंका संदर्शन किया है। वामन पुराणमें भी कहा गया है कि परमात्माने वामनावतार लेकर बलिचक्रवर्ति राजाको पाताल लोक भेजा। और अुस समय कर्नाटक पाताल लोक समझा जाता था।

वामनावतार हजारों वर्ष पहले हुआ अिस हिसाबसे कन्नड, कर्नाटककी प्राचीनता का अंदाज लगा सकते हैं। कन्नडकी यह प्राचीनता शिलालेखोंसे तथा अितिहास खंडहारोंसे भी ज्ञात होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचल

[निवेदन— राष्ट्रभाषा प्रचारकों और केन्द्र व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि वे कृपया "राष्ट्रभाषा"में प्रकाशनार्थ अपने केन्द्रके वर्ग, समारोह आदि राष्ट्रभाषा-कार्यका विवरण, समाचार आदि **प्रांतीय संचालकके** द्वारा भेजें। — व्यवस्थापक]

महाराष्ट्र

पूना— महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पूना की तरफसे "तुलसी महाविद्यालय" खोला जा रहा है। अिसमें हिन्दीकी अुच्च परीक्षाओं – 'राष्ट्रभाषा रत्न', 'साहित्य विशारद' और 'साहित्य रत्न' – की पढ़ाअीके वर्ग लगेंगे। सभी वर्ग दि. १ जुलाअी १९५१ से प्रारंभ होंगे। अिसमें ग्रंथालय, वाचनालय आदि सब प्रकारकी सुविधाअें रहेंगी।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी "राष्ट्रभाषा अध्यापन विशारद" अुपाधि परीक्षाकी सिद्धताके लिअे "राष्ट्रभाषा अध्यापन विद्यालय" खोला जा रहा है। अिसमें साहित्य विशारद या राष्ट्रभाषारत्न परीक्षार्थियोंको ही प्रवेश मिल सकेगा। अिस वर्गका प्रारंभ ता. १ जुलाअी ५१ से होगा।

विदर्भ–नागपुर—

श्री जिला-संगठकका दौरा—खामगांवसे श्री भंवरलाल सेवकने ता० १५ और १६ जून को मलकापुर, दाताला, दाभाडी और शेलगांव बाजार, अिन चार केन्द्रोंमें भ्रमण किया। मलकापुर जनपद-अध्यक्षसे और अुस सर्किलके स्कूल अिन्स्पेक्टर श्री॰ देशपांडेजीसे सेवकजीने काफी चर्चा की। रा. भा. प्रचारमें सक्रिय सहयोग देनेके लिअे अनुरोध किया। दोनों राष्ट्रभाषा-प्रेमी सज्जनोंने सहायता देनेका वचन दिया। शेलगांव बाजारमें सेवकजीके साथ हमारे पुराने प्रमाणित प्रचारक श्री भिकूसा चवरे व श्री कमलाकर पाटील भी थे। स्थानीय हाअीस्कूलके मुख्याध्यापकजीसे चर्चा हुअी। अिस हाअीस्कूलमें पूरा समय देनेवाला अेक योग्य राष्ट्रभाषा शिक्षक वे अच्छे वेतनपर नियुक्त करनेके लिये तैयार हैं।

अकोला जिलाके बालापुर तहसीलके जनपद-अध्यक्षजीने भी अपने जनपदमें राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्यमें सहयोग देनेका वचन दिया है।

आशा की जाती है कि अूपरके केन्द्रोंमें अगले सितंबर की राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अधिकसे अधिक संख्यामें विद्यार्थी बैठेंगे।

नागपुर —

नागपुरकी हमारी प्रमाणित प्रचारिका कुमारी भारती शर्मा (पं. हृषीकेशजी शर्माकी सुपुत्री) नागपुर युनिवर्सिटीमें बी. अे. आनर्स (हिंदी)में प्रथम श्रेणीमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व-प्रथम अुत्तीर्ण हुअी है। अुसे स्वर्ण-पदक भी प्राप्त हुआ है। बधाअी।

बम्बअी

हिन्दी महाविद्यालय—बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाकी ओरसे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी अुच्च परीक्षाअें कोविद तथा रत्नके विद्यार्थियोंके लिये पढाअीका प्रबन्ध सुव्यवस्थित रूपसे हो अिस दृष्टिसे प्रतिदिन वर्गोंका प्रबन्ध किया है। ये वर्ग हर रोज सायंकालको चौपाटी स्थित विल्सन कॉलेजमें सोमवार तारीख २ जुलाअी १९५१ से चलेंगे। आवश्यकतानुसार प्रारंभिक परीक्षाओंके वर्ग भी चलाये जायेंगे।

हिन्दी राष्ट्रभाषा विद्यालय, जोगेश्वरी—यह विद्यालय जोगेश्वरीमें स्थित अिस्माअील कॉलेजमें राष्ट्रभाषाकी विभिन्न परीक्षाओंके विद्यार्थी तैयार करनेके लिये ता० १७ जून ५१ को शुरू किया गया है। अिसका अुद्घाटन नवभारत टाअीम्सके सम्पादक श्री राजबहादुर सिंहजीके हाथों सम्पन्न हुआ। अुन्होंने अपने भाषणमें राजभाषा हिन्दीके निर्णयका काफी विश्लेषण किया तथा अिस बातकी बडी आलोचना की कि सरकार अभीतक अिस निर्णयको कार्यान्वित करनेके लिये सचेष्ट होकर प्रयत्न नहीं कर रही है। अिन वर्गोंको संचालित करनेका श्रेय श्री धनंजयकुमार आर्य, महादेवप्रसाद मौर्य तथा श्री. रसिकलाल शाहको है।

"बंबअी प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाकी व्यवस्थापिका समितिकी बैठक रविवार ता. २४ जून १९५१ को शामके ५ बजे फेलोशिप स्कूलके सभा भवनमें श्री. छगनभाअी दीवावालाजीकी अध्यक्षतामें हुअी थी। अिस बैठकमें १९५१ के वर्षका अनुमान-पत्र, पिछले वर्षका जांचा हुआ आय व्यय-विवरण तथा वार्षिक-कार्य-विवरण स्वीकृत किया गया। अिसके अतिरिक्त केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारके लिये निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत किया गया :—

बंबअी प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाकी व्यवस्थापिका समिति केंद्रीय तथा प्रांतीय सरकारोंका अिस बातकी ओर विशेष रूपसे ध्यान खींचती है कि विधानको स्वीकृत किये डेढ़ वर्ष बीत गये फिर भी राजभाषा हिन्दीको शनैः शनैः जो स्थान मिलना चाहिये अुस ओर अभी तक हमारी राष्ट्रीय सरकारने कोअी ठोस काम नहीं किया है। यह अत्यंत खेदकी बात है। हम सरकारसे अनुरोध करते हैं कि वह शीघ्र ही कोअी ठोस योजना बनाकर हिन्दीके कार्यको बल देगी तथा अुसे अपने कामकाजमें यथोचित स्थान देगी।

अभी अभी जो सूचना समाचार पत्रोंमें प्रकाशित हुअी है अिससे ज्ञात हुआ कि हिन्दीके कार्यको सुसंगठित करनेके लिअे केंद्रीय तथा चार प्रादेशिक बोर्ड बनाये जायेंगे। सरकारके अिस निर्णयका हमारी सभा स्वागत करती है। हमारी सभा बंबअीकी सबसे बडी संस्था होनेके नाते अेक प्रातिनिधिक संस्था है अतः यह मांग करती है कि सभाको केन्द्रीय तथा प्रादेशिक बोर्डों पर समुचित प्रतिनिधित्व दिया जाय और सभाका पूरा सहयोग लिया जाय।"

हिन्दी राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्र चेम्बूर कॉलनी—अिसका वार्षिकोत्सव ता. १३ मअी ५१ को सायंकालके ४ बजे स्थानीय म्युनिसिपल स्कूलमें धर्मयुगके संपादक श्री. विद्यालंकारजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर संगीत नृत्य आदिका भी आयोजन किया गया था। अिन वर्गोंकी सफलताका श्रेय श्री. चेतनराम वजीरानी मंत्री तथा श्री. मुरलीधर जेस्वानी अध्यक्षके अनथक प्रयत्नोंको जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरसोवा हिन्दी प्रचार सभा— अिसके विद्यार्थियोंका स्नेहसम्मेलन तथा पुस्तकालयका अुद्‌घाटन समारंभ मछलीमार म्युनिसिपल स्कूलमें ज्ञानगंगाके सुप्रसिद्ध लेखक श्री. नारायण प्रसाद जैनकी अध्यक्षतामें संपन्न हुआ। पुस्तकालयका अुद्‌घाटन बंबअी राज्य हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्रधानमंत्री श्री. अवधनारायण द्विवेदीजीने किया। अध्यक्षने भाषणमें अिस बात पर जोर दिया हिन्दी भाषियोंको अन्य भाषाओंका अध्ययन करना चाहिये।

राष्ट्रभाषा विकास सभा, वरली— वरलीमें पछले कुछ वर्षोंसे श्री. मालतीबाअी पाटकरके प्रयत्नोंसे राष्ट्रभाषाके वर्ग बॉम्बे अेज्युकेशन लिग्ज़ हाअीस्कूल वरलीमें चलते रहे हैं। अिन वर्गोंको अधिक सुसंगठित करनेकी दृष्टिसे स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रेमी भाअी बहनोंने राष्ट्रभाषा विकास सभा, वरली नामक संस्थाकी स्थापना की है। अिस सभाकी कार्य-कारिणी नीचे अनुसार है—

श्री. मालतीबाअी पाटकर	अध्यक्ष.
„ तुकाराम जोंधले	अुपाध्यक्ष.
„ राजा पाटील	मंत्री.
„ कुमारी स. ह. जीत	संयुक्तमंत्री.
„ सु. र. देसाअी	प्रबंधमंत्री.
„ वि. कृ. हांदे	ग्रंथालयमंत्री.
„ रा. के. जाधव	कोषाध्यक्ष.

तथा अन्य आठ सदस्य।

राष्ट्रभाषा प्रचार सभा दादर— तारीख १५ मअीसे अिस सभाकी ओरसे साहित्य-रत्नका वर्ग शुरू किया गया है। अिस सत्रमें प्रथम खंडका अध्यापन किया जायेगा।

नवोदित प्रगत मण्डल, गिरगांव— रविवार तारीख ६ मअी ५१ को अिस केन्द्रका पाँचवाँ प्रमाणपत्र वितरणोत्सव बॉम्बे अेज्युकेशन लिग्ज़ हाअीस्कूल ठाकुरद्वारके हॉलमें मराठीके सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी श्री. मामा वरेरकरकी अध्यक्षतामें मनाया गया। प्रारंभमें वर्गके व्यवस्थापकने केंद्रका वार्षिक विवरण पढ सुनाया। अबतक कुल २००० विद्यार्थी अिस केंद्रसे लाभ अुठा चुके हैं।

अध्यक्षने अपने भाषणमें हिन्दीके प्रति सच्ची लगन विद्यार्थियोंमें होनी चाहिये अिस बातकी ओर ध्यान खींचा। हिन्दीके बोलनेमें और लिखनेमें शुद्धि की ओर आजकल कम ध्यान दिया जाता है यह अेक अत्यंत सोचनीय बात है। अिस प्रकार अंग्रेजीके शुद्ध रूपके लिये हमारा आग्रह रहता था वही आग्रह हिन्दीके लिये भी होना चाहिये। आगे चलकर अुन्होंने बताया कि विधानके अनुसार हिन्दी १५ वर्षोंके बाद राजभाषा के रूपमें प्रतिष्ठित होगी लेकिन मुझे अिससे बडी आपत्ति है। हिन्दीको आज ही वह प्रतिष्ठा क्यों न मिले? अंग्रेजी हमारे राष्ट्रके लिये अेक प्रकारके केन्सर के रूपमें है, अिसलिये अिसका मोह न रखकर हिन्दीको जल्द से जल्द जनताको अपना लेना चाहिये और सरकारपर दवाव डालना चाहिये जिससे पंद्रह वर्षोंकी यह लंबी अवधि कम की जा सके। हरेक राष्ट्रभक्त नागरिकका कर्तव्य है कि आजसे ही हिन्दीको सीखनेकी दृढ प्रतिज्ञा करे।

अिसके अतिरिक्त आपने अिस बातपर भी जोर दिया कि मराठीके अुत्कृष्ट ग्रंथोंका हिन्दीमें और हिन्दीके अुत्कृष्ट ग्रंथोंका मराठीमें अनुवाद कर साहित्यिक आदान प्रदान बढानेकी बडी आवश्यकता है। यदि अिस प्रकार हिन्दीका वैभव सभी प्रांतीय भाषाओंके सभी भारतीयोंके प्रयत्नोंसे बढता रहा तो वह संसारमें अेक महत्वपूर्ण भाषाका स्थान पा सकेगी।

अिस अवसर पर प्रांतीय संचालक श्री. कांतिलाल जोशीकी अुपस्थिति अुल्लेखनीय है। अुन्होंने अपने भाषणमें नवोदित प्रगत मंडलकी प्रगतिपर संतोष व्यक्त किया और यह अिच्छा प्रगट की कि भविष्यमें यह केंद्र राष्ट्रभाषा हिन्दीकी सेवा बडी तत्परताके साथ करता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11 2531

परीक्षा विभाग

आगामी प्रचार परीक्षाअें—

आगामी राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाअें ता. २२, २३ सितम्बर ५१ को होंगी।

सशुल्क परीक्षा-आवेदन-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकके पास देनेकी अन्तिम तारीख २२ जुलाअी '५१ है।

सशुल्क आवेदन-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापक द्वारा वर्धा-कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तरीख २६ जुलाअी '५१ है।

आवेदन-पत्र भेजनेके पहले कृपया ध्यान दें

१. परीक्षार्थियोंके प्रमाण-पत्र यथा-समय भेज दिये गये हैं। परीक्षा-आवेदन-पत्रके साथ प्रमाण-पत्रकी चिट लगनी ही चाहिये।

२. प्रमाणित प्रचारक या हिन्दी अध्यापक बन्धुओंसे अनुरोध है कि वे स्वयं प्रत्येक आवेदन-पत्रपर परीक्षार्थीका पूरा नाम स्पष्ट अक्षरोंमें अवश्य लिखें।

३. परीक्षार्थियोंको अेक सुविधा :— जो परीक्षार्थी वर्धा समिति द्वारा मान्य परीक्षाओंमेंसे कोअी परीक्षा अुत्तीर्ण हो चुके हैं अुनके लिअे पहले से प्रार्थना-पत्र भेजकर किसी परीक्षामें सीधे बैठनेकी अनुमति प्राप्त करनेकी आवश्यकता नहीं है।

अैसे परीक्षार्थी अपना आवेदन-पत्र अन्य साधारण आवेदन-पत्रोंके ही साथ भेज सकते हैं। किन्तु आवेदन-पत्र भेजते समय निम्न बातोंपर ध्यान देना आवश्यक है—

(१) अुत्तीर्ण परीक्षाके प्रमाण-पत्रकी प्रतिलिपि आवेदन-पत्रके साथ नत्थी कर अवश्य भेजें।

(२) प्रमाण-पत्रकी अिस प्रतिलिपिपर केन्द्र-व्यवस्थापकका हस्ताक्षरहोना अनिवार्य है।

(३) केन्द्र-व्यवस्थापक अैसे आवेदन-पत्रोंको साधारण आवेदन-पत्रोंसे पृथक भेजनेकी कृपा करें।

अगर ये शर्तें पूरी न होंगी तो आवेदन-पत्र स्वीकृत न हो सकेगा।

४. बचे हुअे कोरे आवेदन-पत्र :— निरर्थक व्ययको रोकनेकी दृष्टिसे आवेदन-पत्रके सम्बन्धमें परीक्षा-समितिने नीचे लिखा निर्णय किया है—

वर्धा-कार्यालयसे किसी केन्द्रको भेजे जानेवाले सभी आवेदन-पत्र वर्धा-कार्यालयमें वापिस आ जाना चाहिअे। अर्थात् परीक्षार्थियोंके आवेदन-पत्रोंके साथ ही शेष कोरे आवेदन-पत्र भी भेज देने चाहिअे।

जिस केन्द्रसे जितने आवेदन-पत्र वापिस न मिलेंगे, अेक पैसा प्रति आवेदन-पत्रके हिसाबसे अुतनी रकम अुस केन्द्रके केन्द्र-व्यवस्था-खर्चसे लेकर शेष रकम केन्द्रको भेज दी जायगी।

५. परीक्षार्थियों तथा परीक्षा-व्यवस्थाकी सुविधाकी दृष्टिसे नीचे लिखी बातोंपर विशेष ध्यान देना आवश्यक है —

(अ) सारे आवेदन-पत्र अेक साथ ही भेजे जावें।

(आ) आवेदन-पत्रोंका बण्डल रजिस्ट्रीसे ही भेजा जावे।

(अि) आवेदन-पत्र २६ जुलाअी तक वर्धा-कार्यालय अवश्य पहुँच जावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ओ) अेक भी आवेदन-पत्रकी खानापूर्ति गलत या अधूरी न हो।

(अु) आवेदन-पत्रोंका शुल्क भी साथ ही भेजा जावे। "परीक्षा-शुल्क-ब्यौरा" पत्रकपर अिस बातका स्पष्ट अुल्लेख किया जाय कि सम्पूर्ण शुल्क किस तारीखको और किस प्रकार भेजा गया है।

लेखन-कार्य—

कोविद परीक्षार्थियोंके लिअे लेखन-कार्य स्वतंत्र रूपसे रहता है। अिसमें अुत्तीर्ण होना अनिवार्य है। कोविदके परीक्षार्थी तैयारीकी अवधिमें नीचे दिये हुअे विषयोंमेंसे ही किन्हीं आठपर निबंध लिखें।

सितम्बर ५१ की परीक्षाके लिये—

निबन्ध-सूची—

सितम्बर '५१ की परीक्षाके लिये—

१. मेरा सबसे प्रिय हिन्दीका कवि या लेखक।
२. भिन्न भिन्न ऋतुओंमें प्रकृति-सौन्दर्य।
३. अपने प्रान्तीय साहित्यका परिचय।
४. नारी और समाज।
५. हिन्दीमें कृष्ण-काव्य।
६. हमारी कृषि-व्यवस्था।
७. भारतकी आजकी समस्याअें अेवं अुनका हल।
८. समाजपर साहित्यका प्रभाव।
९. व्यवसायका चुनाव।
१०. अेशियायी देशोंमें नवजागरण।
११. आज हम किसे मार्ग-दर्शक चुनें।
१२. स्वास्थ्य।

कोविदके परीक्षार्थी ध्यान दें:—

सितम्बर' ५१ से "साहित्यका साथी" पुस्तकमेंसे 'साहित्यका व्याकरण" नामक अध्याय कोविदके लिअे, पाठ्यक्रममें नहीं रहेगा।

सितम्बर' ५१ से मौखिक परीक्षाके लिअे परीक्षार्थीको "कंठाभरण" पुस्तकसे ही कम-से-कम पाँच कवितायें और तीन गद्यखण्ड कण्ठस्थ करने होंगे।

लेखन-कार्यकी बहियाँ परीक्षार्थी अपने अध्यापकसे जँचवाकर परीक्षा-तिथिके अेक सप्ताह पहले केन्द्र-व्यवस्थापकके पास दे दें।

राष्ट्रभाषा रत्न-परीक्षा—

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न-परीक्षा ता० २२, २३ २४ और २५ सितम्बर' ५१ को होगी।

केन्द्र-व्यवस्थापकके पास सशुल्क आवेदन-पत्र देनेकी अन्तिम तारीख २२ जुलाअी' ५१ है।

सशुल्क आवेदन-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापक द्वारा वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख २९ जुलाअी '५१ है।

"राष्ट्रभाषा रत्न" के परीक्षार्थी ध्यान दें:—

प्रश्न-पत्र ६ ठे के अंतर्गत "हिन्दी ही क्यों" अथवा "राष्ट्रभाषा हिन्दी" पुस्तकसे सहायता ली जा सकती है।

केन्द्रके लिअे अनिवार्य परीक्षार्थी-संख्या

सितम्बर १९५१ से किसी भी केन्द्रसे कम-से-कम १५ परीक्षार्थी होनेपर अुस केन्द्रमें परीक्षाकी व्यवस्था की जा सकेगी।

कोविद-शाल—

अप्रैल' ५१ में हुअी 'राष्ट्रभाषा कोविद' परीक्षा में अुत्तीर्ण जो भी परीक्षार्थी शाल लेना चाहें अुन्हें ता० ३० जुलाअी तक अपने केन्द्र-व्यवस्थापक द्वारा तीन रुपये शाल शुल्क भेजना चाहिये।

अुक्त तिथिके बाद भेजने वाले परीक्षार्थियोंको शाल-शुल्कके रूपमें चार रुपये भेजने पड़ेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३० जुलाअी या अुससे पहले जो परीक्षार्थी अपना शाल-शुल्क सीधे वर्धा-कार्यालय भेजेंगे अुनसे भी चार रुपये शाल शुल्क लिया जायगा।

शाल-शुल्क भेजते समय कृपया पूरा नाम क्रम-संख्या, केन्द्र आदिका स्पष्ट अुल्लेख करें।

नये केन्द्र :—

नया केन्द्र खोलने के लिअे अवधि के भीतर "केन्द्र-व्यवस्थापक आवेदन-पत्र" (पत्रक संख्या ८०) भरकर वर्धा-कार्यालयको भेजें।

आवेदन-पत्र प्रान्तीय संचालकके द्वारा ही आना चाहिये।

भूल-सुधार :—

गत जून' ५१ के अंकमें प्रमाणित प्रचारक न० २५३२, गोआ, महाराष्ट्र, के नाममें असावधानीसे 'कृष्ण' शब्द छूट गया था अिसका दुःख है। नाम अिस प्रकार होना चाहिये था "डॉ. कृष्ण माधव पअी वेर्णेकर"

राष्ट्रभाषा रत्न-परीक्षा-फल

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा संचालित 'राष्ट्रभाषा रत्न' के अप्रैल १९५१ कि परीक्षामें अुत्तीर्ण परीक्षार्थी :—

द्वितीय श्रेणी

क्रम-संख्या	नाम
१०३.	रा० श्री० नन्हूँ
११६.	ब० कुमारजी
१२२.	श्रीमती वि० पटवर्धन
१६०.	पं० स० गो० 'मित्र'
२०१.	ह० गो० पाडेय
१०६.	र० वि० समर्थ
१२०.	पां० ज्ञा० आरालै
१८८.	शा० रा० श्रीवास
१६४.	सौ० म० देवी पाण्डे

तृतीय श्रेणी

१.	खु० जा० सिंह
८०.	आ० न० पाटील
८६.	रा० प० पटवर्धन
६६.	दु० द० दातार
१२५.	कु० मं० रा० लिमये
२०३.	को० अप्पलनायडू
७६.	दा० सा० कंसारीवाला

तृतीय श्रेणी

क्रम-संख्या	नाम
८२.	सी० म० पटेल
६१.	ह० भी० भापकर
१२३.	श्रीमती शां० धड़पड़े
१७८.	दे० क० बस्तवाड़
२०४.	कु० अि० ज० सावलकर

मौखिक सुविधा

७७.	व्रि० भ० राणा
६०.	सू० पु० क्षीरसागर
९७.	कु० सो० अिं० देसाअी
८१.	बा० प्रे० पटेल
६५.	प्र० भ० भावसार

निम्न-लिखित क्रम-संख्याओंका परीक्षा-फल स्थगित है :—

१० से ७६ तक,
११० से ११५ तक,
१३० से १७६ तक,
और
१८३ तथा १८४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी तथा अप्रैल '५१ की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंके अखिल भारतमें
सर्वप्रमथ तथा प्रान्तमें प्रथम और द्वितीय

पुरस्कार-विजेता परीक्षार्थी

विशेषः - अखिल भारतमें सर्वप्रथम आनेवाले पुरस्कार विजेता परिक्षार्थियोंको प्रांतमें प्रथम आनेका पुरस्कार भी दिया गया है।

× निशानवाले प्रान्तमें प्रथम हैं किन्तु प्रथम श्रेणीमें न आनेके कारण पुरस्कार पानेके अधिकारी नहीं हैं।

० निशानवाले प्रान्तमें द्वितीय हैं किन्तु प्रथम श्रेणीमें न आनेके कारण पुरस्कार पानेके अधिकारी नहीं हैं।

राष्ट्रभाषा कोविद

अखिलभारतमें सर्व प्रथम

३७८१ श्री राजरानी दीवानचन्द्र भाटिया, थाना,- प्राप्तांक २४६—१५) सर्वप्रथम पुरस्कार
(मीनाकारी चाँदीका पदक तथा ५) की पुस्तकें)

आसाम प्रान्तमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
१८१३	श्री ओअिनाम सरोजलता देवी, अिम्फाल	१५८	×
	द्वितीय		
१८१५	श्री ओअिनाम जुणेन्द्र सिंह, अिम्फाल	१४७	०

बंगाल प्रान्तमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
१८४२	श्री शान्ति वसु, द. कलकत्ता	२०७	×
	द्वितीय		
१८६८	श्री रवीन्द्रनाथचक्रवर्ती, अु. कलकत्ता	२०१	०

अुत्कल प्रान्तमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
२२	श्री लिंगराजदास, ब्रह्मपुर	२१६	×
	द्वितीय		
८	श्री जयकुमारी मूलजी भाअी, चावड़ा, कटक	२१४	०

राजस्थान (सिन्ध समितिसे)

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
७३	श्री नानक श्यामदास नाँगाणी, जोधपुर	२०१	×
	द्वितीय		
५८	श्री कु. कलामथनुँमल नानवाणी, जयपुर	१६८	०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात प्रान्तमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
३२१०	श्री नवीनचन्द्र हिम्मतलाल मोदी विरमगाम	२४२	१०)

द्वितीय

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
३२६३	श्री कु. बकुला ब्रजरत्नलाल अक्कड़ सूरत	२४१	८)

महाराष्ट्र प्रान्तमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
३७८१	श्री राजरानी दीवानचन्द्र भाटिया थाना	२४६	१०)

द्वितीय

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
४१७७	श्री किशोरी दलपत माखलकर पूना	२४७	८)

बम्बअी प्रान्तमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
१०६६	श्री अे.वी. गोपाल कृष्णन् किंग्जसर्कल	२४६	१०)

द्वितीय

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
११७८	श्री कोकिला मोहनलाल नानावटी गिरगाँव	२४२	८)

विदर्भ नागपुर प्रांतमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
१५२	श्री पद्माकर गणेश आठवले आर्वी	२४३	१०)

द्वितीय

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
२५४	श्री रामचन्द्र प्रह्लाद अयाचित धन्तोली, नागपुर	२२७	०

हैद्राबाद द०

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
३८८	श्री शंकरलाल बिज्जूलाल अग्रवाल जालना	१८५	×

द्वितीय

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
३५३	श्री कुशध्वज रामचन्द्र कुलकर्णी अम्बा जोगाअी	१८४	०
३५८	श्री ज्ञानेश्वर माधवराव खोडसकर अम्बा जोगाअी	१८४	०

राष्ट्रभाषा परिचय

अखिलभारतमें सर्व प्रथम

८४५३ श्री रमेशचंद्र पुरुषोत्तम जोशी, दोहद,- प्राप्तांक २२५—१०) सर्वप्रथम पुरस्कार

आसाम प्रांतमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
५६८५	श्री विश्वनाथ प्रसाद बियाहुत गौहाटी	२१०	८)

द्वितीय

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
५७२८	श्री सावित्री चौधुरी शिलांग	१६६	६)
५८६७	श्री बालबीना फ्रांसिस सिन्हा कर्सियांग	१६८	६)

बंगाल प्रांतमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
५६२६	श्री विजय कृष्ण सरकार बडाबाजार	२११	८)

उत्कल प्रांतमें

प्रथम

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
१४२	श्री विपिन विहारीदास देव शर्मा बलांगीर	१६३	८)

द्वितीय

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
२७	श्री प्रभात कुमारकर कटक	१७६	०
१४३	श्री बन्चु नारायणमूर्ति बलांगीर	१७६	०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान (सिन्ध समितिसे)

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
	प्रथम		
२०६	श्री गिरधारी सेवाराम शारधा अजमेर	१७७	×
	द्वितीय		
१६६	श्री खीयलदास अुद्धवदास शिवनानी अजमेर	१५६	०
३४५	श्री चन्द्रा भेरुमल सामताणी जयपुर	१५६	०

गुजरात प्रांतमें

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
	प्रथम		
८४५३	श्री रमेशचन्द्र पुरुषोत्तम जोशी दोहद	२२५	८)
	द्वितीय		
८६१६	श्री दशरथलाल लहेरचन्द जोशी नयाडीसा	२१७	३)
११६१८	श्री मोहनलाल हरीलाल पटेल रणुंज	२१७	३)

महाराष्ट्र प्रांतमें

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
	प्रथम		
१६०६५	श्री लीला अनन्त कापशीकर पूना	२००	४)
१६१०७	श्री पद्मा भीमराव गलगली पूना	२००	४)
	द्वितीय		
१६०७४	श्री सौ.शान्ता श्रीनिवास येखडेकर पूना	१६६	६)

बम्बअी प्रांतमें

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
	प्रथम		
३६२६	श्री सन्दुला रवींद्र मेहता खार	२१२	८)
	द्वितीय		
३२६०	श्री सूरजराम गणपतराम व्यास अंधेरी	२०७	६)

विदर्भ नागपुर प्रांतमें

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
	प्रथम		
१०३१	श्री कु. नलिनी चिन्तामणराव पांगारकर बुलढाणा	२०१	८)
	द्वितीय		
६५२	श्री विद्याधर गंगाप्रसाद पाठक काटोल	१६०	६)

हैद्राबाद द०

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
	प्रथम		
१८२४	श्री लीला दत्तात्रय बुर्डे हैद्राबाद	२१८	८)
	द्वितीय		
१८७६	श्री ब. रामकृष्ण रेड्डि हैद्राबाद	२१५	६)

राष्ट्रभाषा प्रवेश

अखिल भारतमें सर्वप्रथम

६३०० श्री प्रतिभा सदाशिव वैशम्पायन, विलेपार्ले,- प्राप्तांक १६७—८) सर्वप्रथम पुरस्कार

आसाम प्रांतमें

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
	प्रथम		
६८२६	श्री कालीचरण, अिम्फाल	१५३	६)
	द्वितीय		
६७७८	श्री अीबोतोनसिंह, अिम्फाल	१४३	४)

बंगाल प्रांतमें

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार
	प्रथम		
६६६०	श्री यशोदाकुमारी अग्रवाल कर्सियांग	१४०	६)
	द्वितीय		
१०१८६	श्री हृषीकेष मण्डल, कांथी	१३७	४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क. सं	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार

अुत्कल प्रांतमें

प्रथम

४००	श्री मनोजमोहन महान्ति पद्मपुर	१३३	३)
७८२	श्री अुदयनाथ भूँया हिंजलीकाट्टु	१३३	३)

द्वितीय

७७	श्री प्रियंवदाराव, कटक	१२५	४)

राजस्थान (सिन्ध समितिसे)

प्रथम

६६६	श्री कौशल्या राधाकिशन भाटिया, अुदयपुर	१३७	३)
१०७६	श्री पद्मा भैरूमल, जयपुर	१३७	३)

द्वितीय

११३७	श्री सोहनलाल हशिमतराय धन्धाणी जयपुर	१३५	४)

गुजरात

प्रथम

२१६११	श्री मुगटलाल रतीलाल शाह वढवान	१५६	६)

द्वितीय

१५६४४	श्री नाजुमीनो चहेर होमजी नवसारी	१५८	४)

महाराष्ट्र प्रांतसे

प्रथम

२६६६७	श्री पांडुरंग भास्कर जोशी सातारा	१६१	६)

द्वितीय

२६६४८	श्री मधुकर विष्णु कोल्हटकर सातारा	१६०	४)

बम्बअी

प्रथम

६३००	श्री प्रतिभा सदाशिव वैशम्पायन, विलेपार्ले	१६७	६)

दितीय

६१८०	श्री अनुसूया सतीशचन्द्र दीवेचा, खार	१५७	४)

विदर्भ-नागपुर

प्रथम

२६८०	श्री लाला गोअिंजी कलंबे लाखनी	१५८	६)

द्वितीय

२६८१	श्री सदाशिव तुलसीदास दहेकार, लाखनी	१५०	४)

राष्ट्रभाषा प्रारम्भिक

अखिल भारतमें सर्वप्रथम

१०३४२ श्री चम्पा अजारिया, बड़ा बाजार,– प्राप्तांक ९१—५) सर्वप्रथम पुरस्कार.

आसाम प्रान्तमें

प्रथम

६४६६	श्री कांगजम अिबोबिसिंह, अिम्फाल	७५	४)

द्वितीय

६०६८	श्री लक्ष्मीप्रसाद, गौहाटी	७२	॥)
६५१४	श्री मु० अिबोतोम्बीसिंह, अिम्फाल	७२	॥)
६५१७	श्री यो० अनाबीसिंह, अिम्फाल	७२	॥)
६५३६	श्री स० खुमखोलेन कोम, अिम्फाल	७२	॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र. सं.	नाम	प्राप्तांक	पुरस्कार

बंगाल प्रान्तमें

प्रथम

१०३४२.	श्री चम्पा अजारिया बड़ा बाजार	६१	४)

द्वितीय

१०३८०	श्री वासंती चौधुरी काटवा	८४	२)

उत्कल प्रान्तमें

प्रथम

१६३६	श्री रघुनाथदास, राजसुनाखला,	७८	४)

द्वितीय

१६८४	श्री कु. विद्युत्प्रभा महान्ति सँअरा	७६	२)

राजस्थान (सिन्ध समितिसे)

प्रथम

२२७८	श्री भावनदास नाजिकदास मंघनाणी, अजमेर	७५	४)

द्वितीय

२४५७	श्री चन्द्रकुमार वाशोमल साधवाणी, जयपुर	७१	२)

गुजरात प्रान्तमें

प्रथम

११६३६	श्री जगदीशचन्द्र चन्दुलाल पटेल, आणंद [शा]	८६	४)

द्वितीय

१२३३३	श्री प्रेमजी विशनजी देठीया कपाया	८६	२)

महाराष्ट्र प्रान्तमें

प्रथम

२७७६३	श्री परशराम शंकर भांबारे येवला	८८	४)

द्वितीय

२७७५५	श्री सौ. मंगला भालचन्द्र सोवनी, येरवडा	८७	२)

बम्बई

प्रथम

८६७५	श्री कमला चुनीलाल वर्मा माटुंगा	७६	४)

द्वितीय

८२५३	श्री शोभना वसन्त गोखले दादर	७८	१)
८२७८	श्री सीता दिगंबर चन्द्रात्रे दादर	७८	१)

विदर्भ-नागपुर

प्रथम

२८६१	श्री मालती धोंडोपन्त पेंडसे अमरावती	८१	४)

द्वितीय

४६०५	श्री शेषराव विठ्ठल बांते, वर्धा	७६	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित प्रचारक

प्रान्त	प्रचारकका नाम	क्रमसंख्या	स्थान
अुत्कल	श्री गौरांग चरणदास	२५६९	कटक
गुजरात	„ नरसिंह लक्ष्मण सप्रे	२५७१	डभोअी
महाराष्ट्र	„ चन्दनलाल बड़ोला शास्त्री	२५७२	पूना
„	„ गोपाल गोविंद पाटील	२५७३	अिचलकरंजी
„	„ दत्तात्रय शिवराम सप्रे	२५७४	कोल्हापुर
„	„ प्रभाकर भीमराव हरोलीकर	२५७५	„
„	„ कमलाकर गोविन्द घोडके	२५७६	करमाला
„	„ सौ० अम्बाताअी वसन्तराव देसाअी	२५७७	कुर्डूवाडी
„	„ सौ० कमलाबाअी विनायकराव भावे	२५७८	„
कर्नाटक	„ तुलसीगिरी भीमाजी हुजरत्ती	२५७९	विजापुर
आन्ध्र	„ के० अे० रामाराव	२५८०	कासिमकोटा
„	„ केत्तिरेड्डि जनार्दनरेड्डि देशमुख	२५८१	नेलामर्री
बम्बअी	„ सुलोचना ओच्छवलाल खांडवाला	२५८२	बम्बअी
„	„ भैयालाल वर्मा	२५८३	„
„	„ सौ० शालिनी गोविन्द जोगलेकर	२५८४	„
„	„ सनत्कुमार चीमनलाल विण	२५८५	„
„	„ बलराम गोपालजी प्रभाकर	२५८६	„
विदर्भ-नागपुर	„ जॉनसिडनी मनहरसिंह	२५८७	नागपुर

नये केन्द्र

क्रमांक	केन्द्र	जिला	प्रांत
५२६	पानेली मोटी	म० सौराष्ट्र	सौराष्ट्र
५२८	कुंढेला	बडौदा	गुजरात
५२९	वाव	बनासकांठा	गुजरात
५६३	देवगड बारिया	पंचमहल	गुजरात
८३८	कालसर	खेडा	गुजरात
५७५	ढाणकी	यवतमाल	वि० नागपुर
६३०	अडयाल	भंडारा	वि० नागपुर
६३१	मोहाली	भंडारा	वि० नागपुर
५४७	नोखा	बीकानेर	राजस्थान
६३३	बालोतरा	बाडमेर	राजस्थान
६३४	आमेट	अुदयपुर	राजस्थान
६३६	चौथका बरवाडा	सवाअी माधोपुर	राजस्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ना. ८३८ फोन नं. ४५ तारका पता : 'राष्ट्रभाषा' वर्धा

बंगाल

परीक्षार्थियों का अुन्नतिक्रम

सन्		माह		परीक्षार्थियोंकी संख्या
१९३७	...	सितम्बर	...	
		नवम्बर		
१९३८	...	फरवरी	...	२
		सितम्बर		२
१९३९	...	फरवरी	...	०
		सितम्बर		१०
१९४०	...	जनवरी	...	०
		अगस्त		१३
१९४१	...	फरवरी	...	१४
		अगस्त		२७
१९४२	...	फरवरी	...	६५
		अगस्त	आन्दोलन	स्थगित
१९४३	...	फरवरी	...	७७
		अगस्त		४८
१९४४	...	फरवरी	...	४२
		अगस्त		४९
१९४५	...	फरवरी	...	११५
		सितम्बर		२४२
१९४६	...	फरवरी	...	१४९
		सितम्बर		
१९४७	...	फरवरी	...	१६२
		सितम्बर		६७१
१९४८	...	फरवरी	...	८३५
		सितम्बर		८५०
१९४९	...	अप्रैल	...	४८६
		सितम्बर		१०६३
१९५०	...	अप्रैल	...	५८४
		सितम्बर		१०४५

मुद्रक— [illegible], राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

प्रकृति पुरुष

अवनि बोली—— 'मैं तुम्हारी चेतना हूँ ठोस'
आग बोली—— 'मैं तुम्हारी जिन्दगीका जोश'
गगन कहता—— 'मैं करूँगा कल्पना साकार'
पवन कहता—— 'मैं तुम्हारी प्रगतिका आकार'
नीर बोला—— 'मैं सजलता तरलता गतिवान'
पुरुष बोला—— 'तुम सबोंका किन्तु मैं भगवान'

—ब्रजकिशोर 'नारायण'

अगस्त, १९५१

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रा ष्ट्र भा षा

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मुखपत्र
संपादक
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

विषय-सूची

१.	'प्रचार सम्मेलन'का प्रस्तावित विधान ...	२६५
२.	हिन्दी भाषा और काव्य	२६७
३.	भाषाके स्वराज्यकी आवश्यकता	२६८
४.	चरित्र-चित्रण कैसे किया जाय ? ...	२६९
५.	काल-भेद	२७०
६.	महाकाव्यके लक्षण	२७१
७.	सुलेखन	२७२
८.	अनुत्तीर्ण क्यों ?	२७३
९.	लिंग परिवर्तन	२७३
१०.	हमारी दृष्टिमें	२७४
११.	प्रान्तीय हलचल	२७५
१२.	परीक्षा विभाग	२७८

"राष्ट्रवीणा"

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, खजूरीकी पोल, कालूपुर, अहमदाबादकी ओरसे अर्ध-वार्षिक पत्रिका "राष्ट्रवीणा" ता. १५ अगस्तको प्रकाशित होने जा रही है। पत्रिकामें गुजराती तथा हिन्दीके उच्च कोटिके साहित्यिकोंकी रचनाएँ, अध्यापकोंके परीक्षोपयोगी विशेष लेख तथा हिन्दी जगतके महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित होंगे। "राष्ट्रवीणा" का दूसरा अंक ता. २६ जनवरीको प्रकाशित होगा।

पत्रिकाका वार्षिक चन्दा २ रु. रहेगा। प्रचारक व केन्द्र-व्यवस्थापकोंको आधे चन्देमें पत्रिका भेजी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

वर्ष १०] वर्धा, अगस्त— १९५१ [अंक १०

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलनका प्रस्तावित विधान

अिस वर्ष 'रा. भा. प्रचार सम्मेलन' का तृतीय अधिवेशन गत १९, २० मअीको पूनामें सम्पन्न हुआ। अुक्त अवसरपर "सम्मेलन" के विधानमें समुचित परिवर्तन तथा परिवर्द्धन करनेके लिअे सात सज्जनोंकी अुपसमिति बनाअी गअी थी। अुक्त समिति द्वारा तैयार किया गया यह विधान रा. भा. प्र. समिति तथा प्रचारकों और केन्द्र-व्यवस्थापकोंके विचारार्थ यहाँ दिया जा रहा है। अिस विधानमें अुपयोगी सुझावोंका स्वागत किया जायगा।

विधान

(१) नामः—अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन

(२) अुद्देश्यः—राष्ट्रभाषाके प्रचार कार्यको अधिक सुसंगठित तथा गतिशील बनाना।

(३) अधिवेशन रा. भा. प्र. समिति वर्धाके तत्वावधानमें जहाँ जहाँ कार्य चलता है वहाँ तथा वर्धा समिति से सम्बद्ध प्रान्तीय समितियोंके कार्यक्षेत्रोंमें वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न होगा।

(४) प्रतिनिधिः—(क) वर्धा समितिके सदस्य

(ख) परीक्षा समितिके सदस्य

(ग) प्रान्तीय समितियोंकी व्यवस्थापिका समितियोंके सदस्य

(घ) प्रमाणित प्रचारक

(ङ) केन्द्र व्यवस्थापक

(च) अधिकृत अुपाधिधारी

(छ) स्वागत समितिके द्वारा मनोनीत २५ प्रतिनिधि

(ज) प्रचार सम्मेलनके मनोनीत अध्यक्ष ११ तक प्रतिनिधि नियुक्त करेंगे

(झ) प्रचार सम्मेलनके भूतपूर्व अध्यक्ष

(५) प्रतिनिधि शुल्कः— प्रतिनिधि शुल्क अेक रुपया रहेगा। यह शुल्क स्वागत समितिके पास रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) **स्वागत समितिः**— नीचे लिखे अनुसार सदस्य रहेंगे।

(क) सम्मेलन बुलानेवाले प्रान्तकी प्रान्तीय समितिके सदस्य

(ख) निश्चित शुल्क देकर विभिन्न श्रेणीके बने हुअे सदस्य

(ग) प्रान्तीय समितिकी कार्यकारिणी समिति स्वागत समितिकी कार्यकारिणी होगी। यह कार्यकारिणीकी समिति आवश्यकतानुसार अपनी संख्या ५१ तक बढ़ा सकेगी।

(घ) यह स्वागत समिति सम्मेलनके लिअे २५ प्रतिनिधि मनोनीत करेगी।

(७) प्रान्तीय समितिके संचालक स्वागत मन्त्री रहेंगे। तथा प्रान्तीय समितिकी कार्यकारिणीके अध्यक्ष स्वागताध्यक्ष रहेंगे।

(८) **सम्मेलनका समयः**—

प्रदेशकी प्राकृतिक तथा स्थानिक सुविधाओंके अनुसार वर्षमें अेक बार साधारणतः अक्तूबरसे फरवरीके बीच सम्मेलनका अधिवेशन होगा।

(९) **विषय निर्वाचिनी समितिः**—

(क) प्रचार सम्मेलनके भूतपूर्व और नियोजित अध्यक्ष

(ख) राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके सदस्य

(ग) परीक्षा समितिके सदस्य

(घ) प्रान्तीय समितियोंकी कार्यकारिणियोंके सदस्य

(ङ) स्वागत समितिकी ओरसे मनोनीत २५ सदस्योंमेंसे ५ सदस्य

(च) हर अेक प्रान्तके अुपस्थित प्रतिनिधियोंमें से कम-से-कम ५ सदस्य, अिसके अतिरिक्त हर ५००० परीक्षार्थियोंके लिये अेक के अनुपातमें सदस्य रहेंगे। किसी भी प्रान्तसे २० से अधिक सदस्य न रहेंगे।

(१०) अधिवेशन शुरू होनेके पहले विषय निर्वाचिनी समितिका निर्वाचन होगा। हर प्रान्तके संचालक या अुनके प्रतिनिधि अुपस्थित प्रतिनिधियोंमेंसे निर्वाचित करायेंगे।

(११) **अध्यक्ष चुनावः**— वर्धा समिति द्वारा प्रस्तावित तीन व्यक्तियोंके नामोंसे स्वागत समितिकी कार्य समिति अध्यक्षका चुनाव करेगी।

(१२) सम्मेलनके निर्णयोंको रा. भा. प्रचार समिति कार्यान्वित करेगी।

(१३) **सम्मेलन खर्चः**— सम्मेलनके खर्चका अुत्तर दायित्व स्वागत समितिपर रहेगा। जो खर्च होगा अुसका १/३ अंश वर्धा रा. भा. प्र. समिति सहायताके रूपमें देगी। और यह रकम ५००० से अधिक न होगी।

(१४) **कार्यक्रमः**— स्वागत समिति वर्धा समितिके प्रधान मन्त्रीसे परामर्श करके सम्मेलन तिथिके १५ दिन पहले कार्यक्रम निश्चित करेगी।

कार्यक्रम—(१) वार्षिक विवरण

(२) पुरस्कार

(३) प्रचारक तथा केन्द्र व्यवस्थापकों की अुलझनोंके सम्बन्धमें विचार परामर्श।

(१५) सामान्य प्रस्ताव १५ दिन पहले वर्धा कार्यालयमें पहुँचने चाहिये। अध्यक्षकी अनुमतिसे सम्मेलनके समय भी प्रस्ताव अुपस्थित किये जा सकते हैं।

(१६) **विधान परिवर्तनः**—विधानमें परिवर्तन अुपस्थित सदस्योंके २/३ सदस्योंकी अनुमतिसे किया जा सकेगा। परिवर्तन सम्बंन्धी प्रस्ताव सम्मेलन तिथिके अेक महीने पहले वर्धा कार्यालयमें पहुँचना चाहिये।

—**आनन्द कौसल्यायन.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषा और काव्य

श्री रंगनाथ दिवाकर

हिन्दीका प्रचार केवल अेक भाषाका प्रचार नहीं है। वह अेक अैसा सूत्र है जिसके द्वारा कश्मीरसे कन्याकुमारीतक बिखरे पड़े ३६ करोड़ व्यक्तियोंको अेकत्रित किया जा सकता है और अेक ही प्रेम बंधनमें बाँधा भी जा सकता है। हमारे अिस भारतमें अन्य १०-१२ भाषायें जो प्रौढ़ और पुष्ट हैं, मौजूद हैं पर अुनमेंसे वह कार्य कोअी नहीं कर सकती जो हिन्दी कर सकती है। पर वे भाषायें भी हमारी अपनी ही हैं। वैसे कन्नड़ मेरी मातृभाषा है। पर मैं समझता हूँ कि भारतकी सभी भाषाअें मेरी मातृभाषायें ही हैं।

हम सब वंदेमातरम् गीत गाते हैं और अुसे राष्ट्रगीत कहते हैं। और अिसका अर्थ यह समझते हैं कि हम सबकी माता अेक है। यदि हम सबकी माता अेक है तो मातृभाषायें अधिक कैसे हो सकती हैं? मेरी माता बहुभाषिणी है। यह ठीक है कि अुसकी सभी भाषायें मेरी समझमें नहीं आतीं। पर अिसका अर्थ यह नहीं कि यदि मेरे हिन्दुस्तानी भाअी या बहन यहाँ प्रचलित किसी अैसी भाषामें बोलें जिसे मैं न समझ सकूँ तो मैं अुसे परकीय भाषा समझूँ। जिस आत्मीयतासे मैं अपनी मातृभाषाकी ओर देखता हूँ अुसी भावनासे अुस भाषाकी ओर भी देखना मेरा धर्म है।

अब कवि सम्मेलनकी बात लीजिये। प्राचीन कालमें ज्ञानीको भी कवि यह संज्ञा थी। कवि केवल ज्ञानी ही नहीं अपितु वह स्फूर्ति, स्पष्टता तथा सुन्दरताके साथ बातें कहनेवाला होना चाहिये। हम सभीके दिल और दिमागमें विचार और भावनायें होती हैं। पर अुन्हें हम सुन्दर शब्दोंमें व्यक्त नहीं कर सकते। विचारों और भावनाओंको व्यक्त करनेमें हमारी स्थिति कुछ गूँगेसी है। पर कवि केवल हमारी भावनायें ही व्यक्त करनेका काम नहीं करता अपितु अपनी अन्तः प्रेरणाको हमारे दिलोंमें भरता है। यह कार्य कवि वैदिक कालसे करते आये हैं और आज भी कर रहे हैं। यह शक्ति जिन कवियोंमें नहीं वे कवि नहीं हैं।

अिस प्रकारकी कविताका स्रोत हमारे देशमें निरन्तर बहता आया है। वह न कभी सूखा और न कभी रूखा रहा। वह सनातन है। आज भी हमारे देशमें रवीन्द्रनाथ जैसे कवि सम्राट पैदा होते हैं और संसारको नये विचारोंकी देन देते हैं। अिस सम्बन्धमें हमारा भी अेक पवित्र कर्तव्य है। हम अपने कवियोंको समझें, अुनके विचारोंको मानें, और अुन्हें प्रकट होनेका अच्छा अवसर दें। जो देश अपने कवियोंको नहीं मानता वह वीरोंको कैसे जन्म दे सकता है। काव्यसे भाषामें शक्ति आती है। सत्कर्म अपनी शक्तिसे तो प्रसिद्ध होता ही है काव्यसे अधिक प्रकाशित होता है। कोमल और किशोर मन दिव्य काव्यसे प्रेरित होता है। और अिसलिये कोअी भी जीता जागता समाज अपने कवियोंको, सत्कवियोंको आदर और प्रेम भावसे प्रोत्साहित करता है और अुनसे प्रेरणा पाता है। हमें आज अपने समाजमें भी यही कार्य करना है।

(हिन्दी सभा, लोदी कालनी, नअी दिल्लीमें दिये प्रवचनका सारांश।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाके स्वराज्यकी आवश्यकता

श्री डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

हिन्दी भाषा अिस समय जनता, नेता और संविधान निर्माताओंकी कृपासे राष्ट्रभाषा मान ली गयी है। यह घटना कुछ आकस्मिक नहीं है। अिसके पीछे दो हजार वर्षोंके भाषा विकासकी परम्परा है जिसका अुत्तराधिकार हिन्दीको प्राप्त हुआ है। अथर्व-वेदके समयमें ही यह स्वीकार कर लिया गया था कि अिस देशमें अनेक भाषाअें बोलनेवाले मनुष्य रहते हैं। फिर भी सदासे राष्ट्रका कार्य चलानेके लिअे अेक प्रधान भाषा व्यवहारमें आती रही। संस्कृत, प्राकृतिक, अपभ्रंश आदि भाषायें अपने समयमें साहित्यिक भाषाके रूपमें सारे देशकी भाषा मान ली गयी थी और व्यवहारमें लोग अुन्हींसे काम चलाते थे। अेक हजार वर्ष पहले अुत्तरी भारतमें वही स्थान हिन्दीको प्राप्त हुआ और लोकमें हिन्दी व्यवहारकी और साहित्यकी भाषा बन गयी। आज अिसी बातपर मोहर लगाते हुअे हिन्दीको राष्ट्रभाषा माना गया है।

लेकिन अिसके विषयमें हिन्दी भाषा-भाषियोंका दृष्टिकोण अन्य प्रान्तीयों, भाषाओंके साथ पारस्परिक मेल और प्रेमका होना चाहिये, क्योंकि राष्ट्रभाषाके रूपमें हिन्दीका विकास बिना सबके सहयोगके असम्भव है। हिन्दीके लिये भविष्यमें कअी प्रकारसे अुन्नतिका द्वार खुला है। अुदाहरणके लिअे अन्य प्रान्तीय भाषाओंके साहित्यको हिन्दी रूपान्तर देना चाहिये तभी अुन भाषाओंके साथ हमारा साक्षात् सम्बन्ध बन सकेगा। दूसरे जो हमारा भूत-कालका साहित्य है जैसे संस्कृत, पाली, प्राकृतिक आदि भाषाओंका साहित्य अुसके हजारों ग्रंथोंका अनुवाद हिन्दीमें होना चाहिये। यह स्वतन्त्र भारतका राष्ट्रीय साहित्य था और आगे भी राष्ट्रभाषामें अुसे प्रस्तुत करना आवश्यक है। हिन्दी-भाषाको लोक साहित्यके प्रति भी ध्यान देना चाहिये। विशाल भारत राष्ट्रमें लोकसाहित्यकी अपरिमित सामग्री है। अुसका हिन्दी भाषाके द्वारा संग्रह और प्रकाशन करना आवश्यक है। न केवल हिन्दीमें अन्य प्रान्तीय भाषाओंमें भी, अिस प्रकारकी लोक साहित्यकी सामग्रीके संकलनका कार्य शीघ्रसे शीघ्र होना चाहिये, हिन्दीका वैज्ञानिक साहित्य भी तैयार करना आवश्यक है। अुसके लिअे शब्दावली संस्कृत भाषासे ही ली जा सकती है। बीचका कोअी विकल्प नहीं है। यूरोपने अपनी शब्दावली ग्रीक और लैटिन भाषाओंसे प्राप्त की। भारतीय भाषाओंको अुसे संस्कृतसे प्राप्त करना होगा। अिस समय भी संस्कृतसे ही निकली हुअी शब्दावली अपभ्रंश रूपमें लोकमें फैली हुअी है जिसका संग्रह करना चाहिये। भविष्यमें राष्ट्रभाषाके नेताओंको हिन्दीके द्वारा न केवल शासनके सारे कार्य करने होंगे; बल्कि हमारे हवाअी-जहाज, पानीके जहाज, अिंजन, रेलवे आदिके नाम भी हिन्दीमें रखने होंगे। ये नाम स्वतन्त्र देशकी छाप लेकर संसार भरमें फैल जायेंगे। बिना भाषाका स्वराज्य स्थापित हुअे जनताका मस्तिष्क कभी स्वतंत्र नहीं बन सकता और शासन और जनताकी बीचकी खायी दूर नहीं हो सकती। यह अेक जीवनका नियम है। हम अिसके पालनमें जितनी देर करेंगे अुतनी ही राष्ट्रकी हानि होगी। १५ वर्षोंका समय हमने जान बूझकर तय किया है और अुसकी अवधिके भीतर बुद्धिमानी और मेलके साथ अिस कामको पूरा करना चाहिये। जितनी भी प्रान्तीय भाषायें हैं अुन सबकी पीठ अंग्रेजीके बोझसे झुकी हुअी है। जिस दिन हम अंग्रेजीको अुतार फेंकेंगे अुनका तेज अुन्हें मिल जायेगा और यह बात हिन्दीके साथ भी होगी। अिसलिये भाषाके स्वराज्यमें प्रत्येक भारतवासीका लाभ है और प्रत्येक प्रान्तीय भाषाकी भी वृद्धि होगी। अिसी दृष्टिकोणसे अिस प्रश्नको हल करना अुचित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित्र-चित्रण कैसे किया जाय ?

श्री रामेश्वरदयाल दुबे

अक्सर प्रश्नपत्रोंमें अिस प्रकारका प्रश्न आया करता है—"अमुक व्यक्तिका चरित्र-चित्रण कीजिये।" परीक्षार्थी या तो चरित्र-चित्रणका अर्थ नहीं समझते या चरित्र-चित्रण करनेका ढंग नहीं जानते; अिसलिये प्रायः ग़लत अुत्तर देते हैं। फल यह होता है कि अुनका समय भी व्यर्थ जाता है और अुन्हें अंक भी नहीं मिलते।

चरित्र-चित्रणका अर्थ है, किसी व्यक्तिकी स्वाभाविक मुख्य-मुख्य विशेषताओंका ज़िक्र करते हुअे अुसके जीवनमें अुनका क्या प्रभाव पड़ा, अिसका विवेचन करना और अुसकी मानसिक स्थितिको समझते हुअे असके आचार-विचारोंके परिवर्तनका कारण भी समझाना आदि। दूसरे शब्दोंमें चरित्र-चित्रणका अर्थ हुआ —व्यक्तिके जीवनकी अेक प्रकारसे समालोचना करना।

किसी व्यक्तिके जीवनकी सारी घटनाओंका जिक्र करना, अुसके सम्बन्धकी पूरी जानकारी देना, अुसका चरित्र-चित्रण नहीं है। अिसे अुसका जीवन-चरित्र कह सकते हैं।

चरित्र-चित्रणके अर्थको और अधिक समझानेके लिये यहाँ कुछ अुदाहरण देना अुचित होगा। जहाँ "शाहजहाँ" नाटकके आधारपर हमें शाहजहाँका चरित्र-चित्रण करना है वहाँ विषयसे बाहर जाकर अैतिहासिक शाहजहाँका चरित्र-चित्रण हम न करें। हमें शाहजहाँ नाटकके ही शाहजहाँ (पात्र) का चरित्र-चित्रण करना चाहिये। शाहजहाँ नाटकके पढ़नेपर हमें ज्ञात होता है कि नाटककारने शाहजहाँको वृद्ध, सन्तानपर अपार स्नेह करनेवाला, शांतिका प्रेमी और क्षमाशीलके रूपमें चित्रित किया है। ये ही अुसके स्वभावकी मुख्य विशेषतायें हैं, और अिन्हींको लेकर शाहजहाँके चरित्रका विकास होता गया है।

अिसलिये शाहजहाँका चरित्र-चित्रण करते समय अुसकी अिन मुख्य विशेषताओंको अुदाहरणके साथ अलग अलग अनुच्छेदोंमें (पॅराग्राफोंमें) लिखना चाहिये। अुदाहरण देते समय हमें केवल अुतना ही अंश देना चाहिये जिससे हमारी बातका समर्थन हो जाय। अगर हमें शाहजहाँको 'सन्तानपर अपार स्नेह करनेवाला' दिखानेके लिये अुदाहरण देनेकी आवश्यकता हो तो केवल अितना लिख देना काफ़ी होगा—

"ये मेरे बेटी-बेटे हैं, बे-माँके हैं। अुन्हें किस जीसे सजा दूँ, जहानआरा! वह देख! संगमरमरके बने हुअे अुस ताजमहलकी तरफ़ देख और फिर अुन्हें सजा देनेके लिये कह।"

ये वाक्य शाहजहाँके सन्तान-स्नेहकी झाँकी दिखानेके लिये काफ़ी हैं। चरित्र-चित्रण करते समय पात्रके किसी मुख्य गुण या दोषको छोड़ना नहीं चाहिये। यदि वह क्रोधी है अथवा अुतावला है, दूरंदेश है अथवा डरपोक, निस्संकोच हमें अुसपर प्रकाश डालना चाहिये। जहाँ आवश्यकता हो, चरित्र चित्रण करते समय घटनाओंका जिक्र भी अत्यंत संक्षेप रूपमें किया जा सकता है; पर यह ध्यान रहे कि पूरी कहानी न लिख दी जाय।

कभी कभी, किसी पात्रका चरित्र-चित्रण करते समय हमें बाहरकी घटनाओंपर अुतना ध्यान नहीं देना पड़ता जितना कि अुसके हृदयके आंतरिक भावोंके द्वंद्वपर। अैसे पात्रोंका चरित्र-चित्रण करते समय हमें अुसके विचारोंका अध्ययन मनोविज्ञानकी दृष्टिसे करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। अिसलिये यह आवश्यक है कि चरित्र-चित्रण करनेवाले विचित्र व्यक्तियोंके स्वभावसे—अुनके स्वाभाविक गुणों और दोषोंसे परिचित हों। अुदाहरणके लिये श्री कौशिकजीकी 'ताअी' कहानीकी ताअीका चरित्र-चित्रण करनेके लिये हमें स्त्री-स्वभावसे परिचित अवश्य होना चाहिये। स्त्रीके हृदयमें पुत्रमुख-दर्शनकी कैसी बलवती अिच्छा होती है; साथ ही अुसके 'अपने' की सीमा कितनी संकुचित होती है, आदि आदि बातोंका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। आगे चलकर ताअीके विचारोंमें परिवर्तन कैसे हुआ, अुसकी घृणा प्रेममें कैसे बदल गयी, बच्चेको ढकेल देनेवाली स्त्री किस तरह अुसी बच्चेको छातीसे लगा लेनेके लिये तैयार हो गयी, यह सब समझनेके लिये मनोविज्ञानके सूक्ष्म अध्ययनकी आवश्यकता है।

ताअी जैसे पात्रोंका चरित्र-चित्रण करते समय हमें विशेष सावधान रहनेकी आवश्यकता है। अन्त-र्द्वंद्व दिखाते समय हम कथावस्तुकी ओर भी अिशारा कर सकते हैं, पर अुसका स्थान अत्यन्त गौण ही समझना चाहिये।

—x—

(पृष्ठ २७२ का शेष)

न हो कि अेक अक्षर बड़ा और दूसरा बिलकुल छोटा हो। अिस बातपर भी ध्यान देना चाहिये कि अक्षर सीधे खड़े लिखें, टेढ़े-मेढ़े न होने पावें। अक्षरोंके बीच अन्तर भी सप्रमाण हो।

दो शब्दोंके बीचमें कम-से-कम अेक अक्षरका स्थान छोड़ देना चाहिये। शब्दोंको बिलकुल सटाकर न लिखना चाहिये।

दो पंक्तियोंके बीचमें अेक पंक्तिकी मोटाअीका अन्तर छोड़ देना चाहिये।

विराम-चिन्होंका अुचित प्रयोग भी लिपिको सुन्दर बनाता है।

पंक्तियाँ अेकके नीचे दूसरी सीधी आनी चाहिये। हाशिया छोटा-बड़ा होनेसे सारी शोभा मारी जाती है।

राष्ट्रभाषा-परीक्षार्थियोंको अिस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

परीक्षोपयोगी—

काल-भेद

वर्तमानकालके भेद

सामान्य वर्तमानकाल—वह सीखता है। वे गाती हैं।
अपूर्ण या तात्कालिक—तुम दे रही हो। मैं ले रहा हूँ।
पूर्ण वा आसन्नभूत – आपने कहा है। अुन्होंने सुना है।
संदिग्ध— वह आती होगी। वे बोलते होंगे।
संभाव्य अपूर्ण—तू जाता हो। वे पढ़ती हों।
संभाव्य पूर्ण—तुमने गाया हो। मैंने सुना हो।
रीतिवर्तमान—लड़कियाँ गाया करती हैं।

भूतकालके भेद

सामान्य भूतकाल—रामचंद्र आये। शबरी बेर लायी।
अपूर्ण—हम पढ़ती थीं। आप सुनती थीं।
तात्कालिक—माँ परोस रही थी। बच्चे खा रहे थे।
पूर्ण—वासन्ती कागज लायी थी। बसंत स्याही लाया था
आसन्न – वे आये हैं। लड़कोंने देखा है।
संदिग्ध – वह सोया होगा। तूने देखा होगा।
संभाव्य पूर्ण—राम गया होता। सीताने देखा होता।
संभाव्यअपूर्ण—लड़के जाते होते। लड़कियाँ गाती होतीं।
रीति – हम जाते रहते थे। वे देखती रहती थीं।
हेतुहेतुमद्भूत—आप लिखतीं तो हम पढ़ते।

भविष्यन् कालके भेद

शुद्ध या सामान्य—आप पढ़ायेंगे। मैं पढ़ूँगा।
अपूर्ण या रीति – मैं भेजा करूँगा। तुम लेते रहोगे।
संभाव्य या विधिद्योतक—राम कहे। सीता खाये।
हेतुहेतुमद्भूत—आप देखें तो मालूम हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकाव्यके लक्षण

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः ॥
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः ।
अेकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा ॥
शृङ्गार-वीर-शान्तानामेकोऽङ्गी रस अिष्यते ।
अंगानि सर्वेपि रसाः सर्वे नाटकसंधयः ॥
अितिहासोभ्दवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम् ।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकंच फलं भवेत् ॥
आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश अेव वा ।
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुणकीर्त्तनम् ॥
अेक-वृत्त-मयैः पद्यैरवसानेऽन्य वृत्तकैः ।
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका अिह ॥
नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते ।
सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् ॥
संध्या-सूर्येन्दु-रजनी-प्रदोष-ध्वान्त-वासरः ।
प्रातर्मध्याह्न-मृगया-शैलर्तुवन-सागराः ॥
संभोगविप्रलम्भौच मुनि-स्वर्ग-पुराध्वराः ।
रण-प्रयाणोपयम-मंत्र-पुत्रोदयादयः ॥
वर्णनीया यथायोगं सांगोपांगा अमी अिह ।
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ॥
नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु ॥

(१) सर्गोंमें निबद्ध हो ।

(२) अुसका नायक कोअी देवता हो अथवा 'धीरोदात्त' के गुणोंसे विभूषित कोअी कुलीन क्षत्रिय हो। अेक कुलमें अुत्पन्न अनेक राजा भी नायक हो सकते हैं।

(३) शृङ्गार, वीर और शान्त—अिन तीनोंमें कोअी अेक रस प्रधान हो। और अुसके अतिरिक्त अन्य रस गौण होकर रहें।

(४) अुसमें नाटककी सभी 'संधियाँ' विराजमान हों।

(५) वृत्त कोअी अैतिहासिक हो अथवा अनैतिहासिक भी हो तो किसी सज्जनके आश्रित हो।

(६) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अिन चार वर्गोंमें किसी अेकको फल स्वरूप चित्रित किया गया हो।

(७) आरम्भमें नमस्कार, आशीर्वचन अथवा प्रतिपाद्य वस्तुका संकेत हो। कहीं कहीं खलोंकी निन्दा और सज्जनोंकी स्तुति भी देखी जाती है।

(८) सर्गकी रचना अेक ही तरहके वृत्तों अथवा छंदोंमें हो किन्तु अन्तके कुछ वृत्त बदले हुअे हों कभी कभी कअी वृत्तोंका अेक ही सर्गमें समावेश किया जाता है।

(९) सर्ग न बहुत छोटे हों, न बहुत बड़े। और अुनकी संख्या आठसे अधिक हो।

(१०) संध्या, सूर्य, चन्द्र, रजनी, प्रदोष, दिन, अंधकार, प्रातःकाल, मध्याह्न, मृगया, पर्वत, वन, सागर, ऋतु आदि प्राकृतिक दृश्योंके तथा संयोग, वियोग. यज्ञ, युद्ध विवाह आदि मानवी घटनाओंके और स्वर्ग नरक, ग्राम, नगर आदि विविध पदार्थोंके यथावसर वर्णन अुस महाकाव्यमें जहाँ तहाँ पाये जायें।

(११) अुसका नाम कवि, काव्यगत वृत्त, नायक अथवा किसी अन्यके आधारपर हो। सर्गोंके भी नाम घटनाक्रमके अनुसार हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षोपयोगी—

सुलेखन

सुलेखनसे मेरा मतलब लिपिकी सुन्दर लिखावटसे है। अिसे खुशख़त भी कहते हैं। आजकल लेखन-कलाकी जो हत्या हो रही है, वह अेक खेदका विषय है। मध्यकालमें सुलेखनपर बहुत ज़ोर दिया जाता था। लिखनेवाला अिस बातपर विशेष ध्यान देता था कि अुसके अक्षर सुन्दर, सुडौल हों, अुसकी लिपि आकर्षक हो। समाजमें भी अैसे लेखनकी बड़ी प्रशंसा होती थी।

और आज? आज तो अेक अुलटी ही ग़लतफ़हमी फैल गअी है। न-जाने कहाँसे यह बात चल पड़ी है कि "बड़े लोगोंका हस्ताक्षर सुन्दर होता ही नहीं है"। अिसके सबूतमें दो-अेक आदमियोंके नाम गिना दिये जाते हैं। पर वास्तवमें यह अेक कोरा भ्रम है। अनेकों अैसे बड़े आदमियोंके नाम लिये जा सकते हैं जिनका हस्ताक्षर बहुत ही सुन्दर है। और अगर अिस भ्रमको सत्य मान भी लिया जाय, तो अिसका अर्थ यह तो नहीं है कि जिनका हस्ताक्षर बुरा है, वे सब बड़े आदमी हैं, और बड़े बननेके लिये हस्ताक्षरका बुरा होना अेक साधन है। जो लोग अपनी लिखावटको अिसलिये बिगाड़ते हैं कि अैसा करनेसे वे बड़े समझे जायँगे, अुनकी अक्लपर तो तरस ही आता है।

वास्तवमें बात तो यह है कि जबसे मुद्रण यन्त्रोंका प्रचार हुआ है, लेखन-कलापर ध्यान ही नहीं दिया जाता और शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों ही अिस ओर लापरवाही दिखाते हैं। फल यह हुआ है कि हमारी लिपिका सौन्दर्य नष्ट हो गया है। लिखावट, जो अेक कलाके स्थानतक पहुँच गयी थी, अपने स्थानसे नीचे गिर गयी है। कुछ लोग तो अैसी बुरी तरह लिखते हैं कि अुनके संबंधमें यह ठीक ही लागू होगा कि "लिखें आप, बाँचे खुदा।" कुछ तो नागरी लिपिमें भी अपना नाम अैसी घसीटमें लिखते हैं कि अुसका अेक भी अक्षर स्पष्ट नहीं होता। अैसे व्यक्तियोंके पत्र पढ़नेके लिये अेक नहीं, अनेक व्यक्तियोंकी आवश्यकता होती है।

हम देखते हैं कि यह घसीट लिखनेकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। अिसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि अिस प्रवृत्तिको शीघ्र ही रोका जाय। परीक्षामें बैठनेवाले परीक्षार्थियोंके लिये तो यह अेक बहुत ही ख़तरनाक आदत है।

सुन्दर लिखावटका अर्थ यह है कि शब्दोंका रूप आँखोंको अच्छा लगे। अुन्हें देखते ही पढ़नेकी अिच्छा हो अुठे। परीक्षार्थियोंको तो यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि परीक्षक सबसे पहले सुन्दर, सुडौल लिपिसे ही प्रभावित होता है। अुसके बाद भाषाका, शुद्ध भाषाका, स्थान आता है। भाव और विषय-प्रतिपादनका स्थान अुसके भी पीछे है।

सुन्दर लिखावट लिखनेके लिये यह आवश्यक है कि अक्षरोंकी बनावटपर ध्यान दिया जाय। अक्षरका कौनसा भाग मोटा और कौनसा पतला होना चाहिये, यह समझना अत्यन्त आवश्यक है। सुलेख लिखनेके लिये बाज़ारमें विशेष लिपि-पुस्तकें बिकती हैं। अुनमें सुन्दर, सुडौल अक्षर छपे रहते हैं। अिन लिपि-पुस्तकोंसे विशेष सहायता ली जा सकती है।

अक्षरोंको सुडौल बनानेमें अनुपातपर अवश्य ध्यान दिया जाय।

अक्षर बड़े-बड़े और सुस्पष्ट लिखने चाहिये। अुनमें आकार साम्य होना अत्यन्त आवश्यक है। अैसा

[शेष पृष्ठ २७० पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुत्तीर्ण क्यों !

लें०– शेवंती गाजरे, प्रमाणित प्रचारिका, जलगाँव.

क्या कहते हो ! मैं 'परिचय' में अनुत्तीर्ण हुअी ! कैसे अनुत्तीर्ण हुअी ? मैंने तो खूब अभ्यास किया था । न दिन देखा था, न रात । यह कैसा अंधेर है !......क्या कह रहे हो ? फिरसे कहो ।......भाषा अशुद्ध होगी ! यह कदापि संभव नहीं । मुझे अुम्मीद थी कि सरलासे मैं अधिक प्राप्तांक पाअूँगी । पर यह तो अुलटी बात हुअी । ......सरला वर्गमें जाती थी ।.... अिससे क्या हुआ ? अुससे अधिक मैं तन तोड़कर अभ्यास करती थी । क्या ? प्रचारकके, अध्यापकके मार्गदर्शन अेवं पढ़ाअीके अभावमें ! नहीं, नहीं । मुझे आशंका है कि यहाँके प्रचारकने जानबूझकर मुझे अनुत्तीर्ण कराया । अुनकी यह हिम्मत, यह करतूत ! मुझे चुप रहनेको कहते हो ! अुनका यह कर्तव्य नहीं था । मैं वर्धा-कार्यालयसे अपने प्राप्तांक मँगाअूँगी ।...... क्या कहते, तीनों परचोंमें मुझे केवल ६० अंक प्राप्त हैं ! कैसी विचित्र बात है ! मैंने तो बहुत-सी पुरवणियाँ लिख मारी थीं ।......फिर कहते हो, पुरवणियोंसे क्या होता है ! मेरी भाषा अशुद्ध थी ! तुम ठीक कहते हो......हाँ यह सही है, मैंने अुत्तर पुस्तकमें 'मैं यहाँ है ।' 'तुम क्या करता है ।' 'बहोत-सी कहानीया मैंने वाची हूँ ।' अिस तरहके गलत वाक्य लिखे थे ।...... क्या कहते हो ? सच ? फिरसे बोलो ! वर्गका फायदा अुठानेसे अैसी गलतियाँ नहीं होतीं ! हाँ सच मालूम होता है तुम्हारा कहना । अच्छा, तुम्हारे कहे अनुसार मैं अिसी अगस्त महीनेसे वर्गमें नाम दर्ज कराअूँगी । और अैसा अध्ययन करूँगी कि अगली बार अच्छी सफलताके साथ अुत्तीर्ण होकर ही दम लूँगी ।

प्रवेशके परीक्षार्थियोंके लिअे--

लिंग परिवर्तन

नीचे लिखी संज्ञाओंके लिंग परिवर्तन कीजिये और अपने अध्यापकद्वारा जँचवाकर सही शब्दोंको समझ लीजिये ।

माता.........	सास..........	युवती..........	औरत..........
देवी..........	स्त्री..........	विदुषी..........	श्रीमान..........
युवा..........	बाप..........	चिड़िया..........	चीता..........
पंछी..........	भेड़िया..........	सहेली..........	मित्र..........
मैना..........	लकड़ी..........	गाड़ी..........	बेटा..........
पोथी..........	राजा..........	भैंसा..........	अुल्लू..........
भैंस..........	गाय..........	पुत्र..........	बालक..........
वधू..........	विधूर..........	बहनोअी..........	ननदोअी..........
ठाकुर..........	पंडित..........	महाशय..........	महोदय..........
थैली..........	मोर..........	हंस..........	कुम्हार..........
माली..........	अपराधी..........	मामा..........	दादा..........

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी-दृष्टिमें

सर्वोदयका सिद्धान्त— प्रकाशक- नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद। पृष्ठ संख्या ७४, मूल्य बारह आना।

गान्धी-साहित्यको प्रकाशनमें लानेका बहुत बड़ा कार्य नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबादने किया है। पूज्य महात्मा गान्धीजीके जीवन कालमें, और विशेष रूपसे अुनकी मृत्युके पश्चात, अुनकी विचार धाराको समझनेका प्रयत्न होता रहा है।

गान्धीवादी जीवन पद्धति, गान्धी विचारधारा अथवा गान्धीवादको यदि अेक शब्दमें व्यक्त करना हो तो वह है "सर्वोदय"। पिछले दिनोंमें अिस शब्दका विशेष प्रचार हुआ है। प्रस्तुत पुस्तक 'सर्वोदय सिद्धांत' में अिसी 'सर्वोदय' को समझानेका विषद प्रयत्न किया गया है। अिस पुस्तकमें कुल २२ लेख हैं जिनमेंसे ६ लेख पूज्य महात्मा गान्धीजीके हैं, शेष अुनके निकटके साथियोंके हैं। भाषा सरल और सुन्दर है।

'सर्वोदय' को समझनेके लिअे यह पुस्तक अुपयोगी सिद्ध होगी।

महादेवभाअीका पूर्व चरित—प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन। पृष्ठ संख्या ६२, मूल्य चौदह आना।

महादेवभाअीके सम्बन्धमें अेक बार बापूने कहा था "महादेव मेरा पुत्र, मित्र, सेवक सब कुछ है।" जिस व्यक्तिको गान्धीजी जैसे पारखीका यह प्रमाण-पत्र मिला हो अुसके व्यक्तित्वकी महानताकी सहज कल्पना की जा सकती है।

पूज्य महात्मा गान्धीके जीवन और अुनके प्रत्येक काममें अेक रूप हो जानेवाले महादेवभाअी अेक महान साधक थे। अिसी साधकके जीवनका पूर्वार्ध अिस पुस्तकमें प्रस्तुत किया गया है। चरित्रकारने महादेवभाअीके पत्रों, डायरियों, लेखों तथा अन्य प्राप्त प्रामाणिक जानकारीका अुपयोग किया है। महत्वकी अुन छोटी छोटी घटनाओंका भी अुल्लेख किया गया है, जो किसीके जीवनको महान बनाती हैं।

महादेवभाअीका यह पावन चरित्र अपने पाठकों को अेक नअी प्रेरणा देनेकी शक्ति अपनेमें रखता है।

—रामेश्वर दयालु दुबे

अनन्तकी ओर—लेखक—स्वामी सत्यदेव परिव्राजक। प्रकाशक-ज्ञानधारा कार्यालय, अलीगढ़। मूल्य ३)।

"अनन्तकी ओर" हिंदी जगतके सुप्रसिद्ध लेखक अेवं पर्यटक स्वामी सत्यदेव परिव्राजककी ओजस्वी लेखनीसे प्रसूत अेक अत्यन्त अुपयोगी पुस्तक है। स्वामीजीके निर्भीक व्यक्तित्वसे हिन्दी-संसार भली-भांति परिचित है। आप अेक स्वतन्त्र विचारक और प्रभावशाली वक्ता हैं। आपकी कतिपय यात्रा-पुस्तकें देशमें काफी लोकप्रिय हो चुकी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक आत्म अनुभवके आधारपर लिखी गअी है और अिसमें स्वामीजीके पिछले संघर्षपूर्ण जीवनके सभी निष्कर्ष विद्यमान हैं। अेक अुच्च आदर्शकी खोजमें भटकनेवाले नवयुवकोंको अपना जीवन-पथ निश्चित करनेमें अिस पुस्तकसे बड़ी सहायता मिल सकती है। जीवनकी अनेक जटिल समस्याओंपर अिसमें सुन्दर ढंगसे प्रकाश डाला गया है। स्वामीजी की कलमका लोहा तो सभीको मानना पड़ेगा। अपनी बात कहनेका अुनका ढंग बिल्कुल अनोखा है। शैली स्पष्ट और भाषा प्राणवान है। आशा है, पुस्तकका जनतामें अच्छा प्रचार होगा।

- प्रशान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचल

[निवेदन— राष्ट्रभाषा प्रचारकों और केन्द्र व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि वे कृपया "राष्ट्रभाषा" में प्रकाशनार्थ अपने केन्द्रके वर्ग, समारोह आदि राष्ट्र-भाषा-कार्यका विवरण, समाचार आदि **प्रान्तीय संचालकके द्वारा भेजें।** — व्यवस्थापक]

गुजरात

अहमदाबादः—श्री रणधीरभाओी अुपाध्याय, की ओरसे— साहित्य-रत्न (सारे भारतमें प्रथम) तथा अेम. अे .द्वितीय श्रेणीमें अुत्तीर्ण होनेके और स्थानीय अेस. अेल. डी. आर्टस कॉलेजमें प्रोफेसरके स्थानपर नियुक्ति होनेके अुपलक्ष्यमें—स्थानीय प्रचारकों का अेक स्नेह सम्मेलन, कार्यालयमें गत् ता. २ जुलाओी को रखा गया था। अिस सम्मेलनमें अहमदाबादके तमाम प्रचारक-बन्धु सम्मिलित हुअे थे। सम्मेलन बहुत सफल रहा।

ता ३।७।५१ को शामके ६ बजे स्थानीय राष्ट्र-भाषा प्रचारकोंकी अेक शोक सभा श्री वासुदेव शास्त्रीजी की अध्यक्षतामें हुओी जिसमें राष्ट्रभाषाके अेक पुराने सक्रिय प्रचारक श्री शरत्कुमार व्यासके निधनपर शोक प्रदर्शित किया; और निम्न-लिखित शोक प्रस्ताव किया गया।

"अहमदाबाद राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रचारकोंकी यह सभा श्री शरत्कुमार दीनानाथ व्यासके अकाल निधनपर हार्दिक शोक प्रगट करती है और अीश्वरसे प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माको शान्ति तथा कुटुम्बी जनोंको धीरज प्रदान करे।"

बिलीमोराः—गत ता. ६ जुलाओीको राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरित करनेका समारोह स्थानीय डॉक्टर मणिलाल अेन. शाहके सभापतित्वमें संपन्न हुआ। अिस अवसरपर राष्ट्रभाषा प्रारम्भिक, प्रवेश और परिचय परीक्षाओंमें केन्द्रमें सर्व प्रथम अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको ५, ५ रुपयोंके पुरस्कार देनेकी घोषणा की गयी।

परिचयका पुरस्कार अध्यक्ष महोदयकी ओरसे और प्रारम्भिक-प्रवेशका पुरस्कार गाँवके सेठ श्री. ठाकोरभाओी सी. पटेलकी ओरसे दिया जायगा।

लाठीः— गत् ता. ७ जुलाओीको सौराष्ट्रके गोहीलवाड और झालावाड विभागके जिला केन्द्र निरीक्षक श्री जयेन्द्रभाओी त्रिवेदीजीका केन्द्रकी ओरसे स्वागत किया गया।

श्री त्रिवेदीजीने केन्द्रकी व्यवस्थासे ज्ञात होकर हर्ष प्रगट किया और राष्ट्रभाषाके महत्व और हिन्दीमें अुच्च कोटीके साहित्यपर सारगर्भित भाषण दिया।

वल्लभपुरी कटारियाः—सौराष्ट्र विधान-सभाके सदस्य श्री अमृतलालजीकी अध्यक्षतामें केन्द्रके—राष्ट्रभाषा-परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण–परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

धनसुराः—केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत् ता. ८ जुलाओी रविवारको श्री भीखुभाओी जोशीके सभापतित्वमें मनाया गया। अध्यक्ष महोदयने स्वतन्त्र-भारत की राष्ट्रभाषा और जनताका कर्तव्य अिस विषय पर सुन्दर प्रवचन किया।

श्री भीखुभाओी जोशीने केन्द्रकी प्रगतिपर हर्ष व्यक्त किया। केन्द्रकी भविष्यमें काफी प्रगति हो अिसलिये राष्ट्रभाषा प्रचार मंडल की स्थापना की गओी।

आणन्दः—स्थानीय पायोनियर हाअीस्कूलमें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव अुत्तर गुजरातके अेज्युकेशनल अिंस्पेक्टर श्री त्रिवेदीजीकी अध्यक्षतामें गत् ता. १२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाअीको मनाया गया। अध्यक्ष महोदयने काफी संख्यामें हिन्दीकी परीक्षाओंमें सम्मिलित होनेके लिये अपने प्रवचन द्वारा जनतासे अपील की।

पेथापुरः—प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत् ता. ६ जुलाअीको पेथापुर स्टेटके ठाकोर साहबकी अध्यक्षता में बड़े धूम-धामसे मनाया गया। अिस अवसरपर गाँवकी जनता काफी संख्यामें अुपस्थित थी। अध्यक्ष महोदयने अपने हाथों परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र प्रदान किये। पश्चात् 'वन्देमातरम्' के बाद समारम्भ समाप्त हुआ।

मोर्वीः—स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी कार्यकारिणी समितिकी अेक बैठक गत् ता. २३ जूनको हुअी; जिसमें समितिका पुनः संगठन किया गया। समितिके पदाधिकारी निम्न प्रकार निर्वाचित हुअे हैं।

अध्यक्षः—श्री. कान्तिलाल मु. धोलकिया, अेम. अे.; कार्याध्यक्षः—श्री. त्र्यंबकलाल दु. धोलकिया, बी. अेस-सी. बी. टी.; अुपाध्यक्षः—श्री. लाभशंकर शास्त्री, व्याकरणाचार्य, कोविद; केन्द्र-व्यवस्थापकः—श्री. शान्तिलाल संघवी, बी. अे. कोविद; मंत्रीः—श्री. रविलाल नगवाड़िया, बी. अे. कोविद। अिनके अलावा सदस्य भी निर्वाचित किये गये हैं।

मालपुरः—राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गुजरातके प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता मुनि श्री. संतबालजीकी अध्यक्षता में मनाया गया।

मुनि श्री. संतबालजीने प्रमाण-पत्र वितरित करनेके बाद राष्ट्रभाषाके बारेमें सारगर्भित भाषण दिया।

हाँसोटः—राष्ट्रभाषा परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव श्री. लल्लूभाअी छगनलाल सेठकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर मनोरंजन कार्यक्रम भी रखा गया था।

अहमदाबादः—बम्बअीसे प्रो. रामयतन सिंह "भ्रमर" तथा प्रो. नारायण प्रसाद जैन अहमदाबाद केन्द्रके साहित्य-रत्नकी मौखिक परीक्षा लेनेके लिअे ता. १५ जुलाअीको अहमदाबादमें पधारे थे। आपने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति कार्यालयकी मुलाकात ली; और संस्था द्वारा संचालित बहनों के कोविदके वर्गमें आप दोनों ने सुन्दर प्रवचन किया।

महाराष्ट्र

चांदवड—नाशिक जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी १९५१-५२ के लिअे अेक साधारण सभा हुअी। नीचे लिखे अनुसार पदाधिकारी चुने गये।

अध्यक्ष—श्री. के. ह. आवड
अुपाध्यक्ष—श्री. वि. रा. रानडे
कोषाध्यक्ष—श्री. र. खे. कापडिया
प्रधानमंत्री—श्री. ग. क. ओस्तवाल
सहायकमंत्री—श्री. हि. ना. परदेशी
सदस्य—सर्वश्री. प्रि. जोशी, जाजू, जोशी, भंडारी, कुलकर्णी, शाहगुरुजी आदि।

पूना—महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे हालमें ही तुलसी महाविद्यालय और अुसकी अध्यापन, विशारद शाखाका अुद्घाटन तथा हिन्दी शिक्षक सनद विद्यालयका पाँचवां वार्षिक समारोह श्री प्रा० श्रीपाद महादेव माटेजी अेम० अे० की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोहमें पूना शहरकी सभी हिन्दी प्रचारक संस्थाओंके प्रमुख और प्रमाणित प्रचारक तथा हिन्दी शिक्षक सनद विद्यालयके भूतपूर्व तथा वर्तमान विद्यार्थी और हिन्दी प्रेमी सज्जन बड़ी संख्यामें अुपस्थित थे। अध्यक्ष श्री माटेजीने विद्यालयका अुद्घाटन करते हुअे अेक अत्यन्त सुन्दर भाषण दिया। आपने कहा यह बड़े आनन्दकी बात है कि अितने व्यक्ति हिंदी पढ़ रहे हैं परन्तु अिस शिक्षाका अुद्देश्य केवल नौकरी या प्रोमोशन पाना नहीं होना चाहिये। अनुभवके बलपर हिन्दी द्वारा सारे भारतवर्षको महाराष्ट्रके बुद्धि-वैभवसे परिचित कराना ही हमारा अुद्देश्य होना चाहिये। हममें अितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षमता आनी चाहिये कि हम हिन्दीके द्वारा कोअी वाङ्मयीन संदेश जनताको दे सकें। भारतवर्षका समग्र यथार्थ दर्शन करके अुसके हृदयगत भाव जान लेनेमें हिन्दीका अुपयोग करना चाहिये। अंग्रजोंने भारतका सूक्ष्म निरीक्षण करके अपना आसन यहां स्थिर किया था। भारतकी स्वतन्त्रता बनाये रखनेके लिअे हमें भी चाहिये कि हम अपने देशका सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लें।

सनद परीक्षामें प्रथम अुत्तीर्ण हुअी श्री सौ० नलिनी पं० साठेजी और कुमारी प्रभा शास्त्रीजीको समितिकी ओरसे तथा श्री वि० द० देवधरजीकी ओरसे अध्यक्षजीने पुरस्कार दिया।

मणिपुर

अिम्फाल— विगत् २८ जूनको श्री पिशक सिंह अेम. अे. की अध्यक्षतामें याअिस्कूल हिन्दी स्कूलका पारितोषिक तथा प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव हुआ। अिस अवसरपर जनता काफी संख्यामें अुपस्थित थी। छात्र-छात्राओंने कअी अजीब तमाशे दिखाये। बादमें सभापति द्वारा अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको पारितोषिक तथा प्रमाण-पत्र दिये गये। अिसके अुपरांत सभापतिके आसनसे श्री पिशकसिंहने "राष्ट्रभाषा" के सम्बन्धमें भाषण दिया जिसका जनता व परीक्षार्थियोंपर काफी अच्छा प्रभाव पड़ा।

विश्वशांति आश्रममें "राष्ट्रभाषा" का वर्ग खोल दिया गया। वर्गमें विद्यार्थी काफी संख्यामें हैं। श्री गुणाधार शर्मा रा. भा. कोविद अपने अनुभव द्वारा लाभ पहुँचाते हैं। विद्यार्थी भी बड़ी दिलचस्पीके साथ लाभ अुठाते हैं। आगामी प्रचार परीक्षाओंमें परीक्षार्थी काफी संख्यामें सम्मिलित हुअे हैं।

सिंध-राजस्थान

कोटा — ता. ६ जुलाअी ५१ को कोटामें अेक राष्ट्रभाषा अुत्सव श्री माधोदास डिपटी डै० के सभापतित्वमें मनाया गया। अिसमें श्री माधोदासजीने राष्ट्रभाषा की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र दिये। हितकारी हाअीस्कूलके आचार्य प्रो० पाराशर प्रधान कोटा डिवीजन रा. भा. प्र. समिति और केन्द्रव्यवस्थापक श्री प्रचारामने राष्ट्रभाषाके महत्वपर ओजस्वी भाषण दिये जिसका जनतापर बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा। कोटा केन्द्र बहुत थोड़े समयमें काफी अुन्नति कर चुका है और भविष्यमें भी बड़ी आशा है।

समितिकी परीक्षाओं तथा पाठ्यपुस्तकोंका सम्मान

भोपाल राज्यमें अुर्दूके स्थानपर हिन्दी अनिवार्य कर दी गयी है और सरकारी कर्मचारियोंको सूचित किया गया है कि वे छः मासके भीतर हिन्दी सीख लें। अिस राज्यकार्यमें जहाँ हिन्दी भाषाको अनिवार्य रखा है वहाँ राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी परीक्षाओंको प्राथमिकता दी गयी है।

दूसरे, सरकारी स्कूलोंमें भी समितिकी प्रारंभिक तथा प्रवेश परीक्षाओंका पाठ्यक्रम रखा गया है। और शिक्षक शालामें अिन परीक्षाओंको स्थान दे सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा विभाग

आगामी प्रचार परीक्षाअें :—

आगामी राष्ट्रभाषा प्रचार-परीक्षाअें ता. २२,२३ सितम्बर '५१ को होंगी।

लेखन-कार्य

कोविद परीक्षार्थियोंके लिअे लेखन-कार्य स्वतन्त्र रूपसे रहता है। अिसमें अुत्तीर्ण होना अनिवार्य है। कोविदके परीक्षार्थी तैयारीकी अवधिमें नीचे दिये हुअे विषयमेंसे ही किन्हीं आठ विषयोंपर निबन्ध लिखें :—

सितम्बर' ५१ के लिये निबन्ध–सूची :—

(१) मेरा सबसे प्रिय हिन्दीका कवि या लेखक।

(२) भिन्न भिन्न ऋतुओंमें प्रकृति-सौन्दर्य।

(३) अपने प्रान्तीय साहित्यका परिचय।

(४) नारी और समाज।

(५) हिन्दीमें कृष्ण-काव्य।

(६) हमारी कृषि-व्यवस्था।

(७) भारतकी आजकी समस्याअें अेवं अुनका हल।

(८) समाजपर साहित्यका प्रभाव।

(९) व्यवसायका चुनाव।

(१०) अेशियायी देशोंमें नवजागरण।

(११) आज हम किसे मार्ग-दर्शक चुनें।

(१२) स्वास्थ्य।

कोविदके परीक्षार्थी ध्यान दें :—

सितम्बर' ५१ से "साहित्यका साथी" पुस्तकमेंसे 'साहित्यका व्याकरण' नामक अध्याय कोविदके लिअे पाठ्यक्रममें नहीं रहेगा।

सितम्बर '५१ से कोविद मौखिक परीक्षाके लिअे परीक्षार्थियोंको "कंठाभरण" पुस्तकसे ही कम-से-कम पाँच कवितायें और तीन गद्यखण्ड कण्ठस्थ करने होंगे।

कोविदके परीक्षार्थी लेखन-कार्यकी बहियाँ अपने अध्यापकसे जँचवाकर परीक्षा-तिथिके अेक सप्ताह पहले केन्द्र-व्यवस्थापकके पास दे दें।

राष्ट्रभाषा रत्न–परीक्षा—

आगामी राष्ट्रभाषा रत्न-परीक्षा ता० २२,२३ २४ और २५ सितम्बर' ५१ को होगी।

राष्ट्रभाषा रत्नके परीक्षार्थी ध्यान दें :—

प्रश्न-पत्र ६ ठे के लिअे "हिन्दी ही क्यों" अथवा "राष्ट्रभाषा हिन्दी" पुस्तकसे सहायता ली जा सकती है।

राष्ट्रभाषा रत्नके नये केन्द्र :—

सितम्बर' ५१ की रत्न-परीक्षाके लिअे अस्थायी रत्न-केन्द्र :—

अुदयपुर (राजस्थान); अिन्दौर और भोपाल (मध्यभारत); जामनगर, महेसाणा तथा वढवाण शहर (गुजरात); साँगली और धुलिया (महा.) जालना (हैदराबाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा रत्न-परीक्षाका स्थगित

—परीक्षा-फल—

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा संचालित 'राष्ट्रभाषा-रत्न' के अप्रैल १९५१ की परीक्षामें अुत्तीर्ण परीक्षार्थी :—

पहली श्रेणी

क्रम-संख्या नाम

४१ र० सु० वेटाअी
७१ ज० गि० त्रिवेदी (सर्व प्रथम)
१७६ वसुंधरा गाडगील (द्वितीय)

द्वितीय श्रेणी

२९ गि० रा० सराफ
३२ ची. अं० महेता
४४ सु० रे० त्रिवेदी
५१ शा० अ० शाम
११४ ग० पु० जोशी
११५ वि० शं० गोखले
१३९ अे० मो० आब्राहाम
१४७ ज० ल० मालणकर
१५९ कु० भा० ना० गोरडिया
१७० स० ची० वीण
१७२ सरला द० कतीरा
१७५ ह० घ० गान्धी

तीसरी श्रेणी

१९ ज० रे० रावल
२० र० श्री. अग्रवाल
२१ शि० सू० पांडे
२५ च० जो० शाह
२६ ओ० श० पटेल
२८ ग० प्रा० भट्ट
३३. जी० श० काछीया
३८ मा० मो० महतो
४० र० जे० क्षत्री
४५ बि० म० भट्ट
४६ ही० के० गज्जर
४८ मो० हु० मलिकशाह
५० कु० शान्ता ओ० जानी
५२ का० पु० पटेल
५३ सत्यवती वेंकटेश्वर्लु
६० का० मो० शाह
६२ का० वि० शाह
६३ छ० प्रे० पटेल
६६ म० वि० पटेल
६७ रा० रा० पान्डेय
७३ शा० ल० पुजारा
७४ र० द० जोशी
७५ सो० जे० पन्ड्या
१११ ग० गो० जोशी
११२ दि० द० देव
११३ पु० न० जोशी
१३१ वि० शामल सिंह
१३३ अु० स० पाठक
१३८ शि० सु० शुक्ल
१४५ गो० रा० महाजन
१४६ च० कां० जरीवाला
१४९ दा० ह० मराठे
१५१ न० अु० जोशी
१५८ बा० कृ० प्रभु
१६० श्रीमती भा० पु० पारेख
१६४ र० झ० व्यास

मौखिक सुविधा :—

२३ कंचन डा० शाह
२४ चन्द्रकान्ता गो० चोकसी
२७ क० पुं० त्रिवेदी
६१ ची० छ० शिरवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल सुधार :—

(१) कपाया (गुजरात) केन्द्रमें प्रारम्भिकके दो परीक्षार्थियोंकी अुत्तर-पुस्तकें देनेमें भूल हो जानेके कारण प्रान्तीय द्वितीय पुरस्कार पानेके अधिकारी श्री शान्तिलाल कल्याणजी सेवक, क्रमसंख्या १२३३४ के स्थानपर श्री प्रेमजी विशनजी देठीआ, क्रमसंख्या १२३३३ का नाम गत जुलाअी' ५१ के अंकमें प्रकाशित हो गया है।

अुक्त पुरस्कार पानेके वास्तविक अधिकारी श्री शान्तिलाल कल्याणजी सेवक, क्रमसंख्या १२३३४ ही हैं।

(२) राष्ट्रभाषा कोविद— विदर्भ-नागपुर प्रान्तमें द्वितीय—विदर्भ नागपुर प्रान्तमें द्वितीय पुरस्कार पानेकी अधिकारिणी क्रमसंख्या २३३, कु० शरयू शामराव कोठारे-प्राप्तांक-२४० प्रथम श्रेणी-के नामके स्थानपर भूलसे क्रमसंख्या २५४, श्री रामचन्द्र प्रह्लाद अयाचित-प्राप्तांक २२७ द्वितीय श्रेणी-का नाम प्रकाशित हो गया है।

श्री कु० शरयू शामराव कोठारेको प्रान्तीय द्वितीय पुरस्कार रु. ८) मिलेगा।

पाठक कृपया सुधारकर पढ़ें।

हमारे नये प्रमाणित-प्रचारक

प्रान्त	प्रचारकका नाम	क्रमसंख्या	स्थान
बंगाल	श्री विष्णुपद भट्टाचार्य	२५८८	कटवा
अुत्कल	,, आपन्ना प्रधान	२५८९	पुरुषोत्तमपुर
राजस्थान	,, चम्पालाल बक्षी	२५९०	मेड़तारोड़
गुजरात	,, कान्तीलाल बालाशंकर भट्ट	२५९१	बड़ौदा
,,	,, प्रभावती दत्तात्रय केतकर	२५९२	,,
,,	,, धीरजलाल कालीदास कारीया	२५९३	अहमदाबाद
,,	,, सौ. मालिनी वसन्त पंडित	२५९४	,,
,,	,, शकुन्तला वामनराव सप्तर्षि	२५९५	,,
,,	,, सुरेशचन्द्र रेवाशंकर त्रिवेदी	२५९६	,,
,,	,, हरिवदनभाअी माणेकलाल पटेल	२५९७	,,
,,	,, जयन्तिलाल कानजी पारेख	२५९८	ध्रोल
,,	,, अश्विनकुमार देवीप्रसाद रावल	२५९९	सुरेन्द्रनगर
,,	,, पन्ना काशीनाथ अयाचित	२६००	नवसारी
,,	,, आशाभाअी मोतीभाअी पटेल	२६०१	रणोली
,,	,, प्रबोधचन्द्र गजानन जोशी	२६०२	कोट-व्यारा
,,	,, कपिलराय जेठालाल पंड्या	२६०३	जसदन
,,	,, नवीनचन्द्र अम्बालाल रावल	२६०४	तलोद
,,	,, सवितागौरी लक्ष्मीशंकर दवे	२६०५	लीम्बडी
,,	,, मोहनलाल जेठालाल दवे	२६०६	विसनगर
,,	,, मोतीलाल चुन्नीलाल शाह	२६०७	संखेडा
,,	,, पूरणलाल अुदयराम पंड्या	२६०८	धोराजी
,,	,, जयेन्द्रराय नानाभाअी बूच	२६०९	कच्छ मांडवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात	श्री महाशंकर रेवाशंकर भट्ट	२६१०	राजकोट
,,	,, अमियाशंकर छोटालाल जोशी	२६११	,,
,,	,, मोहनलाल घोहाभाओ खोलकिया	२६१२	सावरकुंडला
महाराष्ट्र	,, मधुसूदन तुकाराम कुलकर्णी	२६१३	पूना
,,	,, कु. सुन्दराताओ भास्कर भोपटकर	२६१४	,,
,,	,, सौ. ताराबाओ श्रीधर जोशी	२६१५	,,
,,	,, कमलाबाओ श्रीधर परांजपे	२६१६	,,
,,	,, सौ. अिन्दिराबाओ शंकर समुद्र	२६१७	,,
,,	,, विष्णु विनायक मुलगुंद	२६१८	,,
,,	,, बालकृष्ण चिन्तामण गोगटे	२६१९	,,
,,	,, वसन्त अेकनाथ बाम	२६२०	,,
,,	,, दामोदर दत्तात्रय कुलकर्णी	२६२१	,,
,,	,, कमलानाथ काशीनाथ पंडित	२६२२	,,
,,	,, अुषाताओ शंकर महाजनी	२६२३	बारामती
,,	,, लगमाणा कगापा अकिवाटे	२६२४	जयसिंगपुर
,,	,, विश्वंभर पुंडलिक गाँवकर	२६२५	शिरोडा-गोवा
,,	,, गजानन काशीनाथ जोशी	२६२६	मिरज
,,	,, नरेन्द्र गणपत भावसार	२६२७	धुलिया
,,	,, पांडुरंग गणपती थोरात	२६२८	कालवडे
,,	,, गणपति श्रीपती मोहिते	२६२९	बेलवडें बु ॥
आन्ध्र	,, डी० व्ही० रमणमूर्ति	२६३०	कासिमकोटा
विदर्भ-नागपुर	,, वसन्त गणेश पाठक	२६३१	नागपुर
,,	,, गणेशसिंह तेजसिंह चौहान	२६३२	अमरावती
,,	,, अीश्वरीप्रसाद तिवारी	२६३३	वर्धा
,,	,, सुदामा किसनदास हुमने	२६३४	,,
हैदराबाद	,, सुरेशचन्द्र शर्मा	२६३५	हैदराबाद
विदर्भ-नागपुर	,, लक्ष्मणराव तेलंग	२६३६	नागपुर

नये केन्द्र

क्रमांक	केन्द्र	जिला	प्रान्त
६४०	मिर्जापुर	मेदिनापुर	बंगाल
७५७	रुद्रनगर	चौबीस परगना	,,
७३२	महू	अिन्दौर	मध्यभारत
६४४	चलामली	बड़ौदा	गुजरात
६८०	सरदारगंज	भुज	,,
७०७	कनीज	खेड़ा	,,
७०९	मटवाड	सूरत	,,
७१७	मीराखडी	पंचमहल	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमांक	केन्द्र	जिला	प्रान्त
७१९	डबका	बड़ौदा	,,
७५९	जखौ	अबडासा	,,
६३९	असदपुर	अमरावती	वि. नागपुर
७७३	बडनेरा	,,	,,
७७४	धरणगाँव	बुलढाना	,,
६४२	नागभीड	चांदा	,,
७९४	धाबा	,,	,,
७२०	देसाओगंज	,,	,,
७७६	कोठारी	,,	,,
७२८	खरांगना	वर्धा	,,
७८६	वायगाँव निपाणी	,,	,,
७७०	सतना	सतना	,,
६८३	मालेगाँव बु॥	पूना	महाराष्ट्र
६८५	शेवगाँव	अहमदनगर	,,
७००	वडगाँव	कोल्हापुर	,,
७०३	बुरम्बाड	रत्नागिरी	,,
७३५	खानापूर	बेलगाँव	,,
७३८	कडोली	,,	,,
७३९	दानवले वाडी	अु. सातारा	,,
७४४	पाटण	सातारा	,,
७५२	नगरसूल	नाशिक	,,
७५५	चिखल ओहोड़	,,	,,
७५९	विसापूर	अहमदनगर	,,
७६२	नारगोल	ठाणा	,,
७६३	सिंधी कालूनी हैल्थ कैम्प	अहमदनगर	,,
७६४	अुमराणा	नाशिक	,,
७६९	पुसे सावली	अु. सातारा	,,
७६०	घोटकी	सिंध	राजस्थान
७६१	लक्ष्मणगढ़	सीकर	,,
७२६	बागडिया	ढेंकानाल	अुत्कल
६४१	अिलकल	विजापुर	कर्नाटक
६४६	सिरसी	अु. कन्नड	,,
६४७	गोकर्ण	,,	,,
६४९	मसूती	विजापुर	,,
६६८	होर्ती	,,	,,
७१३	सिद्धापुर	अु. कन्नड	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी परीक्षाओंके परीक्षकोंको विशेष सुविधा

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकोंपर संवत् २००७ की समितिकी परीक्षाओंके परीक्षकोंको ३३% कमीशन दिया जाना निश्चित किया गया है। किसी भी पुस्तककी अेक प्रति या अेकसे अधिक प्रतियाँ मंगानेपर भी यह कमीशन मिल सकेगा। पुस्तकोंका आर्डर शीघ्र दे कर अिस सुविधासे अवश्य लाभ अुठाना चाहिये। आर्डर देते समय कम-से-कम २) रु० पेशगी अवश्य भेजनेकी कृपा करें। आर्डर देते समय परीक्षक यह भी लिखनेकी कृपा करें कि वे किस परीक्षाके किस प्रश्नपत्रके परीक्षक हैं।

साहित्य

गोरखबानी	६)
आधुनिक वीर काव्य	१॥)
रसखान और अुनका काव्य	।।।)
शैवाल	३)
राजस्थानी लोक गीत	१॥)
भोजपुरी ग्राम गीत (प्रथम भाग)	५)
,, ,, ,, (द्वितीय भाग)	११)
मैथिली लोक गीत	४)
सम्मेलन-निबंधमाला (प्रथम भाग)	२)
प्रेमघन-सर्वस्व (प्रथम भाग)	६)
,, ,, (द्वितीय भाग)	१०)
अेकता	३)
काव्य कलानिधि	३॥)
आधुनिक कवि (भाग ३, ४, ५) प्रत्येक	२॥)
देव शब्द रसायन	२॥)
अनुशीलन	१॥)
हिन्दी काव्यमें प्रकृति-चित्रण	६)
चित्ररेखा	१॥)

राजनीति

राजनीतिके सिद्धान्त	८)
आदर्श नगर व्यवस्था	१०)

धार्मिक

मत्स्य महा पुराण	२०)
वायु पुराण	१२)
पुराणोंमें गंगा	१०)
तपोभूमि	१०)
अैतरेय ब्राह्मण	५)
शंकराचार्यका आचार-दर्शन	५)
आचार्य सायण और माधव	६)

अर्थशास्त्र

भारतीय ग्राम्य अर्थशास्त्र	७)
द्रव्यशास्त्र	२।)

कोष

शासन-शब्दकोष	१५)
शरीर विज्ञान शब्दकोष	५)

बौद्ध साहित्य

जातक (प्रथम भाग)	७॥)
,, (द्वितीय ,,)	७॥)
,, (तृतीय ,,)	१०)

अन्य

सम्मेलनके-रत्न	५)
विशारद-सूची	।।।)
सम्मेलनके कार्य-विवरण प्रति वर्षका लगभग	१)
अंग्रेजी साहित्यका अितिहास	३)
स्त्रीका हृदय	१॥)
आंध्र देशके कबीर श्री वेमना	१।।।)

पता—साहित्य मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसाम

परीक्षार्थियों का अनुक्रम

सन्		माह		परीक्षार्थियोंकी संख्या
१९३७	...	सितम्बर	...	५०
		नवम्बर		१३
१९३८	...	फरवरी	...	०
		सितम्बर		१७
१९३९	...	फरवरी	...	४२
		सितम्बर		१३६
१९४०	...	जनवरी	...	२५६
		अगस्त		३४२
१९४१	...	फरवरी	...	३६६
		अगस्त		२५८
१९४२	...	फरवरी	...	४०८
		अगस्त	आन्दोलन	स्थगित
१९४३	...	फरवरी	...	५३४
		अगस्त		१८६
१९४४	...	फरवरी	...	४५८
		अगस्त		३५७
१९४५	...	फरवरी	...	६५८
		सितम्बर		६७८
१९४६	...	फरवरी	...	८१६
		सितम्बर		१२०४
१९४७	...	फरवरी	...	८१७
		सितम्बर		१२७९
१९४८	...	फरवरी	...	१४०१
		सितम्बर		१०१९
१९४९	...	अप्रैल	...	१२०६
		सितम्बर		१३२१
१९५०	...	अप्रैल	...	१६८९
		सितम्बर		१४६२

मुद्रक — सुमत वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

गुरुकुल-पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी

साहित्य-सेवा या हिन्दी-सेवा लाक्षणिक प्रयोग हैं। अिनका अर्थ अुस कोटि-कोटि जनताकी सेवा है जो अिस भाषाको बोलती और समझती है। हमने साहित्यका साधन अपनाया है, परन्तु, लक्ष्य हमारी यही जनता है। अिसीको अज्ञान, मोह, कुसंस्कार और परमुखापेक्षितासे बचाना साहित्य-सेवाका असली अर्थ है। हमें अपने देशको बाहर और भीतरसे सँवारना है। यदि यहाँके करोड़ों मनुष्योंको पशुसुलभ मनो-वृत्तियोंसे अूपर अुठाकर मनुष्यताके आसनपर बैठा सकें तो हम समूचे विश्वको नवीन आलोक देंगे। यह कार्य हमें करना ही है।

—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

सितम्बर, १९५१

ष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रा ष्ट्र भा षा

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मुखपत्र

संपादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

विषय-सूची

१. पड़ोसी देशोंकी राष्ट्रभाषाअें २८३
२. प्रान्तीय हलचल २८६
३. परीक्षा विभाग २९५

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाअें

सितम्बर '५१ की

परीक्षाओंके परीक्षार्थियोंकी संख्या

नीचे दिये विवरणके अनुसार आवेदन-पत्र आये:

प्रान्त	प्रारम्भिक	प्रवेश	परिचय	कोविद
अुत्कल	१७१७	९९०	२९३	७९
राजस्थान	७४६	९७३	५७१	१०२
मणिपुर	५२३	२८७	१९९	५०
आसाम	३०२	२६६	६६	२८
बंगाल	८०३	३९८	१६२	३७
दिल्ली	१०८	१०७	५०	९
मध्यभारत	२७९	४६४	२२९	५७
गोवा	११७	७७	२२	११
महाराष्ट्र	८७१०	६५७३	३२०४	९८१
गुजरात	१५५८३	१३५१९	८६७४	२२७६
बम्बअी	३३३९	४५६८	२८०४	१०११
विदर्भ-नागपुर	४०५०	३८१६	१४८७	३७२
हैद्राबाद			४६८	८७
कर्नाटक	७२४	४७७	२४७	२०९
आन्ध्र	१२	३	१	५
आफ्रिका	१६३	१३८	५०	३
लंका	४	२		
अंदमान	२०	४९	२७	३

अिनके अलावा कुछ और भी आवेदन-पत्र आये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

वर्ष १०] वर्धा, सितम्बर— १९५१ [अंक ११

पड़ोसी देशोंकी राष्ट्रभाषाअें

हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके दिल्ली कार्यालयके श्री शंभुनाथ तिवारीने, दो वर्ष हुअे नयी दिल्लीस्थित दूतावासोंसे अुन-अुन देशोंकी भाषाके बारेमें चंद प्रश्न पूछकर अपना ज्ञान बढ़ानेका प्रयत्न किया था। हमारा विश्वास है कि यह जानकारी हम सबके लिअे भी अुपयोगी होगी।

(१) तिवारीजीका पहला प्रश्न था—"क्या आपके देशमें अेक ही राष्ट्रभाषा है अथवा अेकसे अधिक? क्या आपके देशमें अेकही राष्ट्रलिपि है, अथवा अेकसे अधिक?"

थाअीलैंडके दूतावासने लिखा— "थाअीलैंडमें अेक ही राष्ट्रभाषा है और अेक ही राष्ट्रलिपि।"

चीनी जनतंत्रके राजदूतके यहाँसे अुत्तर आया— "चीनमें अेक ही राष्ट्रभाषा है और अेक ही राष्ट्रलिपि।"

बर्मा-संघके दूतावासके यहाँसे लिखा मिला— "हमारे यहां केवल अेक ही राष्ट्रभाषा है—बर्मी; और अेक ही राष्ट्रलिपि। अितिहासके आरंभकालसे यही अवस्था चली आ रही है। सारे देशमें मात्र बर्मी ही लिखी और बोली जाती है।"

अिण्डोनेशिया जनतंत्रके राज-प्रतिनिधिका अुत्तर अपेक्षाकृत लम्बा था— "समस्त अिण्डोनेशियाके लिअे अेक प्रकारसे अेक ही राष्ट्रभाषा और अेक ही राष्ट्रलिपि है। राष्ट्रभाषाका नाम है "भाषा-अिण्डोनेशिया"। लिपिके रूपमें रोमन-लिपिका व्यवहार है। अिसमें कोअी संदेह नहीं कि अिण्डोनेशियाके कअी हिस्सोंमें अरबी लिपि प्रचलित है। अिसका दर्जा रोमन-लिपिके बाद है। रोमन-लिपि ही जनताकी स्वाभाविक स्वीकृतिके परिणामस्वरूप— कानून द्वारा नहीं— राष्ट्रलिपि बन गयी है। मलायु*-भाषाका परिवर्तित रूप 'भाषा-अिण्डोनेशिया' भी अिसी प्रकारकी सर्व-सामान्य स्वीकृतिसे ही राष्ट्रभाषा मान्य हुअी है।

"रोमन और अरबी लिपिके बाद तीसरा दर्जा है जावाकी लिपिका, जो केवल जावा-द्वीप (यव-द्वीप)

---

* मलायाका अपना राष्ट्रीय नाम "मलायु" ही है। हम अुसीका व्यवहार क्यों न करें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ही चलती है। अिनके अतिरिक्त अिण्डोनेशियामें और भी कअी लिपियां हैं, किन्तु अुनका महत्त्व केवल स्थानीय है।

" 'भाषा-अिण्डोनेशिया' के अतिरिक्त अिण्डो-नेशियामें कोअी पचीस दूसरी भाषाओं और लगभग दो सौ पचास बोलियोंका व्यवहार होता है।"

(२) श्री तिवारीका दूसरा प्रश्न था— "क्या आपके देशमें किन्हीं अल्पसंख्यक लोगोंको राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रलिपिके अतिरिक्त दूसरी किसी भाषा अथवा लिपिके अपनानेकी स्वतंत्रता है?"

थाअीलैंडके दूतावासने लिखा— "सरकारी भाषा तो 'थाअी' ही है। हां, कुछ अल्पसंख्यक लोग अपने निजी व्यवहारमें किसी दूसरी भाषा वा बोलीका अुपयोग भी कर ले सकते हैं।"

चीनी जनतंत्रके दूतावासका अुत्तर अत्यंत संक्षिप्त है — "नहीं, चुनावका प्रश्न ही नहीं अुठता।"

बर्मी-संघके दूतावासका अुत्तर और भी संक्षिप्त था— "नहीं।"

अिण्डोनेशिया-जनतंत्रके दूतावासने अिस प्रश्नका भी विस्तारसे अुत्तर देनेकी कृपा की— "राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिके बारेमें किसी भी समुदायके साथ किसी प्रकारकी कोअी भी रियायत नहीं की गयी है। 'भाषा-अिण्डोनेशिया' का विकास अिसी शताब्दीके आरंभसे हुआ है। सुमात्राके पूर्वमें रहनेवाली, मलायु नसल द्वारा बोली जानेवाली 'मलायु' भाषा ही अिसका मूल है। ३००अी० से १३०० अी० तक यही मलायु भाषा ही सुमात्रास्थित श्रीविजय-राज्यकी राजभाषा रही है। यही भाषा अिण्डोनेशिया-द्वीप-समूह की व्यापारिक भाषा रही है— स्वदेशी तथा विदेशी सभी व्यापारियोंके काममें आनेवाली। आठवीं शता-ब्दीमें जब मलायु-द्वीपमें मलायु-राज्यकी स्थापना हुअी तो अुस समय अिस भाषाको बड़ा प्रोत्साहन मिला। व्यापारकी भाषा होनेसे मलायु-भाषा आसानी और सरलतासे देशके सभी हिस्सोंमें फैल गयी। अिस शताब्दीके आरंभमें जब अिण्डोनेशियाके राष्ट्रवादियोंने अपने आपको आधुनिक ढंगपर संघठित करना चाहा तो अुन्हें अनुभव हुआ कि समस्त अिण्डोनेशियामें समान रूपसे बोली जा सकनेवाली अेक भाषा होनी चाहिये। सभीकी सामान्य सम्मतिसे 'मलायु' को ही यह दर्जा दिया गया। अुस समय 'मलायु' का अितना प्रसार और विकास हो चुका था कि अिसने अनायास ही 'राष्ट्रभाषा' का रूप ग्रहण कर लिया। शनैः शनैः 'भाषा-अिण्डोनेशिया' के आन्दोलनने अितना जोर पकड़ा कि अेक अैसा पत्र निकालना पड़ा जिसे सभी श्रेष्ठ लेखकों और कवियोंने अपना सहयोग दिया।"

"जापानियोंके अधिकारके दिनोंमें पाश्चात्य भाषाओंके प्रयोगपर पाबन्दी लगा दी गयी थी। अुस समय सारे सरकारी काम-काजके लिअे "भाषा-अिण्डो-नेशिया" ही बरती जाती थी।

"सन् १९४५ में अिण्डोनेशिया 'जनतंत्र' घोषित किया गया तो अुस समय 'भाषा-अिण्डोनेशिया' ही राजभाषा घोषित की गयी और अुसे ही सभी शिक्षालयोंमें शिक्षाका माध्यम बना दिया गया। आगे चलकर पूर्व-अिण्डोनेशियाराज्य (जिसे हालैंडवालोंने जन्म दिया था) और दूसरे अैसे ही सारे राज्योंने भी 'भाषा-अिण्डोनेशिया' को सरकारी-भाषा और राज्य-भाषा स्वीकार कर लिया।

"हमारे यहाँ किसी भी देशज-लिपिके चुनावका प्रश्न अुपस्थित नहीं होता, क्योंकि कोअी देशज-लिपि प्रयोगमें लायी ही नहीं जाती।

"जहाँतक, रोमन-लिपिके चुनावकी बात है, यह अेकदम सहज स्वाभाविक-गतिसे हुआ है। जो कुछ कहा जा सकता है वह अितना ही है कि डच सरकार ने अरबी-लिपि, जावाकी लिपि तथा अन्य स्थानीय देशज-लिपियोंके अतिरिक्त रोमन लिपिको भी स्कूलोंमें घुसाया। तबसे सहज-स्वाभाविक ढंगसे रोमन-लिपिका व्यवहार बढ़ता रहा। आज वही हमारी 'राष्ट्रलिपि' बन गयी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) श्री तिवारीने अपने तीसरे प्रश्नमें दूसरे प्रश्नको ही और अधिक स्पष्ट तथा निश्चित रूपसे दोहराया। अुनका प्रश्न था कि क्या राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपिके मामलेमें मुसलमानोंको कोअी विशेष रियायत प्राप्त है?

थाअीलैंडके दूतावासका अुत्तर था— "थाअीलैंडके मुसलमान अपने स्कूल खोल सकते हैं, किन्तु अुनमें 'थाअी' भाषा अनिवार्य तौरपर पढ़ानी होगी।"

चीनी-जनतंत्रके दूतावासका अुत्तर फिर स्पष्ट और नपा-तुला है— "नहीं, वे भी अुसी अेक भाषाका प्रयोग करते हैं।"

वर्मी दूतावासकी ओरसे अुत्तर आया— "नहीं। बर्माके मुसलमान (जो वर्मी मुसलमान कहलाते हैं) अन्य बर्मियोंके साथ अेकरूप हो गये हैं। अुनका रहन-सहन, पोषाक, भोजन और भाषा सभी कुछ समान हैं। वे केवल 'धर्म' से मुसलमान हैं।"

अिण्डोनेशिया-जनतंत्रके दूतावासका अुत्तर था— "जो कुछ अूपर कहा गया है अुससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि किसी भी समुदायके लिअे अिस संबंधमें किसी भी प्रकारके संरक्षणके देने-लेनेका प्रश्न ही अुपस्थित नहीं होता।"

(४) श्री तिवारीका चौथा प्रश्न पारिभाषिक, तथा वैज्ञानिक शब्दावलीके बारेमें था।

थाअीलैंडके दूतावासका अुत्तर :—

"[क] पारिभाषिक तथा वैज्ञानिक शब्दावलीके लिअे हमारी भाषामें पर्यायवाची शब्द हैं। नयी संज्ञाओं, विचारों तथा वैज्ञानिक शब्दावलीके लिअे कोष्टकमें विदेशी शब्द भी दे दिये जाते हैं।"

"[ख] विदेशी शब्द अधिकतर अंग्रेजीसे लिअे जाते हैं। हमारी अपनी भाषाकी शब्दावली मुख्य रूपसे संस्कृत तथा पालीपर आश्रित है।"

चीनी जनतंत्रके दूतावासकी ओरसे लिखा मिला—

"[क] चीनी-सरकारने पारिभाषिक तथा वैज्ञानिक शब्दावलीके संबंधमें समरूपता (स्टैन्डर्डीअिजेशन) की नीति अपनायी है। तमाम पारिभाषिक तथा वैज्ञानिक शब्दोंका चीनीमें अनुवाद हो रहा है।"

"[ख] पारिभाषिक तथा वैज्ञानिक शब्दावलीको विदेशी भाषाओंसे लिया गया है, किन्तु अुन सबके चीनी अनुवाद कर लिये गये हैं।"

"[ग] अधिकांश पारिभाषिक तथा वैज्ञानिक शब्दोंका जर्मन और अंग्रेजीसे अनुवाद किया गया है।'

वर्मी दूतावासका अुत्तर था—

"मूल वर्मी भाषामें शब्दोंकी कमी नहीं है। अधिकांश पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्द आसानीसे मिल जाते हैं। जो नये शब्द हमारी भाषामें नहीं मिलते, अुनकी जगह हम अंग्रेजी और लैटिन ज़बानसे शब्द लेकर अुन्हें अपना लेते हैं, और अुस मूल विदेशी अुच्चारणके आधारपर नये वर्मी शब्दोंकी रचना कर लेते हैं।"

अिण्डोनेशिया-जनतंत्रके दूतावासने अिस चौथे प्रश्नका अुत्तर भी थोड़े विस्तारसे दिया—

"[क] जहाँतक पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दोंका प्रश्न है, हमारी नीति है कि जबतक हमारी अपनी भाषासे काम चल सके, हम विदेशी भाषाका स्वागत न करें।

"[ख] जब न हमारी किसी 'भाषा' से ही काम निकलता है, न किसी 'बोली' से और न किसी अैसे शब्दसे, जिसका अब प्रयोग चालू नहीं है, तभी हम विदेशी भाषाके शब्द अपनाते हैं। अिसलिये जहाँतक संभव हुआ है हमने अपनी भाषाके प्रचलित, कम-प्रचलित और अब अप्रचलित शब्दोंके ही आधारपर नये-नये पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्द बनाये हैं और बनाते जा रहे हैं।

"[ग] सामान्य रूपसे जर्मन, लैटिन, डच और अंग्रेजीसे ही हम अधिकांश पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्द ले रहे हैं। यह हो सकता है कि विज्ञान-विशेषके लिअे हम अेक भाषाकी अपेक्षा दूसरीका विशेष अुपयोग कर लें। जैसे चिकित्सा-शास्त्रके लिअे लातीनीका।

"हमने अपनी भाषाके ढांचेके अनुसार विदेशी पारिभाषिक शब्दोंमें भी यथोचित परिवर्तन कर लिअे हैं।"

संपूर्ण-प्रभुत्व-सम्पन्न लोक-तंत्रात्मक भारतीय गणराज्यके सम्मुख भी भाषा, लिपि तथा पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दावलीकी अनेक समस्याअें हैं। पड़ौसी देशोंके अनुभव और अुनके निर्णय हमारे सामने हैं। क्या हम अनसे लाभ अुठायेंगे?

—आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[**निवेदन**— राष्ट्रभाषा प्रचारकों और केन्द्र व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि वे कृपया "राष्ट्रभाषा" में प्रकाशनार्थ अपने केन्द्रके वर्ग, समारोह आदि राष्ट्र-भाषा-कार्यका विवरण, समाचार आदि **प्रान्तीय संचालकके** द्वारा भेजें। —व्यवस्थापक]

महाराष्ट्र

पुणें—"राष्ट्रभाषा सेवा मन्दिर"—अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति पं० श्री जयचन्द्र विद्यालंकार दि. ४-८-५१ को "सेवा मन्दिर" में पधारे। कुल १०० के करीब विद्यार्थियोंके सामने आपने "राष्ट्रभाषा" पढ़नेके अुद्देश्यको समझाते हुअे सुन्दर वक्तव्य दिया।

"राष्ट्रभाषा सेवा मन्दिर" का तृतीय स्नेह-सम्मेलन :—

दि. १२ अगस्तको यहाँके तिलक-स्मारक-मन्दिरमें श्री विनायकरावजी आपटेके सभापतित्वमें "राष्ट्रभाषा-सेवा मन्दिर" पुणेंका तीसरा वार्षिक स्नेह-सम्मेलन सम्पन्न हुआ। विद्यार्थी तथा शिक्षक कुल मिलाकर करीब ४०० भाअी-बहन अुपस्थित थे। स्थानिक हिन्दी प्रचार संस्थाओंके प्रमुख भी पधारे थे। प्रातःकाल ८ बजे अीश-स्तवन और स्वागत-गानसे समारोहका श्रीगणेश हुआ। विद्यार्थी-स्नेही संघके अध्यक्ष श्री डॉ० बर्वेजीने सभापतिका परिचय देनेके बाद श्री. ह. कृ० कुलकर्णीजीने "सेवा मन्दिर" का अितिवृत्त बताया। अुसके पश्चात् सर्वश्री वडोदकर, गोखले, डॉ० गोखले, जोगलेकर, देव, बावडेकर, लेले, ठाकुर आदि विद्यार्थियों और सर्वश्री पावडे, कुलकर्णी, अरगडे आदि शिक्षकोंके "सेवामन्दिर" के प्रति आत्मीयता और स्नेह-निदर्शक भाषण हुअे। तदनन्तर प्रा० श्री चितलेजीने अपने भाषणमें कहा कि जिस प्रकार "चर्चा-मंडल" हुआ करता है अुसी प्रकार अेक "अनुवाद-मंडल" स्थापित करके अुसके द्वारा अनुवादका कार्य शुरू होना आवश्यक है। पं०श्री ग. र. वैशंपायनजीने "सेवामन्दिर" के कार्यके प्रति संतोष व्यक्त करते हुअे अुसके अुत्कर्षकी अिच्छा प्रकट की। आपने अपने भाषणमें कहा—सेवा मन्दिरका सेवाका अुद्देश्य बड़ा पवित्र अुद्देश्य है। अिस अुद्देश्यको सफल बनानेके लिअे अहंकारका त्याग करना आवश्यक है। दूसरी आवश्यकता "राष्ट्रभाषा" के विकासके लिये जो रुकावट अंग्रेजी द्वारा हो रही है अुसे हटाने की है। हम अंग्रेजीके स्थानपर हिन्दीको नहीं लाद रहे हैं। अंग्रेजी पहलेसे ही विदेशी भाषा थी; अुसका प्रभाव हमपर शासकोंने अैसा डाला था कि हमारे विचार-प्रकटीकरणके सभी साधन भी अंग्रेजी बना दिये गये। हिन्दी अपने देशकी भाषा है। अंग्रेजी राजशासनकी सुविधाके लिये थी। हिन्दी जनताकी सुविधाके लिअे है। मात्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाको ठीक जाननेके लिये भी सहायक रूपमें हिन्दीकी आवश्यकता है। अंग्रेजीकी मैं निंदा नहीं करता; परन्तु अंग्रेजी भाषामें विचार करनेमें जबतक हम प्रतिष्ठा मानते हैं तबतक वह निंदनीय ही है। श्री प्रा० भुपटकरजीने संस्थाओंको विधानकी आवश्यकता है या नहीं अिस प्रश्नपर प्रकाश डालते हुअे कहा कि मैं केवल अेक विधान मानता हूँ—कार्य करते रहना—!

श्री अध्यक्ष महोदयका वक्तव्य :—आपने सम्मेलनके अुद्देश्यको स्पष्ट करते हुअे कहा—"खेदकी बात है कि आजकल अधिकांश संस्थाओंको बाजारू स्वरूप प्राप्त है। संस्थाओंके शरीर हैं परन्तु आत्मा नहीं है। देशमें जो स्नेहभाव, आत्मभाव आवश्यक है वह कहीं नजर नहीं आता है। अूपरी तौरपर हम मीठी-मीठी बातें करते हैं, परन्तु मनमें सद्भावनाका अभाव रहता है। अच्छी बातोंकी तरफ हमारा ध्यान नहीं है। सम्मेलन, समारोह, सभीके मूलमें हममें यह भावना अुत्पन्न होना आवश्यक है कि हम यह सब राष्ट्रके लिये कर रहे हैं। हमारा प्रत्येक कार्य राष्ट्रके अुद्धारके लिये होना चाहिये।

अिसके पश्चात विद्यार्थियोंको पुरस्कार प्रदान किये गये। अिस अवसरपर श्री स. रा. केणीजीने विद्यार्थियोंको लक्ष्य करते हुअे कहा—"आज आप लोग प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार पा रहे हैं, खुशीकी बात है। ये प्रमाणपत्र अन्य प्रमाणपत्रोंसे कुछ विशेषता रखते हैं। ये राष्ट्रभाषाके प्रमाणपत्र हैं। अिनका मूल्य जानकर आपको आगे अपने प्रचार कार्यमें संलग्न होना है। राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाअें प्रमाणपत्र पानेके अुद्देश्यसे नहीं दी जा रही हैं। अुनका अुद्देश्य है—"अेक हृदय हो भारत जननी"—परस्पर विद्वेष, घृणा आदिको भूलकर हमें अेक होना है; अेक होकर ही आगे बढ़ना है। हमारे आचारमें, विचारमें, हमारे प्रत्येक काममें हमें यह भावना रखनी चाहिये कि हम अपने लिये नहीं दूसरोंके लिये हैं।

दूसरे पहर ठीक ३ बजे मनरंजनादिका कार्यक्रम आरम्भ हुआ। श्री स. रा. केणीजीने भीमपलाससे श्रीगणेश किया। अनन्तर सर्वश्री देवधर, शालिग्राम, रेलेकर, धामणकर, तिलक, श्री गोंदेकर, घाणेकर, नायडू, चौथाअी, प्रेम आनन्द, चान्दोरकर, माल-वदकर, परांजपे, चितले, सप्रे आदि आजी-माजी विद्यार्थियोंके गायन, वादन, नक्ल, नाट्यछटा, नाट्य-प्रवेश, नृत्य आदि विविध कार्यक्रम हुअे। शामको ठीक ६। बजे वन्देमातरम् गीत हुआ। अनन्तर "सेवा-मन्दिर" के तुलसी-बाग हालमें अुपस्थितोंके अल्पाहारके बाद समारोह समाप्त हुआ।

पुणें :—महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणेंकी ओरसे दि० ३-८-५१ को हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके सभापति श्री पं० जयचन्द्र विद्यालंकारकी अध्यक्षतामें नू० म० वि० हाअीस्कूलके सभागृहमें कोविद-अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको अुपाधि-पत्र वितरित किये गये। पं० जयचन्द्रजीका "भारतीय लिपिके विकासका अितिहास" विषयपर लगभग डेढ़ घंटा भाषण हुआ। अिसी अवसरपर प्रान्तीय समितिकी ओरसे अप्रैल १९५१ की परीक्षाओंमें प्रान्तमें सर्वप्रथम सुयश प्राप्त परीक्षार्थियोंको पुरस्कृत किया गया।

श्री प्रा० चितलेजीने समितिकी ओरसे अध्यक्ष श्री पं० जयचन्द्र विद्यालंकारजीको पुष्पहार अर्पण किया तथा अध्यक्षजी अेवम् अुपस्थित सज्जनोंको हार्दिक धन्यवाद दिये। वन्देमातरम्के बाद समारोह समाप्त हुआ।

महिलाश्रम हाअीस्कूल हिंगणें

हिंगणें—(पुणें) दि० ९-८-५१ गुरुवारको प्रा० श्री प्र० रा० भुपटकरजीकी अध्यक्षतामें "तुलसी-जयन्ती" मनायी गयी।

श्री भुपटकरजीने तुलसीदासजीकी प्रतिमाको पुष्पहार समर्पण किया और अपने भाषणमें, तुलसी-दासजीने श्रीकृष्णकी अपेक्षा श्रीरामचन्द्र प्रभुको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना नायक क्यों चुना, अिसका सरल भाषामें सुन्दर विवेचन किया।

अिसी अवसरपर अप्रैल ५१ की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। प्रथम श्रेणीमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको पुरस्कार दिया गया। कें. व्य. श्री पत्केजीके आभार माननेपर कार्यक्रम समाप्त हुआ।

कोल्हापुर

कोल्हापुर राष्ट्रभाषा मन्दिर—

अिस संस्थाकी स्थापना १५ जून १९५० को श्री माधवराव भोंसले, श्री अप्पासाहेब निंबालकर, श्री मेघश्याम लाटकर, श्री वसन्तराव काजवे आदिने की थी। पहली बार सितम्बर १९५० की परीक्षाओंमें ५१ परीक्षार्थी बिठानेका संकल्प था। किन्तु कार्य-कर्ताओंके अुत्साहके कारण यह संख्या ३०५ तक पहुँची। अिनमें केवल प्रारंभिकके १५१ और "बात-चीत" के २० परीक्षार्थी थे। अप्रैल ५१ की परीक्षाओंमें यह संख्या ३६१ तक बढ़ गयी। यह संख्या कोल्हापुर केन्द्रकी कुल संख्याके चतुर्थांशसे अधिक थी। सितम्बर ५१ की परीक्षाओंमें अिस विद्यामन्दिरकी ओरसे २२९ परीक्षार्थी सम्मिलित हो रहे हैं।

श्री माधवराव भोंसले, श्री मेघश्याम लाटकर, श्री अ० रा० निंबालकर, श्री अमृतराव देसाअी, श्री ल० द० शिरगाँवकर, श्री व० रा० काजवे, श्री आ० गो० पेडणेकर आदि कार्यकर्ताओंके परिश्रमसे विद्या-मन्दिर आगे बढ़ रहा है।

प्रचार-कार्यको स्थायी रूप देनेकी दृष्टिसे १५ अगस्त ५१ को कोल्हापुर राष्ट्रभाषा सेवा समितिकी स्थापना की गयी है। केवल अेक वर्षकी अवधिमें "विद्यामन्दिर" और "राष्ट्रभाषा सेवा समिति" ने जो यश प्राप्त किया है, अुसके लिये अिन संस्थाओंके कार्यकर्ता-गण धन्यवादके पात्र हैं।

कोल्हापुर—दि० ९ अगस्त ५१ को कोल्हापुर राष्ट्रभाषा विद्यामन्दिर और राष्ट्रभाषा प्रचारकोंकी ओरसे श्री शशीशेखर कुलकर्णी अेम्. अे. बी. टी., अुपमुख्याध्यापक विद्यापीठ हाअीस्कूल कोल्हापुर, की अध्यक्षतामें "तुलसी जयन्ती" मनायी गयी। श्री वि० द० घोटणेजी, श्री मुतवल्लजी, श्री द० ह० कुलकर्णीजी, श्री माधवराव भोंसलेजी आदि सज्जनोंके "तुलसी साहित्य" पर भाषण हुअे।

पूर्व खानदेश—

सभापति पं० जयचन्द्र विद्यालंकारजीका पूर्व खानदेश जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे जलगाँव और नसिराबादमें सत्कार—

जलगाँव—दि० ८ अगस्त १९५१ को सबेरे ६-२० को नागपुर अेक्सप्रेससे पं० जयचन्द्रजीका आगमन हुआ। पू० खा० जिला समितिके अध्यक्ष श्री ह० शं० मेहता, मन्त्री श्री रा० वा० पाटील, न्यू अिं. स्कूलके प्रिन्सिपल श्री मनुभाअी कल्याणजी देसाअी, मुलजी जेठा कॉलेजके हिन्दी विभागके प्रा० न० चिं० जोगलेकरजी तथा अन्य दस-बारह कार्यकर्ताओंने पं० जयचन्द्रजीका जलगाँव स्टेशनपर पुष्प-मालाओंसे स्वागत किया। सबेरे ९ बजे जिला समितिके कार्यालयमें प्रचारकोंके साथ चर्चा और परस्पर परिचयका कार्यक्रम रहा। दोपहरको ३ बजे मुलजी जेठा कॉलेजमें वहाँके प्रिन्सिपल श्री पोतनीसजीकी अध्यक्षतामें "साहित्य-मंडल" के तत्वावधानमें "राष्ट्रभाषा और अन्य प्रान्तीय भाषाओंका सम्बन्ध" अिस विषयपर पं० जयचन्द्रजीका भाषण हुआ। अिसके बाद दोपहर ५ बजे न्यू अिंग्लिश स्कूलमें प्रिं० देसाअीजीकी अध्य-क्षतामें हायस्कूलके छात्रोंकी सभामें आपने भाषण दिया।

शामको ६ बजे नसिराबादके चित्रमन्दिरमें गाँवकी लगभग चार हजार जनता द्वारा पं० जयचन्द्रजीका स्वागत हुआ। यहाँपर भी पं० जयचन्द्रजीका भाषण हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रातके ६ बजे नगर-भवनमें जलगाँवकी जनताके समक्ष श्री मेहताजीकी अध्यक्षतामें पं० जयचन्द्रजीका व्याख्यान हुआ।

जलगाँव— स्थानीय मुलजी जेठा कॉलेजमें श्री श्रीनिवासजी मुंदडाकी अध्यक्षतामें "तुलसी जयन्ती" और "प्रेमचन्द स्मृति दिवस" मनाया गया।

चान्दवड— श्री के० ह० आवडजीकी अध्यक्षतामें दि० २२-७-५१ को केन्द्रका प्रमाण-पत्र-समारोह मनाया गया। श्री भा० अ० चान्दोरकरजीने प्रमाण-पत्र बाँटे। श्री ग० क० ओस्तवालजी और श्री रमणलाल कापडीयाजीके प्रयत्नोंसे केन्द्रका प्रचार-कार्य सुचारु चल रहा है।

महाराष्ट्रके कार्यकर्ताओंसे दो निवेदन !

१. राष्ट्रभाषाके प्रमाणित प्रचारकों! आपमेंसे अनेक महानुभाव समय-समयपर भारतीय या विदेशी, ज्ञान-विज्ञानकी व भाषा या कलाकी परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण होकर अपनी योग्यता बढ़ाते रहते हैं। हमारा अनुरोध है कि अैसे प्रचारक अपनी सफलताओंकी सूचना हम तक भेजनेकी कृपा अवश्य करें।

२. अधीक्षणके प्रयोजनको समझनेमें हमारे कुछ केन्द्र व्यवस्थापकों और प्रमाणित प्रचारकोंको भ्रम हुआ है। वे यह न भूलें कि अधीक्षण केवल बुराअियोंका ही नहीं अच्छाअियोंका भी होता है। अधीक्षणसे, हम चाहते हैं कि हम अपने कार्यका अन्तदर्शन भली भाँति करते रहें, और अपने दोषोंका शक्तिभर परिमार्जन करते रहकर अुन्नतिकर सकें। पवित्रताकी रक्षा और वृद्धि ही जिस अधीक्षणका अुद्देश्य है—अुसका तो खूब स्वागत ही करना चाहिये।

—पं. मु. डांगरे, संचालक, महाराष्ट्र
रा. भा. प्र. समिति, पूना

गुजरात

वाघोडियाः— केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव श्री. सीताराम अेन. अुपाध्यायकी अध्यक्षतामें मनाया गया। समारम्भमें तालुका कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष श्री मणिलालमंगली, नगर पालिकाके अध्यक्ष श्री. मंगलदास पोला और अग्रणी नागरिक अुपस्थित थे।

अिस अवसरपर बड़ौदा जिला केन्द्र निरीक्षक श्री. सोमाभाअी जोशीने राष्ट्रभाषाके महत्वपर भाषण दिया।

जामनगरः— स्थानीय नगर पालिकाके अध्यक्ष श्री. फूलचन्दभाअी तंबोलीकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरण करनेका समारोह सम्पन्न हुआ। अिस अवसरपर स्थानीय नागरिक काफी संख्यामें अुपस्थित थे।

प्रारम्भमें स्थानीय प्रचार समितिके मंत्रीने केन्द्रकी रिपोर्ट पढ़ सुनाअी। बादमें अध्यक्ष महोदयके कर-कमलोंसे प्रमाण-पत्र और पारितोषिक प्रदान किये गये। अध्यक्ष महोदयने समितिके कार्यकी प्रशंसा की और राष्ट्रभाषा प्रचारके लिअे २५१ रु० अपनी ओरसे प्रदान करनेकी घोषणा की।

अिस अवसरपर सौराष्ट्र सरकारके शिक्षा मंत्री श्री. घनश्यामभाअी, गृह प्रधान श्री रसिकलाल परीख, विद्याधिकारी श्री रमणलालजी याज्ञिक, प्रान्तीय संचालक श्री. जेठालाल जोशी अित्यादिके शुभ संदेश आये थे।

लीम्बडीः— केन्द्रका प्रमाण पत्र वितरणोत्सव पंजाब नेशनल बैंकके मैनेजर श्री. रघुकुल भूषणजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर सौराष्ट्रके प्रसिद्ध राष्ट्रभाषा—प्रचारक श्री जयेन्द्रभाअी त्रिवेदीने राष्ट्रभाषाके महत्त्व और प्रमाण-पत्रकी सच्ची सार्थकता पर भाषण दिया।

केन्द्रकी ओरसे राष्ट्रभाषा प्रचारके सहयोगी तथा सर्वप्रथम अुत्तीर्ण भाअी व बहनोंको पुस्तकोंके रूपमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार दिया गया। श्री रमणलाल शाहकी ओरसे परिचय परीक्षामें सर्वप्रथम अुत्तीर्ण परीक्षार्थीको ५) रु० दिये गये।

आगामी सितम्बर' ५१ में कोविद परीक्षामें सर्वप्रथम आनेवाले परीक्षार्थीको निम्न प्रकार पुरस्कार देनेकी घोषणा की गयी।

(१) श्री रघुकुलभूषणजी रु. ११)

(२) श्री हीरालाल पंडित राजकोट रु. ५)

विजापुरः— केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव विजापुर तहसील कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष श्री. त्रिकमलालभाअी पंचालकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर श्री. रामचन्द्र ज. अमीन अेम. अेल. अे. (बम्बअी धारा सभा) भी अुपस्थित थे। परीक्षार्थियोंको लगभग ५१) रु. की पुस्तकें पुरस्कारके रूपमें दी गयीं।

झगड़ियाः— केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव स्थानीय राष्ट्रभाषा केन्द्र दीवान धनजीशाह हाअीस्कूलमें तालुकाधीश श्री नाथूभाअी देसाअीके सभापतित्वमें सम्पन्न हुआ।

अिस अवसरपर प्रा. शिक्षाधिकारी भरूच विभाग व जिला केन्द्र निरीक्षक श्री दुर्लभजी नायकने हिन्दीके महत्त्वके बारेमें भाषण दिया।

लाठीः— अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गोहीलवाड विभागके शालाधिकारी श्री. छेलभाअी ओझाकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अहमदाबादः— स्थानीय दरियापुर राष्ट्रभाषा प्रचार वर्गमें गत् ता. २२ जुलाअीको भारतीय संसदके सदस्य व गुजरातके अग्रणी हरिजन कार्यकर्ता श्री मूलदास वैश्यका वार्तालाप रखा गया था। विषय था— "अंत्यज समस्या और पार्लमेंट पद्धति"।

गत् ता. २४ जुलाअीको शामके ६॥ बजे अुक्त वर्गमें "राष्ट्रभाषा द्वारा राष्ट्रनिर्माण" विषयपर आचार्य कृपलानीजीका प्रवचन हुआ। आपने कहा कि—" राष्ट्रभाषा प्रान्तीयवादको नाबूद करेगी और राष्ट्रभाषाके द्वारा ही राष्ट्रीय अेकता सिद्ध होगी।"

स्थानीय पाडापोल युवक-मंडल-संचालित पुस्तकालयमें गत् ता. ४ अगस्तको ३॥ बजे गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री श्री जेठालाल जी जोशीके हाथों "राष्ट्रभाषा शिक्षण केन्द्र" का अुद्घाटन हुआ।

सावरकुंडलाः— गत ता. १६ जुलाअीको केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गोहीलवाड़ विभागके शालाधिकारी श्री. छेलभाअी ओझाकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अध्यक्ष महोदयने राष्ट्रभाषाके आंदोलन पर अपने भाषण द्वारा प्रकाश डाला।

धोलकाः— गत् ता. ३१ जुलाअीको स्थानीय हाअीस्कूल कमेटीके अुपाध्यक्ष श्री नटवरलाल शाहके सभापतित्वमें राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र अेवं पारितोषिक वितरण करनेका समारोह मनाया गया।

वगसराः— प्रमाण-पत्र वितरण समारोह गत् ता. २ अगस्तको सौराष्ट्र राज्यके प्रधान मन्त्री श्री. ढेबरभाअीके हाथों सम्पन्न हुआ।

अध्यक्ष महोदयने काफी संख्यामें अुपस्थित जनताको राष्ट्रभाषाका महत्त्व समझाया। बादमें केन्द्र की प्रगति देखकर आपने संतोष प्रकट किया।

जामनगरः— गत् ता. ५ अगस्तको स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें समितिके सदस्य और कोविदके परीक्षार्थियोंका पर्यटन रक्खा गया था।

पर्यटनमें करीब ५६ भाअी-बहनोंकी अुपस्थित थी। पर्यटन सफल रहा।

वल्लभीपुरः—केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत् ता. ४ अगस्तके दिन सौराष्ट्र राज्यके विद्याधिकारी श्री. रमणलालजी याज्ञिक साहबके शुभ हाथों सम्पन्न हुआ।

अध्यक्ष महोदयने अपने प्रवचनमें काफी संख्या में अुपस्थित जनतासे जल्दीसे जल्दी हिन्दी सीख लेनेके लिअे अनुरोध किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरियापुर रा. भा. प्रचार वर्गमें गत् ता. १५ अगस्तको मध्यभारतके भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री तथा प्रान्तीय गान्धी स्मारक निधिके मन्त्री श्री. काशिनाथजी त्रिवेदीका वार्तालाप रखा गया था।

बरवाला (धेलाशाह):— विगत् १५ अगस्त को केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव श्री. चन्द्रकान्त भूताकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ता श्री डेलीवालाने राष्ट्रभाषाकी अुपयोगितापर भाषण किया।

सूरतः— गत् ता. १८ अगस्तको शामको ५॥ बजे राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल सूरत द्वारा आयोजित स्व. जयन्तीलाल बुकसेलर व्याख्यान मालाका द्वितीय व्याख्यान राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाके प्रधान मंत्री श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायनने दिया। विषय था- हिन्दीमें बौद्ध साहित्य।

साणन्दः— केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री-संचालक श्री. जेठालाल जोशीकी अध्यक्षतामें गत् ता. १४ अगस्तको मनाया गया। अिस अवसरपर स्थानीय नगर पालिकाके अध्यक्ष तथा अन्य नागरिक काफी संख्यामें अुपस्थित थे।

अहमदाबादः— स्थानीय राष्ट्रीय आदर्श मंडलकी ओरसे गत् ता. १५ अगस्तको 'स्वाधीनता दिन' के अुपलक्ष्यमें प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कार वितरण करनेका समारोह श्री रणधीर अुपाध्यायकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर मनोरंजन कार्यक्रम भी रखा गया था।

स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी ओरसे ता. १५ अगस्तको कार्यालयमें स्थानीय प्रचारकोंका अेक स्नेह-सम्मेलन शामको ५ बजे रखा गया था। अिस अवसरपर बहनोंने राष्ट्रीय गीत गाये। सम्मेलन सफल रहा।

स्थानीय मांडवीकी पोल राष्ट्रभाषा वर्गमें वर्गके राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण-परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव स्वामी श्री. परमानन्दजी महामंडलेश्वरकी अध्यक्षतामें गत् ता. १५ अगस्तको मनाया गया।

गत् ता. १६ अगस्तको सुबहके ६ बजे गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके कार्यालयमें समिति की ओरसे प्रकाशित होनेवाली अर्धवार्षिक पत्रिका "राष्ट्रवीणा" के संपादक मंडलकी अेक बैठक श्री मोहनलालजी भट्टकी अध्यक्षतामें हुअी। पश्चात् दस बजे जिला केन्द्र निरीक्षकोंकी अेक बैठक हुअी।

मध्यान्हके ३॥ बजे गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके कार्य समितिकी और ४॥ बजे व्यवस्थापिका समितिकी अेक बैठक श्री. शारदाबहन मेहता की अध्यक्षतामें हुअी। बैठकमें कअी महत्त्वपूर्ण निर्णय किये गये। सभामें भारत सरकार द्वारा निर्मित हिन्दी शिक्षा समितिका हार्दिक सत्कार करते हुअे अेक प्रस्ताव पास किया गया।

बम्बअी

पाँचवाँ पदवीदान समारोह—

बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाका पाँचवाँ पदवीदान समारोह बुधवार ता० १५ अगस्त (स्वातंत्र्य दिवस) को स्थानीय सेंट झेवीयर कॉलेजके सभा-भवनमें श्रीमती धनवन्ती रामरावकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाके प्रधान मंत्री श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायनने कोविद तथा रत्न अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको दीक्षान्त भाषण दिया। आरंभमें सभाके अध्यक्ष श्री गोविंदलालजीने लेडी रामराव तथा श्री आनन्दजीका स्वागत किया। सभाके मंत्री श्री० कांतिलाल जोशीने सभाके कार्यका संक्षेपमें विवरण देते हुअे बताया कि अिस समय करीब १७५ हिन्दीके शिक्षा केन्द्र बम्बअी तथा अुसके अुपनगरोंमें चल रहे हैं। प्रति वर्ष बम्बअीसे करीब २२,००० परीक्षार्थी वर्धा समितिकी विभिन्न परीक्षाओंमें सम्मिलित होते हैं। अिस व्यापक कार्यको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेमें करीब ४०० प्रचारक भाअी-बहन सेवा-भावसे लगे हुअे हैं।

श्रीमती धनवंती रामरावने अपने अध्यक्षीय भाषणमें सभाके बढ़ते हुअे कार्यपर प्रसन्नता व्यक्त की तथा राष्ट्रकी अेकताके लिये हिन्दीकी आवश्यकता अेवम् अिसके महत्वपर प्रकाश डाला। अुन्होंने यह भी बताया कि हमारे देशमें हिन्दी ही केवल अेक अैसी भाषा है जो अन्य प्रादेशिक भाषाओंसे निकट सम्पर्कमें है अिसलिये हिन्दी ही आसानीसे राष्ट्रभाषाका पद ग्रहण कर सकती है।

श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायनने बम्बअीने राष्ट्रभाषाके प्रचारमें जो प्रगति की है, अुसपर प्रसन्नता व्यक्त करते हुअे कहा कि अिस प्रगतिपर संतोष मानना अनुचित होगा क्योंकि हमारा अुद्देश्य तो सभीको राष्ट्रभाषा हिन्दीका ज्ञान करा देनेका है। यह कार्य बहुत ही बड़ा है अिसलिये सभी देश-हित-चिन्तकोंका कर्तव्य हो जाता है कि वे हिन्दीके प्रचारको बल दें और अिसके द्वारा देशमें सुदृढ़ अेकता स्थापित करें। नवीन पदवीधारियोंको अुद्बोधित करते हुअे अुन्होंने कहा कि हिन्दी प्रचारका कार्य दियेसे दिया जलाने जैसा है। आज जो राष्ट्रभाषा कोविद अेवम् रत्नकी पदवियाँ प्राप्त कर रहे हैं वे अपने राष्ट्रभाषाके ज्ञानको दूसरोंको दें। अिसी तरह यह कार्य व्यापक हो सकेगा।

विधानके हिन्दी संबंधी निर्णयकी चर्चा करते हुअे आपने बताया कि यदि जनता अभीसे जागरूक होकर हमारी राष्ट्रीय सरकारको बाध्य नहीं करेगी तो संभव है कि जिस अुदासीनतासे आज केन्द्रीय अेवम् प्रादेशिक सरकारों द्वारा हिन्दीकी प्रतिष्ठा करनेके सम्बन्धमें कार्य हो रहा है अुससे १५ वर्षकी अवधि भी बढ़ा दी जाय।

अिस समारोहके अवसरपर गान्धीजयन्ती (अक्टूबर '५०) के अुपलक्ष्यमें आयोजित निबन्ध तथा वाक्-स्पर्धाके पुरस्कार विजेताओंको अेवम् राष्ट्रभाषा रत्नमें प्रथम तथा कोविदमें प्रथम-द्वितीय आनेवाले परीक्षार्थियोंको सभाकी ओरसे पुरस्कार दिये गये।

हिन्दी महा-विद्यालयमें

तारीख २ अगस्तकी संध्याको हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, (प्रयाग) के सभापति श्री जयचंद्र विद्यालंकारका भाषण हुआ। अुन्होंने अपने भाषणमें हिन्दी क्षेत्रमें बोली जानेवाली विभिन्न बोलियोंका ज़िक्र किया और हिन्दी साहित्यका अितिहास लिखनेवालोंसे अनुरोध किया कि वे भारतीय अितिहासकी अुपलब्ध सामग्रीकी छानबीन कर अुससे भरपूर सहायता लें।

शुक्रवार तारीख १७ अगस्तको रा. प्र. स. वर्धाके प्रधान मंत्री श्री आनन्दजीने विद्यालयके वर्गोंका निरीक्षण किया तथा अपने अभिभाषणमें जातक कथाओं पर प्रकाश डाला। अिसके अतिरिक्त नागरी लिपि तथा नागरी वर्णमालाके भेदको समझाया और बताया कि नागरी वर्णमाला अुर्दूके अतिरिक्त सभी भारतीय भाषाओंमें प्रचलित है। विदेशोंमें भी तिब्बत सीलोन, बर्मा, श्याम आदिमें यही वर्णमाला चलती है। नागरी लिपिमें मुद्रण अेवं टंक-लेखन (टायपिंग) कलाकी आवश्यकता को लक्ष्यमें रख कर आवश्यक संशोधन किये जाने चाहिये।

सोमवार ता० २० अगस्तकी शामको पंडित सीताराम चतुर्वेदी (परीक्षा-मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग) ने विद्यालयके विद्यार्थियोंके समक्ष हिन्दी नाटक साहित्यके विषयपर— अेक ओजपूर्ण विश्लेषणात्मक भाषण दिया। आपने अपने भाषणमें यह भी बताया कि हिन्दी नाटकोंपर अंग्रेजी नाटकोंकी शैलीका प्रभाव किस प्रकार पड़ा है।

प्रेमचंद स्मृति दिवस

राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, दादर तथा हिन्दी प्रचार कार्यालय माटुंगाकी ओरसे रविवार ता० १२ अगस्तको प्रेमचंद स्मृति दिवस मनाया गया। अिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसरपर प्रेमचंदजीके जीवन चरित्र, अुनके व्यक्तित्व, अुनके अुपन्यास तथा कहानियाँ आदिकी विशेषताओं की चर्चा की गयी। अिसमें— श्री माधवराव भीडे, अुमाकान्त नारिंगे, महाजन कुन्टे, शरदकुमार रांगणेकर, प्रा. पराड़कर तथा वि. कृ. टेंबेने भाग लिया। श्री. बी. टी. परमारने अध्यक्ष-स्थान ग्रहण किया था।

प्रमाण-पत्र वितरण— घाटकोपर केन्द्र

घाटकोपर केन्द्रके गत अप्रैल '५१ परीक्षाके प्रमाण-पत्रोंका वितरण रविवार ता० १६ अगस्तको रामजी आसर विद्यालयमें श्री. खानवजीरकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर बंबअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके मन्त्री, श्री. कांतिलाल जोशीने अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके समक्ष भाषण दिया अेवं प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कारोंका वितरण किया। श्री जोशीजीने अपने भाषणमें राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचार आन्दोलनका महत्व बताया तथा राष्ट्रके संगठनके लिये अेक राष्ट्रभाषा होनेकी आवश्यकतापर जोर दिया। घाटकोपर केन्द्रके संचालक श्री. रविशंकर याज्ञिकने केन्द्रका कार्य विवरण पढ़ा।

विदेशोंमें अंग्रेजीसे काम नहीं चलता!

शिक्षा मन्त्री मौलाना आजादका अनुभव

नयी दिल्ली—भारत सरकारके शिक्षा-मन्त्री मौलाना अबुलकलाम आजादने अपनी योरप यात्राके अनुभव बताते हुअे हालहीमें अेक प्रेस कांफ्रेंसमें कहा है कि मैं पहले समझता था कि भारतके बाहर विदेशोंमें सब जगह अंग्रेजी चलती होगी या कमसे कम अंग्रेजीसे काम तो चल जाता होगा। पर रोम विश्वविद्यालयमें, जहाँ मेरे भाषणका अनुवाद करनेके लिये अंग्रेजी ज्ञाता प्रोफेसरोंको नियुक्त किया गया था समयसे अुनके न आनेके कारण गाड़ी बिलकुल रुक ही गअी। वहाँ और कोअी अंग्रेजी नहीं जानता था। अेक प्रोफेसर अरबी जानते थे जिससे वे मेरे दुभाषिये बन गये और किसी प्रकार गाड़ी आगे चल निकली। आपने बताया कि रोमके होटलोंमें भी अंग्रेजीसे काम नहीं चल सका।

अंग्रेजीकी शिक्षा कष्टसाध्य और महंगी!

मद्रासके मुख्य मंत्री द्वारा हिन्दी सीखनेकी सलाह

नयी दिल्ली—मद्रासके मुख्य मन्त्री श्री पी. अेस. कुमारस्वामी राजाने हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार-सभाके अुपाधि-वितरण समारोहके अवसरपर दीक्षान्त भाषण देते हुअे अन्तर्प्रान्तीय व्यवहारोंको सुगमतासे संचालित करनेके लिये तथा सर्वसाधारण राष्ट्रीय प्रश्नोंपर परस्पर मिलने और विचारोंका आदान-प्रदान करनेके लिये हिंदीको आवश्यक बताते हुअे कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति और महत्वको देखते हुअे अंग्रेजीकी शिक्षा पूर्णतः बन्द कर देना अुचित न हो तो भी अब अुसे विदेशी शासनकालमें प्राप्त सार्वभौमत्व नहीं प्राप्त हो सकता। वह भारतीय भाषाओंकी अपेक्षा व्याकरण, अुच्चारण, ध्वनि और भाषाशास्त्रकी विभिन्नताके कारण अेकदम अभारतीय और विदेशी प्रभावोंकी प्रतीक है। अपने अिसी विदेशी और अजनबीपनके कारण भारतमें वह सर्वमान्य भाषा न बन सकी। अेक शताब्दीसे भी अधिक समय तक अंग्रेजी सरकारी कामकाजकी भाषा रहते हुअे भी अुसका क्षेत्र केवल मुट्ठी भर पढ़ी लिखी जनता तक ही सीमित रहा।

आपने आगे कहा कि अंग्रेजीपर कामचलाअू व्यावहारिक अधिकार प्राप्त करनेके लिये वर्षोंके परिश्रमकी आवश्यकता है और अुसका पाठ्यक्रम यहाँकी साधारण जनताके लिये अधिक महंगा और कष्टसाध्य सिद्ध हो चुका है। यदि कोअी भारतीय भाषा देशकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वमान्य भाषा बने तो फिर अंग्रेजीकी तरह कठिनाअियोंका सामना न करना पड़ेगा। भारतीय भाषाअें अेक दूसरेके अधिक निकट हैं अतः अुन्हें सरलतासे सीखा जा सकता है और देशकी सर्वमान्य भाषा वही हो सकती है जो देश भरमें सबसे अधिक समझी जा सकती हो।

आपने अन्तमें कहा कि आज अिस प्रश्नपर विचार करनेकी आवश्यकता नहीं कि भारतकी सर्वमान्य भाषा कौन-सी हो। अिस बातका निर्णय हो चुका है। देशकी सर्वमान्य भाषाकी आवश्यकताओंको पूरी करनेकी क्षमता हिन्दीमें ही है और यही सबसे अुपयुक्त है।

आपने हिन्दीतर भाषियोंको अत्यधिक लगनके साथ हिन्दी पढ़नेकी सलाह दी।

बेलगाँव

बेलगाँवः— २९ जुलाअीको बेलगाँव जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बेलगाँवकी विराट सभा हुअी। जिलेमेंसे विभिन्न स्थानोंसे ३६ प्रतिनिधि आये थे। अुस समय अेक मतसे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

अध्यक्ष— श्री भैरूलाल व्यास

अुपाध्यक्ष— श्री वि. ब. दांडेकर

कार्य कारिणी समितिने कार्यवाहीके लिये निम्नलिखित पदाधिकारी चुने।

कार्याध्यक्ष— श्री भा. वि. पुणेकर

संगठन मन्त्री— श्री लक्ष्मणराव पाटील

प्रधान मन्त्री— श्री रा. नि. हिरेमठ

कोषाध्यक्ष— श्री लक्ष्मणराव मेलगे

सहायक मन्त्री— श्री सुधाकर देशपांडे

विदर्भ-नागपुर

दाभाड़ी केन्द्रः—गत जुलाअीमें अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरण समारोह मराठी माध्यमिक शालाके मुख्याध्यापक ज्ञानी अेवं वयोवृद्ध श्री खडसेजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। केन्द्र व्यवस्थापक श्री पाटील, प्र० प्र० श्री कमलाकरजी पाटील, अेवं मलकापुर जनपदके शिक्षण-अध्यक्ष श्री नामदेवजी अिस केन्द्रमें राष्ट्रभाषा प्रचार प्रवृत्तिमें अच्छी सक्रिय दिलचस्पी ले रहे हैं। गांव यद्यपि छोटासा, किन्तु राष्ट्रभाषा प्रचारका काम बड़े अुत्साहसे चलता है। नाम छोटा, काम बड़ा—का यह केन्द्र अुदाहरण बन जायगा।

मोझरीः गुरुकुलः— ता० २१ अगस्तको राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराजके गु० से० मं० आश्रममें स्थित गुरुकुलमें प्रांतीय संचालक श्री हृषीकेश शर्माने राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्रका अुद्घाटन किया। पूज्य तुकड़ोजी महाराजकी अध्यक्षतामें यह समारम्भ सम्पन्न हुआ। आरंभमें बालिकाओंने स्वागत गीत गाया। श्रीशर्माजीने अपने भाषणमें राष्ट्रसंत और स्व० राष्ट्रपिता गांधीजीका पवित्र सम्बन्ध, राष्ट्रभाषा हिन्दीको राष्ट्रीय भक्ति भजनोंकी देन, अित्यादिपर काफी प्रकाश डाला। राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराजने राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको आशीर्वाद देते हुअे कहा कि मैं अपना पूरा सक्रिय सहयोग समितिको दूँगा और आजसे हमारे आश्रमके हाअीस्कूलमें राष्ट्रभाषा वर्ग शुरू हो चुके हैं। अेक भाषा, अेक वेश, अेकसा भोजन और अेक भावनासे ही देश मज़बूत होगा। राष्ट्रभाषासे मातृभाषा या प्रांतीय भाषाकी क्षति कभी संभव नहीं।

गुरुकुल आश्रमका सारा वातावरण शर्माजीको बहुत प्रिय अेवं पवित्र लगा। ज्ञान, कर्म, भक्तिका बौद्धिक अेवं औद्योगिक प्रेमल, विनम्र वातावरण मोझरीमें देखकर वे बड़ी पवित्र भावना साथ लेकर नागपुर गये। महाराजश्रीने अशीर्वाद दे विदा दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षाफल—सितम्बर '५१ में होनेवाली प्रचार परीक्षाओंका परीक्षा-फल २६ नवम्बर '५१ को प्रकाशित होगा परीक्षार्थी अपने केन्द्र-व्यवस्थापकसे ही अपना परीक्षा-फल प्राप्त करें।

वर्धा–कार्यालयसे परीक्षा-फल सम्बन्धी पत्रोंका अुत्तर न दिया जा सकेगा।

परीक्षा-कार्यक्रम—सितम्बर '५१ में होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं और राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाके कार्यक्रम निम्न प्रकार हैं:—

सितम्बर '५१

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं

—कार्यक्रम—

शनिवार २२।९।५१		रविवार, २३।९।५१	
१०॥ से १॥	२॥ से ५॥	१०॥ से १॥	२॥ से ५॥
कोविद १ ला प्रश्नपत्र	कोविद २ रा प्रश्नपत्र	कोविद ३ रा प्रश्नपत्र	कोविद ४ था प्रश्नपत्र
×	परिचय १ ला प्रश्नपत्र	परिचय २ रा प्रश्नपत्र	परिचय ३ रा प्रश्नपत्र
×	×	प्रवेश १ ला प्रश्नपत्र	प्रवेश २ रा प्रश्नपत्र
×	×	प्रारम्भिक	×

मंगलवार ता० २५ सितम्बर ७॥ से १०॥
कोविद अुर्दू

कोविदके परीक्षार्थियोंकी मौखिक परीक्षा ता. २४।९।५१ सोमवारको सुबह होगी। यदि अिसमें किसी तरहका परिवर्तन हुआ तो अुसकी सूचना केन्द्र-व्यवस्थापक यथासमय देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाका कार्यक्रम

(सितम्बर '५१)

शनिवार ता. २२ सितम्बर '५१	रविवार ता. २३ सितम्बर '५१	सोमवार ता. २४ सितम्बर '५१	मंगलवार ता. २५ सितम्बर '५१
प्रश्नपत्र १ ला १०॥ से १॥	प्रश्नपत्र ३ रा १०॥ से १॥	प्रश्नपत्र ५ वां सुबह ७॥ से १०॥	प्रश्नपत्र ६ ठा सुबह ७॥ से १०॥
प्रश्नपत्र २ रा २॥ से ५॥	प्रश्नपत्र ४ था २॥ से ५॥	×	×

सूचनाः— मौखिक परीक्षा किस दिन और किस समय होगी, अिसकी निश्चित सूचना केन्द्र-व्यवस्थापक द्वारा परीक्षार्थियोंको प्राप्त होगी।

केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदनः—

आगामी प्रचार-परीक्षाओंके लिअे आपके केन्द्रसे आवेदन-पत्र प्राप्त हुअे हैं। अुनकी प्राप्तिकी सूचना भेज दी गअी है। राष्ट्रभाषाके प्रचार-कार्यमें आपके सहयोगके लिअे धन्यवाद।

आपसे निवेदन है कि परीक्षा-व्यवस्थाको सुदृढ़ बनानेके लिअे नीचे लिखी बातोंपर विशेष ध्यान दें:—

निरीक्षक नियुक्तिः—

(१) अपने केन्द्रके निरीक्षण-कार्यके लिअे प्रति ३५ परीक्षार्थियोंपर अेक निरीक्षकके हिसाबसे आवश्यक संख्यामें निरीक्षकोंकी नियुक्ति कर लें।

(२) नियुक्त निरीक्षकोंके नाम, पता, योग्यता, अुम्र, पद, धन्धा आदि परिपत्र नं. १३ पर भरकर वर्धा-कार्यालय भेज दें।

सूचनाः—(अ) अैसे केन्द्रके लिअे भी अेक निरीक्षककी नियुक्तिकी जा सकती है जिसमें ३५ से कम परीक्षार्थी हैं।

(आ) निरीक्षकको प्रति बैठक (अेक बैठक तीन घंटोंकी होती है) के लिअे अेक रुपया पुरस्कार दिया जाता है।

परीक्षा-सामग्री समयपर भेजें: —

(अ) **अुत्तर-पुस्तकेंः**—शनिवार और रविवारको प्रत्येक परीक्षाके बाद ही निरीक्षकके हस्ताक्षरके साथ, सम्बन्धित परीक्षाकी अुत्तर-पुस्तकोंका बण्डल सीलकर रख लेवें। अैसे सील किये हुअे चारों बंडल सोमवारको ही रजिस्ट्रीसे भेज दें।

सूचनाः— (१) यदि अुत्तर-पुस्तकें रेल पार्सलसे भेज रहे हों तो **कोविदकी अुत्तर-पुस्तकें निश्चित रूपसे डाक द्वारा ही भेजें।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) कोविद अुर्दूकी अुत्तर-पुस्तकें बादमें भेज सकते हैं।

(३) अुत्तर-पुस्तकोंके बंडलोंपर चिपकानेके लिअे भेजा गया लेबल (प. सं. २२) निरीक्षकोंके हस्ताक्षर सहित बंडलपर चिपकाना न भूलें।

(४) बची हुअी पुरवणी-पुस्तकें और प्रश्नपत्र, अुत्तर-पुस्तकोंके साथ ही भेज दें।

(आ) अुपस्थिति-पत्र : – अुपस्थिति-पत्र अुत्तर-पुस्तकोंके साथ ही अवश्य भेजें।

(अि) मौखिक तथा लेखन-कार्य :—मौखिक-प्राप्तांक तथा लेखन-कार्यकी वहियाँ परीक्षा समाप्त होनेके पश्चात् शीघ्र ही वर्धा-कार्यालयको भेज दें। २० दिनके बाद मिलनेवाले प्राप्तांक आदि अमान्य किये जाते हैं।

परीक्षा-व्यवस्था-खर्च : –

परीक्षा समयमें होनेवाले खर्चका विवरण आवश्यक वाअुचर सहित प. सं. २० पर भरकर शीघ्रसे शीघ्र भेज दें।

सूचना :—

विवरण भरते समय याद रखें कि नीचे लिखे खर्च ही "परीक्षा समयमें होनेवाला खर्च" माने जाँयगे :—

(१) परीक्षा-निरीक्षकोंका पुरस्कार
(२) अुत्तर-पुस्तकें रजिस्ट्रीसे भेजनेका खर्च
(३) अन्य सामान रजिस्ट्री या डाक द्वारा वर्धा भेजनेका खर्च।
(४) समयपर अुत्तर-पुस्तकें, स्याहीसोख आदि न मिलनेपर अुनकी व्यवस्था करनेमें किया गया खर्च।

मौखिक परीक्षकोंसे

कोविद मौखिक परीक्षामें अुत्तीर्ण होनेके लिअे कम-से-कम ४५% अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

मौखिक परीक्षकोंसे अनुरोध है कि अंक देते समय कृपया अिसका खयाल रखें।

हमारे नये प्रमाणित-प्रचारक

प्रान्त	प्रचारकका नाम	क्रमसंख्या	स्थान
आसाम	श्री पं. रामवचन शास्त्री	२६३७	जोरहाट
मध्यभारत	,, कुँवर अनूपसिंह चम्पावत	२६३८	लश्कर
गुजरात	,, रतिलाल जीवराम पंचोलि	२६३९	अहमदाबाद
,,	,, नरेन्द्र छगनलाल दवे	२६४०	नयाडीसा
,,	,, करसनदास माधाभाअी सोनगरा	२६४१	मोर्वी
,,	,, दलपतराम जगन्नाथ वैष्णव	२६४२	,,
,,	,, भगीरथ देवचन्द मावजीभाअी	२६४३	,,
,,	,, दलपतराम रामदास नीमावत	२६४४	,,
,,	,, कान्तिलाल माणेकचन्द दोशी	२६४५	,,
,,	,, कान्तिलाल करुणाशंकर दवे	२६४६	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात	,, रमेशचन्द्र अीश्वरलाल धोलकिया	२६४७	,,
,,	,, रतिलाल माधवजी नगवाडीया	२६४८	,,
,,	,, लाभशंकर शास्त्री	२६४९	,,
,,	,, परभुभाअी गोमानजी लाड	२६५१	कडोद
,,	,, चीनुभाअी अम्बालाल महेता	२६५२	अहमदाबाद
,,	,, केशवलाल बहेचरदास पटेल	२६५३	आदरजमेडाँ
,,	,, नटवरलाल दलपतभाअी देसाअी	२६५४	अहमदाबाद
,,	,, रतिलाल मणिशंकर पाठक	२६५५	विरमगाँव
,,	,, शान्ताबहन फूलसिंह परीख	२६५६	,,
,,	,, मोहनलाल अंबाराम पटेल	२६५७	,,
,,	,, विद्याव्रत जयसिंहभाअी शास्त्री	२६५८	वल्लभ विद्यानगर
,,	,, विनायक केशवलाल पंडित	२६५९	अूना
,,	,, नगीनलाल हिम्मतलाल तलाटी	२६६०	हालोल
,,	,, गौरीशंकर त्रिकमलाल त्रिपाठी	२६६१	शेरथा
,,	,, रमाकान्त रामरज शर्मा	२६६२	अहमदाबाद
महाराष्ट्र	,, केशव सदाशिव चरणकर	२६६३	सांगली
,,	,, पं. पारसनाथ गिरिजाशंकर अुपाध्याय	२६६४	थाणा
,,	,, सदाशिव शंकर जोशी	२६६५	धुलिया
,,	,, व्हनापा मोनापा कुगजी	२६६६	येल्लूर
,,	,, कु. चन्दू वासुदेव साठे	२६६७	पूना
,,	,, परशुराम दुर्गाराम घोरपडे	२६६८	शहापुर
,,	,, दत्तात्रय शंकर पलसुले	२६६९	पूना
,,	,, रामदास दाजी जोशी	२६७०	रावलगाँव
,,	,, सुलोचना दामोदर भागवत	२६७१	पूना
,,	,, भाअूराव ज्ञानेश्वर मदने	२६७२	सातारा
,,	,, रामचन्द्र केरू ढालपे	२६७३	पुसेगाँव
विदर्भ-नागपुर	,, मारुती सुकरू कढूकार्	२६७४	वर्धा
,,	,, विश्वनाथ सदाशिव असोलकर	२६७५	नागपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये केन्द्र

क्रमांक	केन्द्र	जिला	प्रान्त
८०६	घडी	अहमदाबाद	गुजरात
८३१	वडाली	साबरकांठा	"
९०२	सोजा	महेसाणा	"
९४९	कृषि गो विद्याभवन,	खेडा	"
७८९	साकली	पू. खा	महाराष्ट्र
७९६	अंनपुर	"	"
९९६	खिरवड	"	"
७९८	तडसर	द. सातारा	"
८००	खानापुर	"	"
८२२	वेडग	"	"
८१६	वेलापुर	अहमदनगर	"
८२१	कुमठे	अु. सातारा	"
८२३	दहाणूरोड	थाणा	"
८२४	मडिलगे बु.	कोल्हापुर	"
९५७	कारदगा	वेलगांव	"
८१०	जबलपुर	जबलपुर	म. प्रदेश
६६७	वेलोरा	अमरावती	"
८६८	सेगांव	चांदा	"
८७५	मुर्तीजापुर	अकोला	"
७८७	गोहद	भीन्ड	म. भारत
७८८	अिछावर	सीहोर	"
८११	वडौदा	रतलाम	"
८३०	रुपही	नौगांव	आसाम
८३३	गोसाअीगांव	ग्वालपाडा	"
८६४	गम्पह	सीलोन	सीलोन
८०९	बीगोद	भीलवाडा	राजस्थान
८३२	बीकानेर	बीकानेर	"
८५४	केसरीसिंहपुर	गंगानगर	"
८७९	झोटवाडा	जयपुर	"
८१३	बेगुनीया	पुरी	अुत्कल
८३५	चम्पुआ	केंदूझर	"
८४३	सुआमपाटना	"	"
८४९	आनन्दपुर	"	"
८७२	बीजीपुर	पुरी	"
९६२	पाटनागड़	बलांगीर	"
८८६	कूचबिहार	कूचबिहार	प. बंगाल
८२८	गुलेदगुड्ड	बीजापुर	कर्नाटक
८५१	चांदकवठे	"	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-विक्रेताओं और पुस्तकालयोंको विशेष सुविधा

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकोंपर भारतके समस्त पुस्तक-विक्रेताओं और पुस्तकालयों तथा वाचनालयोंको नीचे लिखे अनुसार कमीशन देना निश्चित हुआ है:—

५) रु० से १००) रु० मूल्यकी पुस्तकोंपर २५%

१०१) रु० से २५०) रु० मूल्यकी पुस्तकोंपर ३०%

२५०) रु० से अधिक मूल्यकी पुस्तकोंपर ३३%

डाक खर्च खरीदनेवालेको देना होगा।

वाचनालयों और पुस्तकालयोंके संचालकोंसे निवेदन है कि संवत् २००८ में अपने पुस्तकालयों और वाचनालयोंके लिअे पुस्तकोंका चुनाव करते समय सम्मेलन द्वारा प्रकाशित अिन अत्युत्तम सर्वोपयोगी पुस्तकोंका विशेष ध्यान रखें और अपयुक्त कमीशनकी सुविधाका लाभ अुठावें। पुस्तक विक्रेताओंको भी अिस सुविधासे लाभ अुठाना चाहिये। आर्डर देते समय कमसेकम ५) रु० पेशगी भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

धार्मिक

मत्स्य महापुराण	२०)
वायु पुराण	१२)
पुराणोंमें गंगा	१०)
तपोभूमि	१०)
आचार्य सायण और माधव	६)

साहित्य

गोरखबानी	६)
शैवाल	३)
भोजपुरी ग्राम गीत (प्रथम भाग)	५)
,, ,, ,, (द्वितीय ,,)	१०)
प्रेमघन सर्वस्व (प्रथम भाग)	६)
,, ,, (द्वितीय ,,)	१०)
हिन्दी काव्यमें प्रकृति-चित्रण	६)

राजनीति

राजनीतिके सिद्धान्त	८)
आदर्श नगर व्यवस्था	१०)

अर्थशास्त्र

भारतीय ग्राम्य अर्थशास्त्र	७)

कोश

शासन-शब्दकोष	१५)
शरीर विज्ञान शब्दकोष	५)

बौद्ध साहित्य

जातक (प्रथम भाग)	७॥)
,, (द्वितीय भाग)	७॥)
,, (तृतीय भाग)	१०)

अन्य

अंग्रेजी साहित्यका अितिहास	३)
सम्मेलनके रत्न	५)
सम्मेलनके कार्य-विवरण प्रति वर्षका लगभग	१)
स्त्रीका हृदय	१॥)
आंध्र देशके कबीर श्री वेमना	१॥)

पता—साहित्य मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

[मुद्रक—मुमन वात्स्यायन, राष्ट्रभाषा प्रेस वर्धा]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

निश्चय ही रचनात्मक काम अधिक महत्त्वका और अधिक अुपयोगी है ।

रचनात्मक कार्यक्रमको दूसरे शब्दोंमें और अधिक अुचित रीतिसे सत्य और अहिंसात्मक साधनोंद्वारा पूर्ण स्वराज्यकी रचना कहा जा सकता है ।

--महात्मा गांधी

अक्टूबर १९५१

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मुखपत्र

संपादक
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

विषय-सूची

१. सम्पादकीय २९९
२. हिन्दीकी तीन शैलियाँ ३०१
३. प्रान्तीय हलचल ३०३
४. परीक्षा विभाग ३१२

(कवर पृष्ठ ३ का शेषांश)

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
बम्बअी	श्री बाबुभाअी नगीनदास परीख	२७४८	बोरीवली
,,	,, विष्णु आत्माराम कुलकर्णी	२७४९	गिरगांव
,,	,, रामाधार मिश्र	२७५०	मालाड़
वि० नागपुर	,, श्रीरामजी गंगारामजी भाकरे	२७५१	खामगांव
,,	,, सहदेवराव नारायणराव भोपले	२७५२	हिवरखेड
,,	,, राजाराम तोताराम तांबटकार	२७५३	माटरगांव
,,	,, कृष्णराव नारायणराव कुरकुटे	२७५४	अकोला
,,	,, दत्तात्रय बंड़ोपन्त शेड़े	२७५५	पुसद
,,	,, त्र्यम्बक गंगाराम गवली	२७५६	खेड़ीपान्हेरा
,,	,, वामन वारलुजी नागभिड़कर	२७५७	सिताबर्डी
,,	,, मोतीलाल नेमीचन्द चवरे	२७५८	मलकापुर
,,	,, कृष्ण गोपाल शिन्दे	२७५९	मालेगांव जागीर
राजस्थान	,, मगनलाल पाराशर	२७६०	बूंदी
अुत्कल	,, बलराम शतपथी	२७६१	अिन्दुपुर

नये केन्द्र

क्रमांक	केन्द्र	जिला	प्रान्त
१००२	केलोद	नागपुर	मध्यप्रदेश
१०२२	कोठा (वेणी)	यवतमाल	,,
११९२	पथ्रोट	अमरावती	,,
१०१९	येडसी	सोलापुर	महाराष्ट्र
११९३	राअू	अिन्दौर	म. भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

वर्ष १०] वर्धा, अक्टूबर—१९५१ [अंक १२

सम्पादकीय

बम्बअी-सरकारकी विचित्र नीति

बम्बअी सरकारकी प्रेस-विज्ञप्तिसे यह जानकर प्रसन्नता हुअी कि अुसने श्रेणी ४ के कर्मचारियोंको छोड़कर सभी सरकारी नौकरोंके लिअे तीन वर्षकी अवधिमें कमसे कम अेक अूँची हिन्दी परीक्षामें अुत्तीर्ण होना आवश्यक ठहराया है। सरकारका निश्चय है कि कुछ विशेष पदोंको छोड़कर (जिनका बादमें स्पष्टीकरण किया जायगा) अप्रैल १९५४ के बाद अन्य किसी पदपर किसी अैसे व्यक्तिको नियुक्त नहीं किया जायगा जो कमसे कम अेक अूँची हिन्दी परीक्षामें अुत्तीर्ण नहीं हुआ है।

सरकारने चार परीक्षाओंका नामोल्लेख किया है—

(१) महाराष्ट्र रा० भा० सभा, पूनाकी 'प्रवीण' परीक्षा; (२) गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबादकी 'विनीत' परीक्षा; (३) हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा तथा बम्बअीकी 'काबिल' परीक्षा, और (४) कर्नाटक हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़की तरह संचालित दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाकी चतुर्थ ग्रेडवाली 'प्रवेशिका' परीक्षा।

अूपरी दृष्टिसे देखनेसे बम्बअी सरकारका यह निश्चय राष्ट्रभाषा हिन्दीके पक्षमें मालूम देता है, किन्तु जरा-सी ही गहराअीमें अुतरनेसे मालूम होगा कि बम्बअी सरकारका यह निश्चय कितना पक्षपातपूर्ण, अनीतिपूर्ण और भारतीय संविधानकी राजभाषा सम्बन्धी ३५१ वीं धाराके भी प्रतिकूल है।

पाठकोंको यह ज्ञात ही है कि हमारी भारतीय संसदने जिस दिन हिन्दीको राज्यभाषाके रूपमें स्वीकार किया, अुस दिनतक देशके कुछ प्रान्तोंमें कुछ संस्थाअें हिन्दुस्तानीका ढिंढोरा पीटती रही हैं। बम्बअी सरकारने जिन चार संस्थाओंकी परीक्षओंको मान्य ठहराया है, अुनमेंसे अेक भी अैसी नहीं है जो रातोरात हिन्दुस्तानीका बुरका अुतारकर हिन्दीकी पक्षपातिनी न बन गयी हो। बम्बअी सरकारकी यह घोषणा प्रत्यक्षमें हिन्दी-समर्थक किन्तु छद्मवेशमें आज भी परोक्ष रूपमें हिन्दुस्तानीका ही समर्थन कर रही है।

अब अेक-अेक परीक्षाको लीजिये—

१-महाराष्ट्र प्रान्तमें—महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा संचालित वर्धाकी परीक्षा सन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७' से चालू है। कुछ वर्ष हुअे—महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभाके नामसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन-विरोधी तथा हिन्दुस्तानीसमर्थक कुछ भाअियोंने 'प्रवीण' परीक्षा आरम्भ की। बम्बअी-सरकारने हजारोंकी संख्यामें अुत्तीर्ण महाराष्ट्रके 'कोविद' परीक्षार्थियोंकी अुपेक्षा-कर केवल 'प्रवीण' परीक्षोत्तीर्ण कर्मचारियोंको सरकारी नौकरियोंके योग्य समझा है।

२—गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अहमदाबाद द्वारा संचालित वर्धाकी "कोविद" परीक्षोत्तीर्ण होनेवाले हजारों 'कोविद' अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंकी अुपेक्षाकर सरकार विद्यापीठ, अहमदाबाद द्वारा संचालितकेवल "विनीत" परीक्षोत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको सरकारी नौकरियोंके योग्य समझा है।

३—स्वयं बम्बअी नगरके "कोविद" परीक्षोत्तीर्ण हजारों परीक्षार्थियोंकी अुपेक्षा कर "हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा" बम्बअीके "काबिल" परीक्षोत्तीर्ण कुछ ही परीक्षार्थियोंको सरकारी नौकरीके योग्य समझा है। फिर "दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभाकी" "प्रवेशिका" परीक्षोत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको भी सरकारी नौकरीके योग्य समझा है।

४—किसी समय दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, फिर हिन्दुस्तानी प्रचार सभा और अब फिर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाकी "प्रवेशिका" परीक्षाके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको भी सरकारी नौकरीके योग्य समझा है।

हम बम्बअी सरकारसे जानना चाहते हैं कि अुसके यह निर्णय किस सिद्धान्तके आधारपर हुअे हैं?

सुननेमें आया है कि बम्बअी-सरकारने अुन्हीं परीक्षाओंको मान्य करना अुचित समझा है जो अुसके अपने राज्य-क्षेत्र की हैं। क्या बम्बअी सरकारका यह प्रान्तीय पक्षपातसे भरा दृष्टिकोण जाने-अनजाने भारतीय संघकी अेकतापर कुठाराघात नहीं करता है?

यदि अुक्त दृष्टिकोणको सही मान भी लें, तो हम जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा और कल तककी दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, (मद्रास) की परीक्षाओंको क्यों मान्यता दी गयी है?

भौगोलिक स्थितिकी बात की अुपेक्षा भी कर दें तो यह बड़ा ही गम्भीर प्रश्न है कि हमारे भारतीय संविधानके राज्य-भाषा सम्बन्धी निर्णयके रहते किसी भी हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी परीक्षाको क्यों मान्यता दी गयी है?

सन् १९३७ से हिन्दीतर प्रान्तोंमें राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यसे सम्बन्धित सभी केन्द्र-व्यवस्थापकों, सभी प्रमाणित प्रचारकों, सभी प्रान्तीय समितियों तथा केन्द्रीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रति बम्बअी सरकार अपने अिस सर्वथा गलत निर्णयके लिये अुत्तरदायी है। सभी राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रेमी बम्बअी सरकारसे नम्रतापूर्वक जानना चाहेंगे कि आखिर अुसने अैसा निर्णय क्यों किया है?

हमें आशा है कि राष्ट्रभाषा प्रचारसे सम्बन्धित सभी केन्द्र-व्यवस्थापकों, सभी प्रमाणित प्रचारकों, सभी प्रान्तीय समितियों तथा केन्द्रीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके सभी सदस्योंके मार्फत हम सभीका यह नम्र निवेदन बम्बअी सरकारतक शीघ्रातिशीघ्र अवश्य पहुँचेगा कि वह राष्ट्रभाषा हिन्दीकी बम्बअी राज्यमें सर्वाधिक प्रचलित तथा प्रचारित "कोविद" परीक्षाको अवश्य मान्यता दे।

—आनन्द कौसल्यायन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीकी तीन भाषा-शैलियाँ

श्री सीताराम चतुर्वेदी

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समितिके मन्त्री भदन्त आनन्द कौसल्यायनजीने कुछ दिन पहले मुझसे 'राष्ट्र-भाषा' में लेख देनेको कहा था पर राष्ट्रभाषाकी नागरीमें जो 'अ' की बारहखड़ी काममें आती है, वह मैं ठीक नहीं समझता। पर मैं यह भी जानता हूँ कि मैं चाहे जैसे भी लिखूँ, वे तो अपने ही ढंगसे छाप डालेंगे। यह समझकर मैंने अपने लेखमें वैसे शब्द ही नहीं रक्खे जिनमें परिवर्तित बारहखड़ीका प्रयोग हो। सम्पादकके बदले यह टिप्पणी भी मैंने ही लिख दी है, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं टिप्पणीमें ही वे अपनी परिवर्तित बारहखड़ी न ला भरें। —लेखक]

(१) सारा भारत देश आज व्यापक रूपसे हिंदी भाषामें प्रौढ़ पांडित्य प्राप्त करनेके निमित्त समुत्सुक और सन्नद्ध हो रहा है क्योंकि भारतकी जनताके प्रतिनिधियोंने अत्यन्त विवेक तथा दूरदर्शिताके साथ सर्वसम्मतिसे हिन्दीको राष्ट्रभाषाके सम्मानपूर्ण महिम्न पदपर प्रतिष्ठित करनेका नैतिक साहस प्रदर्शित किया है। तात्पर्य यह है कि अब सम्पूर्ण राष्ट्र अपने अलग-अलग प्रान्तोंमें तो प्रान्तीय बोलियोंका पोषण करेगा किन्तु प्रान्तोंके पारस्परिक व्यवहार तथा अखिल भारतीय कार्यों और विचारोंके सम्बन्धमें अपने भाव व्यक्त करनेके निमित्त अंग्रेज़ीका आश्रय छोड़कर हिन्दीका अवलम्ब लेगा क्योंकि हिन्दी हमारे देशकी सभी भाषाओंसे अनेक रूपोंमें सम्बद्ध भी है और वह भारतीय जलवायुमें जन्म लेकर, भारतीय धरित्रीमें, भारतीय भाषा-प्रकृतिके अनुसार पुष्ट होती रही है।

(२) यह सब होनेपर भी हमारे बहुतसे संगी-साथी कभी-कभी यही पचड़ा ले बैठते हैं कि जो हिन्दी देसकी बोली बन रही है वह किस ढंगसे लिखी जाय और किस ढंगसे बोली जाय। जो लोग बोलियोंकी छानबीन या परख करनेके काममें जुटे हैं वे तो मानते ही हैं कि हम लोग सभी अपनी अपनी बोली भी न जाने कितने ढंगोंसे बोलते रहते हैं, क्योंकि हम जिससे बातें करते हैं, वह जिस ढंगसे हमारी बात समझ सके, वैसी ही ढलन-पर हमारी बोली भी ढलने लगती है। आपने सुना होगा कि जब दो अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग मिलकर बातें करने लग जाते हैं तब वे अपनी बातचीतमें अनजाने ही जहाँ-तहाँ अंग्रेजी भी ठूँसते चलते हैं, पर जब वे अपने नौकर, बच्चे या कमपढ़े पड़ोसीसे बातचीत करते हैं तब वह अंग्रेजी न जाने कैसे कहाँ निकल भागती है और बातचीतका ढंग भी कुछ सीधा हो जाता है। वे ही लोग जब कहीं किसी सभा-समाजमें बोलने खड़े होते हैं, तब वही बोली कुछ अनोखे ढंगसे लच्छेदार हो चलती है। तो कहना यही है कि हमें या आपको यह धोखा कभी न हो कि बोलियाँ किसी साँचेमें ढालकर बना ली जाती हैं और बस वही साँचा लेकर आप बोलें तो ठीक है, हेर-फेर कर दें तो बोली बदल जाय।

(३) कभी-कभी जब दो-चार कलमके धनी माथेका पसीना झरना बनाकर अपनी बोलीमें कुछ अनोखी लचक, अनूठी सजावट और लुभावनी चटक लेकर अखाड़ेमें आ धमकते हैं तब बोलीकी वह चटकीली सजधज देखकर जी खिल उठता है, बात-बात पर वाह-वाह करनेको मन मचलता है और जी करता है कि खाना-पीना हँसना-बोलना, सबको धता बताकर दिन-रात कान खोलकर वह बोलीका रस कानसे पी-पीकर छके पड़े रहें। पर कितने लोगोंके कलममें वह जादू है कि मुहर्रमी गालोंमें फागकी मस्ती भर दे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखती-मुरझाती जी की कलीको चुटकी भरमें खिलाकर सूरजमुखी बना दे और आँखोंके मोती समेटकर दाँतके मोती चमका दें। सच पूछो तो वह कलमकी कारीगरी अब धीरे-धीरे अपना आसन लपेट रही है, साँसें गिन रही है, और कौन जाने आजकी जलती बयारके झोंकोंसे खीझ कर वह भी किसी गहरे गढ़ेमें कूदकर दम तोड़ दे।

अब आपकी समझमें आ गया होगा कि ये तीन अनुच्छेद हमने हिन्दीकी तीन शैलियोंमें लिखे हैं। पहली तो वही शैली है जो आजकलके विद्वान साहित्यकारों, नेताओं और धर्म-प्रचारकोंके मुँहसे सभा-समाजोंमें सुनी जाती है या हिन्दीके समाचारपत्रों, पुस्तकों और पत्रकोंमें पढ़नेको मिल जाती है। दूसरे अनुच्छेदमें ठेठ हिन्दीकी वह शैली है जो वास्तवमें हिन्दीका अपना देशी तद्भवात्मक स्वाभाविक रूप है जिसमें न तो तत्सम शब्द ही हैं और न बाहरी प्रभाव ही। तीसरी शैली वह है जिसमें हिन्दीकी रूढ़ोक्तियों या मुहावरोंसे सजा हुआ हिन्दीका वह चमत्कारपूर्ण स्वाभाविक रूप है जिसका व्यापक प्रयोग और प्रचार पढ़े-लिखे लोगोंमें करनेसे ही हिन्दीकी व्यंजना-शक्ति पुष्ट और समृद्ध हो सकती है।

पर हिन्दीमें दो और भी शैलियाँ चल रही हैं, जिन्हें भी लोग भूलसे हिन्दी ही समझ बैठे हैं। नीचे लिखे दो अनुच्छेदोंमेंसे पहलेमें वह गड़बड़ शैली है जिसे लोग कहते तो "हिन्दुस्तानी" हैं पर जिसमें हिन्दुस्तान की किसी भी भाषाकी प्रकृतिका ठीक संस्कार नहीं है और जिसमें जहाँसे जो शब्द मनमें आया वहाँसे वह शब्द लेकर बिना सोचे-समझे प्रयुक्त कर लिया जाता है। हिन्दीके कुछ लेखकों, कहानीकारों और नाटककारोंकी भाषामें वैसी शैली देखकर कुछ लोगोंका यह विश्वास हो चला है कि यह भी हिन्दीकी मान्य शैली ही है। किन्तु यह बात वास्तवमें नहीं है। यह शैली केवल वे लोग अपनाते हैं जिनका किसी भाषापर पूर्ण अधिकार नहीं होता, क्योंकि जिसे भाषाका अच्छा ज्ञान नहीं होगा वह तो भाषा बिगाड़कर अनजाने भानमतीका कुनबा जोड़ेगा ही। दूसरे अनुच्छेदकी शैली वही है जिसमें पिछले दो सौ वर्षोंसे मुसलमान कवियों और लेखकोंने विशेष रूपसे लिखा है और जिसका संस्कार देहलवी और लखनवी राज-दरबारोंमें किया गया।

(१) आप सवाल करेंगे कि वह कौन-सी भाषा है जिसका ज़िक्र आपने अभी किया है और जिसे आपने गड़बड़ शैली बताया है। आदमी जिस जबानमें अपने विचार लोगोंके समक्ष हाजिर करता है वह अिस बात की हाजत नहीं रखती कि वह किसी बनावटी साँचेमें बलपूर्वक कस दी जाय। भाषाका तो केवल यही मकसद है कि आदमी जो कुछ सोचे-समझे वह सब बिना किसी फौर्मेलिटी या टेकनीकके साफ-साफ स्वाभाविक जबानमें कह डाले। पर हम यह बात ठीक नहीं समझते क्योंकि आदमीको जैसे ही यह छूट दे दी जायगी वैसे ही वह गड़बड़ भाषा बनाने लगेगा और फिर जितने मुँह अुतनी बोलियाँ बन जायेंगी।

(२) मगर जिस जबानमें देहलवी और लखनवी शुअरा या मुसन्निफानके कलाम या आजम खयालात महफूज हैं वह जबान सलासतके जिस पैमानेतक पहुँच चुकी है वहाँतक हिन्दोस्तानकी दीगर जबानें अभीतक अजहद कोशिश करनेपर भी नहीं पहुँच पा रही हैं। वजह साफ यह है कि वहाँके मुसन्निफान और शुअराने निहायत होशियारी और जिन्दादिलीके साथ जबानके हर पहलूको बड़े गौरो-खौरके साथ खराद-खरादकर साफ किया। यहाँ तक कि कवायद और बहरके जितने कवानीन थे, सबसे बाजाप्ता लैस करके जबानमें वह खूबी, वह शीरींनी, वह कशिश पैदा की कि जिसकी जबानपर वह चढ़ी, वह जिन्दगी भरका गुलाम हो गया। अब हिन्दीमें भी वह जबाँदानी, वह कशिशे-कलाम पैदा करना पड़ेगा वर्ना यह भी निहायत खुश्क सियासी जबान बनकर बँधी पड़ी रहेगी, निखर न पावेगी।

अब आप हिन्दीकी सब शुद्ध शैलियाँ ठीक-ठीक समझ चुके होंगे और यह भी समझ रहे होंगे कि अशुद्ध शैलियाँ भी किस प्रकार हमारे भ्रमसे हिन्दीमें प्रविष्ट होती चली आ रही हैं और हिन्दीका सच्चा रूप बिगाड़नेकी धमकी दे रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[**निवेदन**—राष्ट्रभाषा प्रचारकों और केन्द्र व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि वे कृपया "राष्ट्रभाषा" में प्रकाशनार्थ अपने केन्द्रके वर्ग, समारोह आदि राष्ट्र-भाषा-कार्यका विवरण, समाचार आदि **प्रान्तीय संचालकके** द्वारा भेजें। —व्यवस्थापक]

गुजरात

मीठापुर— ता० ५ अगस्तको शामको ४ बजे श्री टी० अेस० शिवरामकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरण 'समारोह मनाया गया।

बडिया—ता० १३ अगस्तको स्थानीय नगर-पालिकाके अध्यक्ष श्री रामभाओी पटगीरकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव मनाया गया।

अिस अवसरपर न्यायमूर्ति श्री भट्ट साहब, मामलतदार श्री देसाओी, जैन मुनि श्री प्राणलालजी अेवम् अन्य प्रतिष्ठित नागरिक काफ़ी संख्यामें अुप-स्थित थे।

बलसाड – स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी वार्षिक बैठक ता० ६ सितम्बरको हुअी। बैठकमें समितिके मन्त्री श्री छगनलाल भावसारने वार्षिक कार्यकी रिपोर्ट पढ़ सुनायी। तत्पश्चात् समितिका नये वर्षके लिअे नया संगठन किया गया। पदाधिकारी अिस प्रकार हैं।

अध्यक्षः—श्री शिवकुमारजी पंडित

मन्त्रीः—श्री छगनलालजी भावसार

केन्द्र व्यवस्थापक श्री गजानन शास्त्री सदस्योंका भी निर्वाचन किया गया है।

माण्डवी (कच्छ):– स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार मंडलके तत्त्वावधानमें अप्रैल १९५१ की राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरण करनेका समारोह ता० १५ अगस्तको अखिल कच्छ व्यापारी महामण्डलके मन्त्री श्री केशवलालजी शाहकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अध्यक्ष महोदयने अपने हाथों परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरण करनेके बाद अेक भाषाके प्रभावके बारेमें सारगर्भित भाषण दिया और अपनी ओरसे मंडलको सहायतार्थ २५) रु० प्रदान किये।

करजणः—अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव ता० ११ अगस्तको स्थानीय हाअीस्कूलके मुख्य-अध्या-पक श्री ध्रुव साहबकी अध्यक्षतामें संपन्न हुआ।

अंकलेश्वरः— स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें अिस केन्द्रके राष्ट्रभाषा परीक्षा-र्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव ता० २२ अगस्तको स्थानीय जीनवाला हाअीस्कूलमें श्री नाथुभाओी धारोलीवालाके सभापतित्वमें मनाया गया। अध्यक्ष महोदयने अपने प्रवचनमें राष्ट्रभाषा सीखनेकी आव-श्यकतापर प्रकाश डाला।

सलाल-सोनासण :— स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें ता० २९ अगस्तको अिस केन्द्रके राष्ट्रभाषा परीक्षोत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव लोकल ऑथोरीटीझके डीरेक्टर श्री ओ० टी० अलमौला साहबकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस अवसरपर साबरकाँठा-जिलेके जिलाधीश श्री काजी साहब, श्री कुरेशी साहब, श्री वैष्णव साहब, श्री गोपालभाअी पटेल, श्री आँबेगाँवकर साहब, श्री कर्णनीक साहब आदि सत्ताधीश सज्जन और काफी संख्यामें नागरिक अुपस्थित थे।

अहमदाबाद और साबरकाँठा जिलेके जिला-केन्द्र निरीक्षक श्री भीखुभाअी जोषीने राष्ट्रभाषाकी आवश्यकतापर प्रभावशाली भाषण दिया जिससे श्रोता-जनोंपर अुसका गहरा प्रभाव पड़ा। अध्यक्ष महोदयने अिसी समयसे हिन्दी सीखनेकी अपनी प्रतिज्ञा प्रकट की।

अहमदाबादः— स्थानीय रा० बा० श्री मगनभाअी करमचन्द गर्ल्सहाअीस्कूलमें श्री रमाबहन मिश्र संचालित राष्ट्रभाषा प्रचार वर्गके परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरण करनेका समारोह ता० १६ सितम्बरको हाअीस्कूलकी आचार्य श्री सत्यवतीबहन महेताकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ।

अिस अवसरपर परीक्षार्थियोंकी ओरसे मनरंजन-कार्यक्रम भी रक्खा गया था।

पोरबन्दरः— स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें ता० ६ सितम्बरको शामके ५ बजे भावसिंहजी हाअीस्कूलमें पंडित चेतरामजीकी अध्यक्षतामें अेक समारम्भ हुआ। श्री पुरुषोत्तमदास थानकी अुपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री अनुपचन्द्रने अपने माधुर्यभरे कण्ठसे "ओ साथी! भारतके गीत गा" गीत गाया। तत्पश्चात् श्री छगनलालभाअी परमारने समितिकी ओरसे सबका स्वागत किया। बादमें विद्यार्थियोंकी हिन्दी वक्तृत्व-स्पर्धा हुअी, जिसमें १५ परीक्षार्थियोंने भाग लिया। स्पर्धामें प्रथम पुरस्कार कुसुमबहन शाहको और दूसरा श्री नाथालालजीको मिला।

पंडितवर्य श्री चेतरामजीने 'राष्ट्रभाषा हिन्दीके स्वरूप' के बारेमें अपना मननीय व्याख्यान दिया।

मांडवी (कच्छ)ः— ता० १३ सितम्बरको स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार मंडलकी वार्षिक बैठक हुअी। जिसमें सन् १९५१-५२ के लिये मंडलका संगठन किया गया। निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुअे।

अध्यक्षः— श्री डा० नौशीर दस्तुर
अुपाध्यक्षः — श्री कुंजलताबहन
मन्त्रीः— श्री शिवलाल धोलकिया
सदस्य भी निर्वाचित हुअे हैं।

वांकानेरः— अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव स्थानीय हाअीस्कूलमें ता० ८ सितम्बरको सौराष्ट्र राज्यके शिक्षामन्त्री श्री घनश्यामभाअी ओझाकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अध्यक्ष महोदयने राष्ट्रभाषाके महत्वपर सुन्दर प्रकाश डाला।

राजकोटः— स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके तत्वावधानमें केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव सौराष्ट्र राज्यके गृह-मन्त्री श्री रसिकलालजी परीखकी अध्यक्षतामें गत् ता० ६ सितम्बरके रोज शामको ५॥ बजे मनाया गया। अिस अवसरपर काफी संख्यामें नगर-जन अुपस्थित थे।

प्रारम्भमें स्थानीय समितिके मन्त्री तथा केन्द्र व्यवस्थापक श्री हरिलालजी पंड्याने वार्षिक कार्य विवरण पढ़ सुनाया। तत्पश्चात् स्थानीय समितिके मन्त्री तथा सौराष्ट्र राज्य विधान सभाके मन्त्री श्री गजाननजी जोषीने श्री अध्यक्ष महोदयको प्रमाण-पत्र वितरण करनेके लिये विनती की और सफल परीक्षार्थियोंका अभिनन्दन किया।

श्री अध्यक्ष महोदयने अपने हाथों परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र दिये और बादमें राष्ट्रभाषाके महत्वपर सुन्दर प्रकाश डालते हुअे कहा कि आगामी ५ वर्षमें हमें राष्ट्रभाषाका प्रश्न हल करना ही होगा। राष्ट्रकी कअी योजनाओंमें राष्ट्रभाषाका स्थान महत्वपूर्ण है।

आखिरमें राजकोटके प्रधान कांग्रेस कार्यकर्ता श्री जयसुखलालभाअी शाहने आभार प्रदर्शित किये।

वेजलपुर (पंचमहाल)ः— अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव ता० १३ सितम्बरको स्थानीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशवकान्त हाओीस्कूलमें सेठ श्री नगीनदास गान्धीकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अिस अवसरपर गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री-संचालक श्री जेठालालजी जोशी, पंचमहाल जिलेके मुख्य कार्यकर्ता श्री जटाशंकरजी पंड्या, जिलेके प्र. प्रचारक व केन्द्र व्यवस्थापक, जिला केन्द्र निरीक्षक श्री दुर्लभजी नायक तथा काफी संख्यामें नागरिक अुपस्थित थे।

सभामें बम्बअी-सरकारकी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी राष्ट्रभाषा कोविदके प्रति विरोधी नीतिके बारेमें प्रस्ताव स्वीकृत किया गया जो अिस प्रकार है।

प्रस्ताव:—"बम्बअी सरकारने सरकारी कर्मचारियोंके लिअे हिन्दीकी अेक परीक्षा अुत्तीर्ण करना आवश्यक बना दिया है और जो परीक्षाअें सूचित की गयी हैं अिनमें राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षाका नमोल्लेख नहीं किया है।

यह सभा सरकारके अिस निर्णयके प्रति खेद व्यक्त करती है और सरकारसे अनुरोध करती है कि सरकार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा संचालित राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षाको सरकारी कर्मचारियोंके लिअे शीघ्रातिशीघ्र मान्य करे।"

तत्पश्चात् राष्ट्रभाषाके कर्मठ कार्यकर्ता श्री जेठालालजी जोशीने राष्ट्रभाषाके महत्वपर मननीय भाषण दिया।

मध्यप्रदेश (विदर्भ नागपुर):—

अमरावती जिला:— हमारे अमरावती जिला राष्ट्रभाषा प्रचारके संगठक श्री भास्कर शास्त्री 'प्रभाकर' ने गत मासमें अचलपुर तहसीलमें प्रचारार्थ दौरा किया। वे केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे मिले। अुन्हें प्रोत्साहित किया। केन्द्रोंके व्यवस्थापकोंने वचन दिया कि वे सक्रिय सहयोग देंगे। अुक्त तहसीलके ग्राम केन्द्रोंसे अबकी बार काफी परीक्षार्थी बैठ रहे हैं। दर्यापुर तहसीलके ७, ८ प्रचार केन्द्रोंमें भी हमारे संगठक भ्रमण कर आये हैं। सभी जगह राष्ट्रभाषाके अभ्यासमें अभिरुचि और परीक्षाओंमें बैठनेकी तैयारी देखी गयी। प्रचारक कुछ आसपासके केन्द्रोंमें भी जाकर वर्गोंमें पढ़ाते हैं।

खामगांव:— खामगांव जनपद सभासे जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको वार्षिक सहायताके रूपमें ५०) रुपया और मलकापुर म्युनिसिपालटीसे २५) रु. प्राप्त हुअे हैं।

मद्रास:—श्री पं० हृषीकेशजी शर्मा, मद्रासकी दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके निमन्त्रण पर ता. २० जुलाअीसे १ अगस्ततक मद्रासमें रहे। वहां अुन्होंने लगभग दो हजार हिन्दी-विद्यार्थियोंके अेक भारी समारोहका सभापति-पद ग्रहण किया जिसका अुद्घाटन मद्रास सरकारके शिक्षामन्त्री माननीय माधव मेनन महाशयने किया। श्री सौ. शारदादेवी शर्मा 'सा० र०' ने पुरस्कार वितरण किया। त्रिचिनापल्ली, श्रीरंगम, मदुरा, रामेश्वर, धनुष्कोटि पर्यंत शर्माजीने राष्ट्रभाषा सम्बन्धी सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा की। दक्षिण भारतके आन्ध्र, तमिल, केरल, कार्नाटक प्रान्तोंमें और मैसोर, कोचीन, त्रावणकोर राज्योंमें हजारों विद्यार्थी हिन्दी पढ़ रहे हैं। मद्रास सभा और अुसकी प्रान्तीय शाखाओंका क्षेत्र विशाल और व्यापक है। पांच वर्ष बादकी यह भाषा-यात्रा बड़ी आनन्दप्रद हुअी।

मण्डला (म० प्र०):—मंडलाके वन प्रदेशोंमें रहनेवाली वन्य जातियोंके सुधारार्थ "वनवासी सेवा मंडल" की ओरसे चलनेवाली तमाम सुधार-प्रवृत्तियोंमें राष्ट्रभाषा-शिक्षणको स्थान दिया गया है। अभी हालमें अुक्त सेवा मंडलके संचालक श्री ना. वि. बापट अेम. अे. बी. टी, मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नागपुर के मन्त्री श्री हृषीकेश शर्मासे मिले और विचार विनिमयके बाद बापटने अेक सक्रिय योजना प्रस्तुत की और अपना सहयोग देनेका वचन दिया। मंडला राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्र बना।

नागपुर:—ता० ६-६-५१ रविवारको शामके ५ बजे, श्रीमान डॉ. सर. भवानी शंकर नियोगीजीकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यक्षतामें प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी वार्षिक बैठक, समितिके कार्यालयमें हुअी। प्रान्तीय मन्त्रीने पिछली बैठककी कार्यवाही पढ़कर सुनाअी जो स्वीकृत हुअी। गवर्नमेंटचार्टर्ड ऑडिटर श्री आम्बेकर आणि कम्पनीसे ऑडिट किया हुआ पिछला सारा आय-व्यय हिसाब-किताब पेश किया गया जो स्वीकृत हुआ। अिसके बाद गत १९४९-५० की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी गयी जो मंजूर हुअी। माननीय ब्रिजलालजी बियाणीके सहयोग अेवं परामर्शसे प्रांतीय मन्त्रीने मं० प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका जो 'विधान' तैयार किया था, जिसे प्रां. समितिके सदस्य आचार्य पन्धे गुरुजीने, प्राध्यापक श्री तिवारीजीने और अध्यक्ष डॉ. नियोगीजीने देखा, निश्चय हुआ कि वर्धा समितिके प्रधान मन्त्रीजी अुसे अेक बार देख लें, फिर अन्तिम स्वीकृतिके लिये वह आगामी बैठकमें पेश किया जाय।

बम्बअी सरकारकी—"कोविद" परीक्षा विरोधी पक्षपात पूर्ण नीतिके प्रति अत्यन्त असन्तोष जाहिर करते हुअे निश्चय हुआ कि बम्बअीके पन्त प्रधान श्री बालासाहेब खेर, स्पीकर श्री कुन्दनमल फिरोदिया और श्री पवाटे डी. पी. आअी. को अेक्सप्रेस तार भेजकर प्रस्ताव भेजा जाय कि बम्बअी सरकारके नौकरोंके लिये अन्य स्वीकृत परीक्षाओंके साथ वर्धाकी "कोविद" को भी मान्य किया जाय।

निश्चय हुआ कि म. प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नागपुरको, (जो विदर्भ नागपुर प्रां. रा. भा. प्र. समितिके नामसे अबतक ज्ञात रही है) सोसायटीज़ रजिस्ट्रेशन् अेक्टके अनुसार यथा शीघ्र रजिष्टर्ड करवा लिया जाय।

और दो महत्त्वपूर्ण निश्चय हुअे कि (१) राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यमें सेवाभावसे संलग्न समस्त अवैतनिक प्रमाणित प्रचारकोंको और परीक्षा-केन्द्र व्यवस्थापकोंको, जो वर्षमें फरवरी-सितम्बरके दो सत्र चलाकर परीक्षार्थी तैयार करते हैं, गत १९५० से "पत्रपुष्प पुरस्कार" प्रान्तीय समितिकी ओरसे दिया जाय और (२) हिन्दी जिनकी मातृभाषा नहीं है अैसे राष्ट्रभाषा-विद्यार्थियोंको प्रोत्साहित करनेके लिये फरवरी सितम्बरमें प्रथम श्रेणीमें प्रथम अुत्तीर्ण प्रारम्भिकको ५) रु., प्रवेशको १०) रु. 'परिचय' को १५) रु., 'कोविद' को २५) रु. और 'राष्ट्रभाषारत्न' सर्वोच्च परीक्षाको ५०) रु. का "रत्न-पुरस्कार" दिया जाय।

प्रचारक व केन्द्र-व्यवस्थापक बन्धु अुक्त बातको ध्यानमें रखेंगे। प्रान्तीय राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति यह दृढ़ आशा रखती है कि विदर्भ नागपुरके समस्त प्रमाणिक प्रचारत बन्धु और केन्द्र-व्यवस्थापक अपने अपने केन्द्रोंमें राष्ट्रभाषाके अधिकसे अधिक संख्यामें विद्यार्थी तैयार करेंगे और अुन्हें अुक्त परीक्षा-प्रथम पुरस्कार-विजेता बनानेका यश प्राप्त करेंगे।

प्रान्तके प्रमाणित प्रचारक अपना अपना छः माही प्रचार कार्य विवरण, १९५१ सितम्बरकी परीक्षाओंके बाद, अपने प्रान्तीय कार्यालको शीघ्रातिशीघ्र भेज दें। छः माही कार्य विवरणका फार्म प्रान्तीय कार्यालयसे प्राप्त किया जा सकता है। फरवरी १९५१ का छः माही कार्य विवरण भी भेजना आवश्यक है।

—हृषीकेश शर्मा, मन्त्री

बम्बअी

हिन्दी महाविद्यालयः—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाके परीक्षा मन्त्रीने सोमवार ता. ३० जुलाअीको विल्सन कॉलेजपर स्थित सभाके महाविद्यालयका निरीक्षण किया तथा विद्यालयके रत्न अेवं कोविद विद्यार्थियोंका ध्यान अिस बातकी ओर खींचा कि अध्ययनशीलताके बिना किसी भी भाषापर अधिकार नहीं प्राप्त किया जा सकता; अतः वे विद्यालयके अनुकूल वातावरणमें रहकर अभ्याससे हिन्दीमें लिखने तथा बोलनेकी अपनी क्षमताको बढ़ावें। अुन्होंने अपने भाषणमें हिन्दी प्रचारके आन्दोलनका खयाल दिया तथा अिस बातपर विशेष जोर दिया कि हिन्दी प्रचारके मूलमें राष्ट्रीयताकी भावना निहित है। अेक भाषाके बिना राष्ट्रका संगठन संभव नहीं। अिसलिये यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरेकका कर्तव्य हो जाता है कि वह राष्ट्रभाषाको जल्द-से-जल्द सीख लें। अन्तमें अुन्होंने विद्यालयकी प्रवृत्तियोंपर संतोष व्यक्त किया।

अखिल भारतीय स्त्री सेवा संघ, भारतीय विद्या भवन (चौपाटी बम्बअी ७):—का प्रथम प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव शनिवार ता. ७ जुलाअी ५१ को शामके ५-३० बजे भारतीय विद्या भवनमें श्री लीलावती मुन्शीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। वर्ग अध्यापक श्री ओश्वरलाल व्यासने वर्गोंका विवरण देते हुये बताया कि आजसे ५ मास पूर्व संघकी ओरसे १२-१५ बहनें परीक्षाके लिये तैयार कर भेजी गयी थीं। वे सभी प्रथम तथा द्वितीय श्रेणीमें अुत्तीर्ण हुअीं। आज संघकी ओरसे कोविदसे लेकर प्रारम्भिक तकके वर्ग चलते हैं। अिनमें ४०-५० बहनें अभ्यास करती हैं।

अुत्तीर्ण छात्राओं तथा बहनोंको प्रमाण-पत्र देनेके बाद श्रीमती लीलावती मुन्शीने अपने भाषणमें कहा कि, राष्ट्रभाषा देशकी अेक बड़ी शक्ति है। राष्ट्रभाषा राष्ट्र अैक्यका अेक बड़ा साधन है। सचमुच हिन्दी ही भारतके सौभाग्यकी बिन्दी है। अिसके बाद श्रीमती मुन्शीने वर्गके कार्यके प्रति बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की।

वर्ग अध्यापकोंमें सर्वश्री शिवनारायण द्विवेदी, अेम. अे. साहित्य रत्न, जयकरणसिंहजी सा. रत्न सूर्यदेव त्रिपाठी व्याकरणाचार्य, ताम्रध्वज प्रसाद, कुमारी सत्यवती जवेरी बी. अे. कोविद तथा कमलिनी वीण वर्ग व्यवस्थापिकाका सहयोग बराबर मिलता रहा। अिनके बलपर तथा श्रेयपर आज ये वर्ग अुन्नति कर प्रतिष्ठाको प्राप्त हुये हैं।

श्रीसूर्यदेव त्रिपाठीने आये हुये मेहमानोंका आभार प्रदर्शन किया। तत्पश्चात् सभा विसर्जित हुअी।

कालबादेवीः— राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्र, दि कालबादेवी बोयझ स्कूलका अुदघाटन रविवार ता. १५-७-५१ को सुबह ९ बजे बम्बअी प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाके मंत्री, श्री कान्तीलालजी जोशीके करकमलों द्वारा हुआ। नये केन्द्रका अुद्घाटन करते समय श्री कान्तीलालजी जोशीने बताया कि कालबादेवी जैसे घने आबादीवाले विभागमें अनेक राष्ट्रभाषा प्रचार केन्द्रोंकी आवश्यकता है। श्री गौरीशंकरजीके अिस प्रयत्नको सफलता प्राप्त होगी अिसमें कोअी संदेह नहीं है। आपने आगे बताया कि अिस विभागमें और भी कुछ केन्द्र खुल जाअेंगे तो अुन्हें प्रसन्नता होगी। आपने अंतमें आशा प्रकट की कि राष्ट्रभाषाके सभी प्रचार केन्द्र सहकारसे काम करें और राष्ट्रभाषा प्रचारको बढ़ाते जायें।

अिसके बाद केन्द्र व्यवस्थापक श्री गौरीशंकरजी जोशी, श्री काशी प्रसादजी द्विवेदी, बम्बअी प्रांतीय राष्ट्रभाषाके अुपमन्त्री श्री हरिहरजी मुकल और श्री विमल शंकरजी शास्त्रीके भाषण हुअे। अिस वक्त स्कूलके हेडमास्टर श्री विजयशंकरजी अुपस्थित थे।

केन्द्र अुपव्यवस्थापिका श्री कमलादेवी मुकलके आभार दर्शन और प्रचारिका कु. पुष्पादेवी कामदारके राष्ट्र-गीतके बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

अन्दमान-निकोबार

पोर्टब्लेअरः— तारीख ९ अगस्त १९५१ को स्थानीय चीफ़ कमिश्नर महोदय श्री अे. के. घोष, आअी. सी. अेस. के सभापतित्वमें नेताजी क्लब हालमें अप्रैल १९५१की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके प्रमाण-पत्र वितरण तथा प्रथम तथा द्वितीय पुरस्कार देनेके लिअे अेक अुत्सव किया गया। अुत्सवमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके अतिरिक्त स्थानीय अफ़सर, महिलाअें तथा अन्य बहुतसे व्यक्ति थे। बालकृष्ण गुप्तने, जो स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अेक सदस्य हैं, गत परीक्षाओंकी संख्यासे तुलना करते हुअे बताया कि परीक्षार्थिओंकी संख्या बढ़ती जा रही है और लोगोंसे हिन्दी प्रचार कार्यमें सहयोग देनेकी अपील की। अुन्होंने अंदमानमें हिन्दीके योग्य तथा अुच्च शिक्षा प्राप्त अध्यापकोंके अभावपर प्रकाश डालते हुअे बताया कि परिचय तथा कोविदकी परीक्षार्थियोंके शिक्षण सुविधाके लिअे समिति अच्छे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक बुलानेकी व्यवस्था कर रही है। अुन्होंने धनाभावपर भी प्रकाश डाला और आशा प्रकट की कि जनता धनसे समितिकी सहायताकर हिन्दी प्रचारके कार्यमें अपना सहयोग प्रदर्शित करेगी।

तत्पश्चात समितिकी अध्यक्षा, श्रीमती मलिका देवी घोष, अेम. अे. ने अपने कर-कमलों द्वारा अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र प्रदान किये और प्रारंभिक, प्रवेश तथा परिचयमें अन्दमानके परीक्षार्थियोंमेंसे प्रथम व द्वितीय आनेवालोंको पुरस्कार दिये।

श्री. घोषने सभापतिपदसे अपने भाषणमें स्थानीय प्रचार समितिको हिन्दी प्रचारके लिअे धन्यवाद दिया तथा अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको बधायी दी तथा आगे भी अध्ययन जारी रखनेको कहा। अुन्होंने बताया कि स्थानीय पुलिस थानोंमें सब कार्य हिन्दीमें आरम्भ हो गया है। और धीरे-धीरे दूसरे सरकारी दफ़्तरोंमें भी अंग्रेजीके स्थानपर हिन्दीमें ही काम किया जाने लगेगा। अिसलिअे, अुन्होंने कहा, दफ्तरोंमें काम करनेवालोंको शीघ्र ही हिन्दी सीख लेना चाहिये। चीफ़कमिश्नर महोदयने अपना भाषण हिन्दीमें ही दिया। सभी लोगोंपर अिसका गहरा प्रभाव पड़ा।

अन्तमें समितिके मन्त्री श्री रत्नमूने दर्शकोंको तथा चीफ़ कमिश्नर महोदयको धन्यवाद दिया और अुत्सव समाप्त हुआ।

मध्यभारत

बैरागढ़ (भोपाल)—अप्रैल ५१ की रा० भा० परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंका प्रमाण-पत्र-वितरणोत्सव स्थानीय मिडिल स्कूलके हेडमास्टर श्री चूहड़मल साहबकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

सर्वप्रथम स्थानीय राष्ट्रभाषा-प्रचारकों— श्री रूपकुमार "घायल" 'कविभूषण' 'रा० भा० रत्न' और श्री सनमुखदास "मित्र" 'रा० भा० रत्न' ने अुपस्थित सज्जनोंको हिन्दीके महत्त्वसे अवगत कराया और अपने भविष्य-निर्माणके लिअे हिन्दीको अपनानेकी अपील की। तदुपरान्त अध्यापक श्री तोतलदासजीका अेक व्याख्यान हुआ और कुछ बहिनोंने अपने मधुर गीत गाये।

अन्तमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरण किये गये। सर्वप्रथम-अुत्तीर्ण व्यक्तियोंको स्थानीय राष्ट्रभाषा-विद्यालयकी ओरसे पुरस्कृत भी किया गया।

मेहगाँव - राष्ट्रभाषा प्रचार समिति मेहगाँवकी ओरसे अप्रैल १९५१ में अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको रविवार १५ जोलाओ १९५१ को अिस केन्द्रका प्रथम प्रमाण-पत्र वितरण अुत्सव लोकसेवा भवन अेवं वाचनालयपर श्री कैलाशनारायण कंटकजी मन्त्री कांग्रेस कमेटीकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अध्यक्ष महोदयके करकमलों द्वारा प्रमाण-पत्र वितरण किये गये व केन्द्रमें प्रथम आनेवालोंको पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप भेंट की गयीं व श्रीमान बाबूरामजी शुक्ल मन्त्री लोक सेवा भवनका 'राष्ट्रभाषा' के सम्बन्धमें अेक जोशीला भाषणोंपरान्त अुत्सव समाप्त हुआ।

अिन्दौर—अिन्दौर केन्द्रने समितिकी स्थापना करके अुसका अुद्घाटन ता० ११-९-५१ को किया। अुद्घाटन कार्य कु० चन्द्रिका देवीने सम्पन्न किया। यह अेक आदर्श है कि भविष्यके होनहार, राष्ट्रके सर्वस्व-बालकों द्वारा अैसे कार्य सम्पन्न कराये जायें तो वे योग्यतम नागरिक बनेंगे।

अिन्दौर—"हमारी संस्कृति और भाषा बहुत ही प्राचीन है। भारतसे ही दूसरे देशोंने शिक्षा ग्रहण की है और भारतसे ही सारे संसारमें सभ्यताका प्रसार हुआ है। जो भी आज हम अपनी संस्कृति, भाषा और अितिहासको भूल गये हैं : किन्तु यह निर्विवाद सिद्ध है कि सारे सभ्य देशोंने भाषा और संस्कृतिकी शिक्षा भारतसे ही ग्रहण की है। बादमें भारतीयोंपर आक्रमण करके धन दौलतके साथ ही संस्कृति, भाषा और अितिहाससे भी वंचित कर दिया। यह स्वयं सिद्ध बात है कि यदि किसीको जन्म जन्मान्तरतक गुलाम बनाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना हो तो अुनकी संस्कृति, भाषा और अितिहास अुनसे छीन लो।

"आज हम स्वतन्त्र हैं, स्वतन्त्र देशकी भाषा पुष्ट और सुलभ हो। वैज्ञानिक दृष्टिसे भी हिन्दी भाषा और सभी भाषाओंसे सुलभ अेवम् अुत्तम है। हिन्दी राष्ट्रभाषा तो घोषित की जा चुकी है किन्तु हमें यह प्रयत्न करना चाहिये कि वह १५ वर्षके पूर्व ५ वर्षमें ही अमलमें आ जावे। हिन्दी केवल राष्ट्रभाषा ही नहीं अन्तर राष्ट्रीय भाषा हो।"

ये शब्द हैं जो मध्यभारत राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संचालक डा० प्रेमसिंहजी चौहान "दिव्यार्थ" ने दिनांक २६-७-५१ को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अिन्दौर केन्द्रके प्रमाण-पत्र तथा पारितोषिक वितरण समारोहमें भाषण देते हुअे कहे।

प्रमाण-पत्र वितरण होनेके पश्चात बालकों द्वारा मनोरंजन कार्यक्रम किया गया जो कि प्रशंसनीय रहा।

अिन्दौरमें राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी परीक्षाअें श्री बी० सी० गंगराडेके तत्वावधानमें अनके साथियोंके सहयोगसे पिछले १॥ वर्षसे चल रही हैं और दिन प्रतिदिन अुन्नति कर रहे हैं। अिन्दौर केन्द्रका भविष्य अुज्वल दृष्टिगोचर होता है।

बंगाल

निम्पुराः—तारीख १ सितम्बर ५१ को आंध्रा अपर प्राअिमरी स्कूलमें माननीय श्री सुधीन्द्र मोहन रोय अिन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स मेदिनापुरके सभापतित्व में प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव धूमधामसे मनाया गया। सभापति महोदयके हाथों प्रमाण-पत्र वितरण तथा प्रथम और द्वितीय अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको पारितोषिक दिये गये। अिस अवसरपर काफी मात्रामें अहिन्दी भाषा भाषी अुपस्थित थे। अुत्सवमें पश्चिम वंग राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रान्तीय संचालक श्री रेवतीरंजन सिन्हाने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाका सक्षेपमें परिचय देते हुअे राष्ट्रभाषाके महत्वपर अपना ओजस्वी भाषण दिया। भाषणमें राष्ट्रभाषाके प्रचार और अुसकी आवश्यकतापर प्रकाश डाला। अिस अवसरपर बालिकाओंने आंध्र देशीय नाट्य "कोलाटम" दिखाया गया और श्री देवेंद्रनाथ शर्माने नाट्यसे प्रसन्न होकर बालिओंको ५ रुपये पुरस्कारके रूपमें दिये।

सर्व प्रथम, केन्द्र-व्यवस्थापक श्री अेस. सत्यनारायणने अपनी केन्द्रकी रिपोर्ट पढ़कर सुनायी। प्रमाणित प्रचारक श्री लक्ष्मीनारायण महापात्रने अपने भाषणमें राष्ट्रभाषाके महत्वपर प्रकाश डाला। बादमें श्री श्रीरंग त्रिपाठी, श्री आर.पी. शर्मा, श्री कमलाकान्त पाठक, श्री डि. प्रेमपति, श्री देवेंद्रनाथ शर्मा और श्री जी. अेस. अेन. मूर्तिने राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें भाषण दिया।

अनन्तर सभापति महोदयने अपने सारगर्भित भाषणमें राष्ट्रभाषाके प्रचारकी आवश्यकतापर प्रकाश डालते हुअे वर्धा समितिके कार्यका अभिनन्दन किया।

राजस्थान

जयपुरः— राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जयपुरका वार्षिकोत्सव व जयपुर केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव ता० २४ अगस्त ५१ को स्थानीय बुलियन हालमें राजस्थानके शिक्षा-मन्त्री माननीय श्री मथुरदासजी माथुरके सभापतित्वमें मनाया गया।

आरम्भमें समितिके अध्यक्ष श्री जवाहिरलालजी जैनने सबका स्वागत करते हुअे समितिके अुद्देश्यपर प्रकाश डाला। समितिके मन्त्री सेवारामने जयपुर समितिके किये गये कार्यसे सबको परिचित किया। अिस अवसरपर राष्ट्रभाषाके विद्यार्थियोंकी भाषण प्रतियोगिताका आयोजन भी था। गत परीक्षाओंमें प्रथम तथा द्वितीय आये परीक्षार्थियों तथा भाषण-प्रतियोगितामें सफल विद्यार्थियोंको अुपाधि तथा पुरस्कार-वितरण का कार्य राजस्थानके पुनर्संस्थापन-मन्त्री श्री युगल किशोरजी चतुर्वेदीकी पत्नी श्रीमती प्रियंवदादेवीके हाथों सम्पन्न हुआ।

शिक्षा-मन्त्री माथुरजीने सभापति पदसे भाषण देते हुअे कहा कि राजस्थानके सब सरकारी विभागोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजीके स्थानपर हिन्दीमें कार्य करनेके प्राथमिक आदेश निकाले जा चुके हैं। जयपुर समितिके कार्यकी प्रशंसा करते हुअे कहा कि समितिकी परीक्षाओंको मान्यता देनेके सम्बन्धमें सरकारी कमेटीकी सिफारिशों को शीघ्र ही कार्यान्वित किया जायगा। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलनके अध्यक्ष श्री रघुवर दयाल त्रिवेदी भी अिस अवसरपर अुपस्थित थे।

अिस अवसरपर राष्ट्रभाषा विद्यार्थियोंके गीत, नृत्य-अेकांकी आदिका मनोरंजक कार्यक्रम था। अिसमें भाग लेनेवाले विद्यार्थियोंको श्री माथुरजी, श्रीत्रिवेदीजी, तथा अन्य संस्थाओंकी ओरसे सात चांदीके पदक प्रदान किये गये।

महाराष्ट्र

अक्कलकोटः—दि० २०-७-५१ जोलाओको अिस केन्द्रमें (सेंट्रल स्कूल अक्कलकोट) मे.बा.म. वाणी, (डे. अे. अिन्स्पेक्टर तथा प्रमाणित प्रचारक)की अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरण समारोह हुआ। प्रथम श्री. रेलेकरजी केन्द्र-व्यवस्थापकने आगत अतिथियोंका सत्कार और प्रास्ताविक भाषण किया। श्री. पतंगे प्र. प्रचारकने कार्य-विवरणकी जानकारी दी। प्र. प्रचारिका श्री. पार्वतीबाओी देशपांडे (हे. मि. गर्लस्कूल)ने राष्ट्रभाषा हिन्दीका महत्व समझाया। श्री. ल. क. पाटील अ. डे. अे. औं. साहबने हिन्दीका कार्य देखकर अभिनन्दन किया।

अन्तमें अध्यक्ष महाशयजीका सुश्राव्य और महत्वपूर्ण भाषण हुआ। और अुनके करकमलोंसे प्रमाण-पत्र वितरण किये गये। आभार-प्रदर्शन और राष्ट्र-गीतके बाद समारंभ समाप्त हुआ।

सोलापुरः—यहाँके राष्ट्रभाषा अध्ययन मन्दिरकी ओरसे अप्रैल १९५१ की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कार देनेका समारोह दि. ५-६-५१ को शामको डी. अे. व्ही. कॉलेजके प्रोफेसर श्री. अवलकजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। समारोहमें १२५-१५० परीक्षार्थी तथा हिन्दीप्रेमी अन्य संस्थाओंके संचालक अुपस्थित थे। अध्यक्षजीका परिचय कर देनेके बाद श्री० निखिलेश काटकरजीने अहवाल पढ़ सुनाया। राष्ट्रभाषा अध्ययन मंदिरसे आजतक ४९८ परीक्षार्थियोंने शिक्षा प्राप्त की है। यहाँ सबको निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। स्व० यमुनाबाओी खरेके नामसे चौदह रुपयोंकी तथा 'सजय' की स्मृतिमें पाँच रुपयोंका पारितोषक पुस्तकके रूपमें सर्व प्रथम आनेवाले परीक्षार्थियोंको दिया गया। श्रीमान् अवलकजीने परीक्षार्थियोंको हिन्दीका महत्व समझाकर राष्ट्रभाषा अध्ययन मंदिरके प्रति सहानुभूति तथा संतोष व्यक्त किया। संचालिका श्रीमती रमाबाओी नातूजीका अपने रा. भा. अध्ययन मंदिरके संबंधमें भाषण हुआ।

अन्तमें आभार प्रदर्शन तथा वन्देमातरम् होकर अुपस्थित परीक्षार्थियोंको तथा अन्य सज्जनोंको रसपान दिया गया।

अुल्लेखनीय बात यह है कि सौ. रमाबाओी नातूजीने स्वयं रा. भा. अध्ययन मंदिरकी स्थापना की। अुसे श्री. निखिलेश काटकरजीकी सहायतासे मुफ़्त शिक्षा देकर चलाती हैं।

शिरपुरः— १५ जुलाओी १९५१ को मराठी स्कूल नं. १ के हॉलमें, अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके 'प्रमाण-पत्र' शिरपुरके माननीय रेशनिंग अफ़सर श्री. अेम्. अेम्. शहाके हाथों वितरण किये गये। श्री. शहाने राष्ट्रभाषाका राजकीय महत्व बतलाया।

बादमें शिरपुरके प्रयत्नशील अेवं अेकनिष्ठ प्रचारक श्री. शर्माजीने आजतकके कार्यकी रिपोर्ट पढ़ सुनायी और प्रचार-कार्यकी बधाअें प्रकट कीं। शिरपुर निवासियोंसे राष्ट्रभाषा प्रचारमें पूरा सक्रिय सहयोग देनेकी प्रार्थना की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामपुरः— 'नामपुर मराठी लड़कियोंकी शाला'में आज दि. २७ ६–५१ को श्रीमती सौ. लक्ष्मीबाअी देशपांडेजीका 'हिन्दी-भाषा क्यों पढ़ें ?' अिसपर अेक छोटासा, सुन्दर भाषण हुआ। श्रीमती मनुबाअी कुलकर्णी हे. मिस्ट्रेसने भी 'हिन्दीका महत्व' अिस विषयपर भाषण दिया। श्रीमान् हरि दामोदर नेर (राष्ट्रभाषा कोविद)ने नामपुर केंद्रकी गत तीन वर्षकी स्थिति बतायी।

श्री. ह. दा. नेर तथा ग. गो. जोशीका कार्य बहुतही सराहनीय है।

सातारा शहर—यहाँके "वर्धा अन्तर्गत रा० भा० विद्यालय" का चौदहवाँ स्नेहसम्मेलन श्री राय-बहादुर सरदार पंडितरावजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अध्यक्षीय भाषणमें श्री सरदार पंडितरावजीने कहा कि हर राष्ट्रकी अपनी भाषा होनी चाहिये। हमारे स्वतन्त्र राष्ट्रकी 'हिन्दी' ही राष्ट्रभाषा और देवनागरी ही राष्ट्र-लिपि है।

अिस अवसरपर श्री वेलमकर, श्री दाणी, श्री देशपाण्डे, तथा अण्णासाहेब करंदीकर आदि वक्ताओंके समयोचित वक्तव्य हुअे।

कोल्हापुरः—श्रीमत् दयानन्द निःशुल्क हिन्दी-विद्यालय—सत्रहवाँ स्नेहसम्मेलन—

स्थानिक आर्यसमाज द्वारा संचालित हिन्दी विद्यालयका सत्रहवाँ स्नेहसम्मेलन रविवार दि० १९ अगस्त १९५१ को सायं. ४॥ बजे मराठीकी ख्यातनाम लेखिका सौ० कमलाबाअी फडकेजी अेम्० अे० की अध्यक्षतामें मनाया गया।

कुमारी नानिवडेकरके सुस्वर स्वागतगीतसे श्रद्धानन्द मन्दिर गूँज अुठा। श्री वि० द० घोटणेजीने सभानेत्रीजीका थोड़ेमें परिचय दिया। विद्यालयके मन्त्री श्री श्यामराव आ. मोरेजीने विद्यालयका वृत्त निवेदन किया।

गर्जनाकार श्री ग. ह. पाध्येजी, म्यु. कौं. श्री मा. श्री. भोसलेजी, श्री शशिशेखर कुलकर्णीजी और पं. ना. शा. वालावलकरजीके भाषणोंके बाद सभानेत्रीजीके शुभ हाथों प्रमाण-पत्र और पुरस्कार वितरण हुआ।

सौ. कमलाबाअीने अपने अध्यक्षीय भाषणमें कहा, "भाषाका महत्व सर्वोपरि है। देशदेशमें, धर्म-धर्ममें, जातिजातिमें अेकता पैदा हो और सहानुभूति प्रकट हो।"

श्री सि. ग. अष्टेकरजीके आभार-प्रदर्शनके बाद शान्तिपाठ होकर कार्यक्रम समाप्त हुआ। अिस समा-रोहमें गर्जनाकार पाध्येजी, लोकसेवकके सम्पादक श्री शं. ब. भोसलेजी, श्री पारखेजी, श्री अेस्. के. कुलकर्णी, श्री वा. शं. तेरवाडकर आदि अुपस्थित सज्जनोंका हिन्दी विद्यालयके प्रबन्धक और करवीर नगरपालिकाके अुपाध्यक्ष श्री दत्ताजीराव शेलकेजीने विद्यालयकी ओरसे स्वागत किया।

रातको मनोरंजनके कार्यक्रममें कुमार घाटगे और कलापुरकी गायन-कलाकी अुज्वल-परम्पराको श्री जयन्त—जमेनीसने सबोंको मोहित किया।

सुबह जो वर्ग संचालनका कार्यक्रम हुआ। अुसका निरीक्षण श्री वि. द. घोटणेजी और श्री सि. ग. अष्टे-करजीने किया था। अिस कार्यक्रममें यशस्वी विद्यार्थी और मनरंजनके कार्यक्रममें भाग लेनेवाले विद्यार्थियोंको विद्यालयके प्रबन्धक श्री दत्ताजीराव शेलकेजीके कर-कमलोंसे पुरस्कार दिये गये और मन्त्री श्री शामराव आ. मोरेजीके आभार प्रदर्शनके बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

ठाणेः— सेठ त्रि. ज. हाअीस्कूल, रा. भा. प्रचार-केन्द्रकी ओरसे ता. १९–८–५१ को अप्रैल १९५१ की रा. भा. प्रचार परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परी-क्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र तथा सर्व प्रथम परीक्षार्थियोंको पारितोषिक प्रदान करनेका केन्द्रका तृतीय समारोह बम्बअी प्रान्तीय रा. भा. प्रचार समितिके मन्त्री श्री.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्तिलाल जोशीजी अेम. अे. की अध्यक्षतामें संपन्न हुआ।

अिस अवसरपर केन्द्र-व्यवस्थापक श्री कृष्णप्रसाद अुपाध्यायने अध्यक्षजीका स्वागत करते हुअे कहा कि बम्बअी सरकारने जिलोंके शासन संचालनको छोड़कर अूपरी कार्य हिन्दीमें ही करनेका निर्णय किया है अिसीलिये हिन्दीको लोकव्यवहारमें प्रयुक्त करना अनिवार्य होगा।

केन्द्र-मन्त्री श्री. वैरजीने अहवाल बताया। कु. राजारानी भाटिया, जो हमारे केन्द्रमेंसे अखिल भारतमें कोविद-परीक्षामें पहली आयीं अुनको तथा अन्य परीक्षाओंमें जो पहले आये अुनको भी जोशीजीके हाथों पुरस्कार दिया गया।

प्रमाण-पत्र वितरणके बाद श्री. जोशीजीने अपने अध्यक्षीय भाषण द्वारा हिन्दी सीखनेकी आवश्यकता और अुपयोगितापर बड़े सुन्दर ढंगसे प्रकाश डाला और केन्द्रमें विद्यार्थियोंकी संख्या खूब बढ़े, विद्यार्थी बड़ी दिलचस्पीके साथ अिसमें सम्मिलित हो अैसी आशा व्यक्त की।

वन्देमातरम्‌के बाद समारम्भ समाप्त हुआ।

येरवडा (पुणें ६):— राष्ट्रभाषा प्रचार वर्ग, येरवडाकी ओरसे दिनांक २०-६-५१ को सायंकालके ठीक ५ बजे स्थानीय से. मि. स्कूल, येरवडामें श्री. बी. आर. गोगटे, बी. अे. बी. टी. डिप्. पी. डे. अेज्यु. अिन्स्पेक्टर फॉर फिजिकल अेज्युकेशन, पुणें विभाग, की अध्यक्षतामें अप्रैल १९५१ की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरण करनेका समारोह बड़ी धूमधामसे मनाया गया। अिस अवसरपर नाट्यछटा संवाद आदिका भी आयोजन किया गया था। प्रारम्भमें केन्द्र-व्यवस्थापक श्री. ग. ल. बरवेजीने अध्यक्ष महोदयका परिचय दिया। अुसके अुपरान्त श्री. ग. रा. वर्धेजीने केन्द्रका अितिवृत्त पढ़ सुनाया।

अिसके अनन्तर सभापति महोदयके शुभ हाथोंसे अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र और पुरस्कार दिये गये और अध्यक्ष महोदयका अुत्साहवर्धक तथा सुश्राव्य भाषण हुआ।

तदुपरान्त प्रचारवर्गके अुत्साही शिक्षक श्री. रा. कृ. सप्रेजीने सभापति महोदय तथा अुपस्थित सज्जनोंके प्रति कृतज्ञता प्रगट की।

वन्देमातरम्‌के बाद समारोह समाप्त हुआ।

खिर्डी:— दि० १६ अगस्त १९५१ गुरुवारको श्री. रा. वा. पाटील (मन्त्री, पू० खानदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति) के शुभहाथों अप्रैल १९५१ की परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र दिये गये। आपने राष्ट्रभाषाका महत्त्व बतलाते हुअे विद्यार्थियोंसे कहा कि प्रमाण-पत्र पानाही केवल राष्ट्रभाषा सीखनेकी कसौटी नहीं है। अुसका अभ्यास कर, बोलचालकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिये। आपने प्रचारकोंसे विचार विनिमय कर वहाँ ग्राम समितिकी स्थापना की—

अध्यक्ष— श्री. गिरधर केशव शेट
अुपाध्यक्ष—,, लोटू रामचन्द्र भिरूड
मन्त्री—,, हरचन्द शिवराम भंगाले
सदस्य—,, चांगदेव गणपत चौधरी
,, भागवत सोमनाथ पाटील
,, काशिनाथ सोनुजी झांबरे
,, माधव लहानू चौधरी
,, येपा गणपत बोंडे
,, मिठाराम शालिग्राम भंगाले
,, देवराम लक्ष्मण पाटील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

परीक्षाफल——सितम्बर '५१ की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं और राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाका परीक्षाफल ता०-२६ नवम्बर '५१ को प्रकाशित होगा।

परीक्षार्थी अपना परीक्षाफल अपने केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे ही प्राप्त करें। वर्धा-कार्यालयसे परीक्षाफल सम्बन्धी पत्रोंका अुत्तर न दिया जा सकेगा।

परीक्षार्थी और प्रचारक कृपया ध्यान दें:—

"राष्ट्रभाषा बोध-२" और "राष्ट्रभाषा बोध-३" के छपकर तैयार होनेमें देर होनेके कारण **सन्' ५२** की परीक्षाओंके लिअे राष्ट्रभाषा 'प्रारम्भिक' और 'प्रवेश' का पाठ्यक्रम निम्न प्रकार रहेगा:—

राष्ट्रभाषा प्रारम्भिक परीक्षा—

१) प्रारम्भिक बोधिनी (परिवर्तित संस्करण)	०-६-०
२) राष्ट्रभाषाकी पहली पुस्तक (फरवरी, अप्रैल और सितम्बरके लिअे)	०-६-०
अथवा	
राष्ट्रभाषा बोध—१ (केवल सितम्बरके लिअे)	
३) राष्ट्रभाषाकी दूसरी पुस्तक (फरवरी और अप्रैलके लिअे)	०-७-६
राष्ट्रभाषा बोध—२ (सितम्बरके लिअे)	
४) अुड़ते जुगनू (रा० भा० प्र० स० वर्धा)	०-८-०
५) रा० भा० का सरल व्याकरण भाग १ (रा. भा. प्र. स.)	०-१०-०

राष्ट्रभाषा प्रवेश परीक्षा

प्रश्न-पत्र १ ला:—गद्य-पद्य—

१. राष्ट्रभाषाकी तीसरी पुस्तक-(फरवरी और अप्रैलके लिअे)	०-७-६
राष्ट्रभाषा बोध—३ (सितम्बरके लिअे)	
२. गुलदस्ता भाग १ (१९४७ के बादका संस्करण)	०-६-०
३. अेकाँकी	

प्रश्न-पत्र—२ रा (पत्र, निबन्ध, व्याकरण, मुहावरे तथा अनुवाद)

१. कहानी संग्रह भाग १ (परिवर्तित संस्करण '४९)	०-६-०
२. सरल रचना और पत्र लेखन (रा. भा. प्र. स. वर्धा)	०-६-०
३. राष्ट्रभाषाका सरल व्याकरण भाग १ (प्रचार समिति, वर्धा)	०-१०-०
४. मुहावरे और कहावतें (प्रचार समिति, वर्धा)	०-१२-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित-प्रचारक

प्रान्त	प्रचारकका नाम	क्रमसंख्या	स्थान
अुत्कल	श्री गौराँग खाड़ंगा शर्मा	२६७६	मजुंका
मध्यभारत	,, विनोद कुमार शर्मा	२६७७	मन्दसौर
,,	,, भँवरलाल 'मधु'	२६७८	नीमच सिटी
,,	,, चन्द्रशेखर शंकरलाल तिवारी	२६७९	अिन्दौर
,,	,, रामबहादुरलाल श्रीवास्तव	२६८०	,,
,,	,, देवीलाल चिंरोजीलाल श्रीवास्तव	२६८१	,,
,,	,, गणपतीप्रसाद गोपालप्रसाद बोहरे	२६८२	,,
गुजरात	,, पं. रामचन्द्र जगदानन्द झा.	२६८३	अहमदाबाद
,,	,, रमेश नटवरलाल बेन्कर	२६८४	,,
,,	,, कौशिकचन्द्र मगनलाल मुनशी	२६८५	,,
,,	,, सुशीला अमृतलाल परीख	२६८६	,,
,,	,, शास्त्री गोवर्द्धनप्रसाद बंसीलाल व्यास	२६८७	,,
,,	,, नटवरलाल पुरुषोत्तमदास गांधी	२६८८	,,
,,	,, डाहीबहन गिरधरलाल द्विवेदी	२६८९	,,
,,	,, सोनी मुकुन्द बीरजीभाअी	२६९०	,,
,,	,, हीरालाल केशवलाल गज्जर	२६९१	,,
,,	,, रश्मिकान्त जेठालाल क्षत्री	२६९२	,,
,,	,, रमणलाल केशवलाल शाह	२६९३	पेटलाद
,,	,, चन्द्रकान्त नटवरलाल शाह	२६९४	,,
,,	,, राजगौर जीतेन्द्र लक्ष्मीनारायण	२६९५	,,
,,	,, मधुमालती जीवाभाअी पटेल	२६९६	बालासिनोर
,,	,, जेठालाल अंबालाल त्रिवेदी	२६९७	विसनगर
,,	,, भाअीलाल भाअी अम्बालाल पटेल	२६९८	खेड़ा
,,	,, नवनीतलाल चुनीलाल रावल	२६९९	लुणावाड़ा
,,	,, धीरजलाल वासुदेव पुरोहित	२७००	जामनगर
,,	,, नन्दलाल अमृतलाल महेता	२७०१	,,
,,	,, जगजीवन धनेश्वर व्यास	२७०२	राजकोट
,,	,, कान्ताबहन मगनलाल बोरा	२७०३	विरमगाँम
,,	,, केरबानु हिराजी बीमादलाल	२७०४	नवसारी
,,	,, मगनभाअी नारायणभाअी पटेल	२७०५	मिठापुर
,,	,, पूसाराम मिश्र	२७०६	आबूरोड़
,,	,, अम्बूभाअी लल्लुभाअी पटेल	२७०७	कोसिन्द्रा
महाराष्ट्र	,, शान्ताराम दगडू शिम्पी	२७०८	नशिराबाद
,,	,, पोपट माधव भामरे	२७०९	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
महाराष्ट्र	श्री भीमाशंकर बलिराम कुलकर्णी	२७१०	नशिराबाद
,,	,, धनाजी कृष्णा राणे	२६११	जलगाँव
,,	,, मोरोपंत पांडुरंग शिंपी	२७१२	देवलाली कैम्प
,,	,, महादेव नारायण पटवर्धन	२७१३	रत्नागिरी
,,	,, शंकरराव बापूराव थोरावडे	२७१४	विटे
,,	,, अरविन्द भालचन्द्र ओक	२७१५	पुणें
,,	,, कृष्णाजी गंगाधर दिवाकर	२७१६	,,
,,	,, मर्चेन्ट रमणिकान्त गुलाबचन्द	२७१७	,,
,,	,, मधुकर सिद्धेश्वर जोशी	२७१८	,,
,,	,, दत्तात्रय गंगाधर काले	२७१९	,,
,,	,, नागेश गंगाधर दिवाकर	२७२०	,,
,,	,, माधव दगडू पाटील	२७२१	चोपडें
,,	,, महादेव पुन्नापा पाटील	२७२२	येल्लूर
,,	,, कु. मन्दाकिनी गजानन थत्ते	२७२३	सातारा
,,	,, भालचन्द्र केशव बोकील	२७२४	,,
,,	,, श्रीराम शंकर दाणी	२७२५	,,
,,	,, वामन लालू फालक	२७२६	दम्बडीं
बम्बअी	,, चंडीप्रसाद डौंडियाल	२७२७	बोरीवली
,,	,, परमानन्द हीरानन्द रामचन्दानी	२७२८	खार
,,	,, मस्तराम कपूर	२७२९	कुर्ला
,,	,, बालाजी विष्णु कामत	२७३०	परेल
,,	,, सुब्बा कु. सुवर्ण	२७३१	बम्बअी २
,,	,, रामचन्द्र सोमाजी सावन्त	२७३२	सान्ताक्रुझ
,,	,, सी अे. राजगोपालचारी	२७३३	माटुँगा
,,	,, लक्ष्मणदास चुनीलाल शाह	२७३४	बम्बअी ४
,,	,, रेवाशंकर गणपतराम दुबे	२७३५	बम्बअी २
,,	,, रामाधार सिंह	२७३६	सान्ताक्रुझ
,,	,, जमनाबहन भवानजी रुपारेल	२७३७	,,
,,	,, त्रिच्यूर वेन्कटेश्वर सुब्रह्मण्यन	२७३८	घाटकोपर
,,	,, गिरिजा भाअीशंकर व्यास	२७३९	,,
,,	,, पाठक नानालाल हरिशंकर	२७४०	मालाड
,,	,, देवीशंकर दुबे	२७४१	,,
,,	,, शेठ लीला धीरजलाल	२७४२	कांदीवली
,,	,, कुमारी राधा तोलाराम तन्नानी	२७४३	बम्बअी १
,,	,, महादेव प्रसाद मौर्य्य	२७४४	मालाड
,,	,, पी. गोविन्दस्वामी	२७४५	माटुँगा
,,	,, नारायण पुंडलिक अंधारी	२७४६	गिरगांव
,,	दलपतराम कल्याणजी अुपाध्याय	२७४७	बोरीवली

(शेष कवर पृष्ठ २ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अहमदाबाद

के तत्त्वावधानमें

हिन्दीकी साहित्यिक और

राष्ट्रभाषा-प्रचारकों अेवं परीक्षार्थियोंके अुपयोगकी

अर्ध-वार्षिक पत्रिका

"राष्ट्रवीणा"

संपादक—जेठालाल जोषी, संचालक, गुजरात प्रां. रा. भा. प्र. समिति

प्रबंध-संपादक—प्रा. रणधीर अुपाध्याय, अेम. अे., 'साहित्य-रत्न'

प्रथमांकके कुछ लेखक—

प्रा. पं. सुखलालजी

श्री. पं. रविशंकरजी रावल

श्री. पं. सीतारामजी चतुर्वेदी

श्री. पं. काशीनाथजी त्रिवेदी

श्री. पं. दौलतरामजी शर्मा

श्री. प्रा. रा. ब. आठवलेजी

पत्रिकाका वार्षिक मूल्य २ रु० । केन्द्र-व्यवस्थापकोंको और प्रचारकोंको आधे मूल्यमें पत्रिका मिलेगी ।

शीघ्र मँगायें । शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ अुठायें ।

—संपादक 'राष्ट्रवीणा'

मुद्रक—गुरुराम शर्मा, राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी

राष्ट्रभाषा

सन्देश

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी

मैं ज्योति जगाने आया हूँ
जग-जीवनमें जन-जीवनमें,
नव-ज्योति जलाने आया हूँ,
मैं ज्योति जगाने आया हूँ।
लक्ष्मीकी पूजामें मानव
मानवको भूल रहा प्रतिक्षण,
पूजाकी वेदीपर निशि-दिन
चढ़ता रहता यौवन-जीवन,
मानवको मानव-पूजाकी
मैं याद दिलाने आया हूँ।
मैं ज्योति जगाने आया हूँ॥

—श्री विपिन, 'नवभारत'

नवम्बर १९५१

ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मुखपत्र
संपादक
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

विषय-सूची

१.	कोविद परीक्षाकी मान्यता	१
२.	संज्ञाके पाँच प्रकार	३
३.	सर्वनामके छः प्रकार	४
४.	कृदन्त	५
५.	प्रान्तीय हलचल	७
६.	परीक्षा विभाग	१६

--कोविद अुपाधि शालके सम्बन्धमें सूचना--

परीक्षा समितिकी गत बैठकमें कोविद अुपाधि शालके आकारको बदलनेका निश्चय हुआ है। नयी शाल २॥ गज × ४५ अिंचकी होगी। और अुसके लिये शाल चाहनेवाले परीक्षार्थीको ६) रु० देना होगा।

शालके तैयार करानेमें काफी समय लगनेवाला है अिसलिये जब-तक 'राष्ट्रभाषा'में शाल तैयार हो जानेकी सूचना प्रकाशित न हो तब-तक शालके लिये शुल्क न भेजा जाय। —परीक्षा-मंत्री

योग्य हिन्दी-शिक्षक चाहिअे

विदर्भ नागपुर प्रान्तके निवासी 'कोविद' परीक्षा अुत्तीर्ण प्रचारक भाअी-बहन यदि माध्यमिक शालाओंमें हिन्दी-शिक्षकका काम करना चाहते हैं तो वे तुरन्त नीचे लिखे पतेपर पत्र लिखें। पत्रके साथ कोविद और मैट्रिकके प्रमाण-पत्रकी नकल, हिन्दी शिक्षणका अनुभव, मराठीका ज्ञान, अन्य योग्यताअें, अुम्रकी जानकारी तथा दो प्रतिष्ठित सज्जनोंके प्रमाण-पत्र अवश्य भेजें। शीघ्रता करें।

—संचालक
मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
धनतोली, नागपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

वर्ष ११] वर्धा, नवम्बर— १९५१ [अंक १

“कोविद परीक्षाकी मान्यता”

बम्बअी सरकारने ता० ५ सितम्बरके रोज अेक निवेदन द्वारा बम्बअी राज्यके सरकारी कर्मचारियोंकी हिन्दी योग्यताके बारेमें जिन परीक्षाओंको आवश्यक माना है; अुनमें ‘राष्ट्रभाषा-कोविद’ परीक्षाका समावेश नहीं किया गया है।

सरकारके अिस दुखद निर्णयके प्रति हमारे गुजरात प्रान्तके लगभग ६०० केन्द्र-व्यवस्थापकों, ७५० प्रचारकों और लाखों राष्ट्रभाषाके परीक्षार्थियोंकी ओरसे अुग्र विरोध प्रदर्शित करते हुअे अनेक पत्र और प्रस्ताव हमें हररोज मिल रहे हैं।

कुछ केन्द्रोंके प्रस्ताव अुल्लेखनीय और महत्वपूर्ण होनेके कारण स्थानाभावसे हम अुन केन्द्रोंकी नामावली मात्र दे रहे हैं, जो अिस प्रकार है।

अहमदाबाद, नडियाद, आणन्द, वड़ौदा, सूरत, नवसारी, बलसाड, बिलीमोरा, अंकलेश्वर, वाँसदा, महेसाणा, चाणस्मा, पाटण, पाटडी, राजकोट, पोरबन्दर, भावनगर, जूनागढ, जामनगर, वड़िया, पालीताणा, सावरकुंडला, हलवद, द्वारका, प्रभासपट्टण, लखतर, वल्लभीपुर, अंजार, बिहडा, भुज, महेमदाबाद अित्यादि।

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी अेक विशेष बैठक ता० ७।१०।५१ रविवारके रोज समितिके कार्यालयमें मध्यान्हके ४ बजे श्री बेचरदासजी बी. अे. अेल. अेल. बी. वकील (अध्यक्ष नडियाद राष्ट्रभाषा प्रचार समिति) की अध्यक्षतामें हुअी थी। अिसमें सौराष्ट्र, कच्छ, अुत्तर गुजरात, अहमदाबाद, खेडा, वडौदा, भरूच, सूरत और पंचमहाल जिलेके, समितिके सदस्य और जिला केन्द्र निरीक्षक अुपस्थित थे।

समितिकी अिस विशेष बैठकमें सर्वसम्मतिसे जो प्रस्ताव स्वीकृत किये गये हैं, वे अिस प्रकार हैं—

प्रस्ताव १—बम्बअी सरकारने अपनी ५ सितम्बर १९५१ की घोषणा द्वारा सरकारी नौकरोंकी योग्यताके लिये जिन परीक्षाओंको आवश्यक माना है, अुनमें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा आयोजित तथा बम्बअी राज्यमें गुजरात, महाराष्ट्र तथा बम्बअी प्रान्तीय समितियों द्वारा संचालित “राष्ट्रभाषा कोविद”

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षाका समावेश नहीं किया है। अिस दुखद निर्णयका गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी यह सभा अुग्र विरोध करती है। विशाल जन समुदायने कोविदको स्वीकार किया है। सैंकडों सेवा भावी भाअी बहनोंने अिसका प्रचार किया है। पंद्रह वर्षतक जनताके सहकारसे और प्रचारकोंके सेवा कार्यसे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने अेक अैसा विस्तृत क्षेत्र तैयार किया है कि जिसके लिये प्रजा और सरकार दोनों गौरव अनुभव कर सकते हैं। अिस भगीरथ प्रयासके फलस्वरूप समितिने लाखों विद्यार्थियोंको राष्ट्रभाषा सिखाया है।

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी यह सभा मानती है कि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा जैसी भारत व्यापी संस्थाकी परीक्षाकी बम्बअी सरकार अवगणना करे यह राष्ट्रीय दृष्टिकोणसे जरा भी सुसंगत नहीं है।

अिस सभाका दृढ अभिप्राय है कि कोविद परीक्षा राष्ट्रभाषा प्रचारकी सफल प्रवृत्तिका प्रतीक है। तथा अिसका अभ्यास क्रम आन्तर-प्रान्तीय व्यवहारकी भाषाके सर्वथा अनुकूल है।

यह सभा सरकारसे आग्रह करती है कि सरकार अैसी परीक्षाको सरकारी कर्मचारियोंके लिये स्वीकार की गयी परीक्षाओंकी नामावलीमें अिसका नाम न रखनेका अपना निर्णय बदलेगी और शीघ्र कोविदको न्याय्य-स्थान देगी।

प्रस्ताव २—गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका आग्रह है कि बम्बअी सरकारकी ओरसे निकटके भविष्यमें बननेवाली हिन्दी कमेटीमें गुजरात भरमें बड़े पैमानेपर राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य करनेवाली गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको योग्य प्रतिनिधित्व दिया जाय।

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति अपने ६०० से अधिक प्रचार केन्द्रों द्वारा तथा लगभग १००० प्रचारकोंके जरिये हर साल ८०-६० हजार राष्ट्रभाषाके परीक्षार्थियोंको तैयार करती है। अिसलिये अुसका यह आग्रह अधिकार पूर्ण है।

समितिका प्रतिनिधित्व करनेवाले नीचे लिखे व्यक्तियोंके नाम हिन्दी कमेटीमें लिये जानेके लिये समिति सिफारिश करती है।

(१) श्री जेठालाल जोशी,
(२) श्री मोहनलाल भट्ट,
(३) श्री प्रो. अेस. आर. भट्ट,
(४) श्री छगनभाअी का. पटेल.

प्रस्ताव ३—बम्बअी सरकारने अन्तर-प्रान्तीय व्यवहारके लिये राष्ट्रभाषा हिन्दीको स्वीकार किया है, अिसलिये गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी यह सभा सरकारको हार्दिक धन्यवाद देती है।

अहमदाबाद शहरके राष्ट्रभाषा प्रचारकोंका अेक स्नेह सम्मेलन ता० १०।१०।५१ के रोज रातको ८ बजे राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके कार्यालयमें हुआ। अिस सम्मेलनमें शहरके करीब अेक सौसे भी अधिक प्रचारक भाअी-बहन सम्मिलित हुअे थे। अिसमें निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत किये गये।

प्रस्ताव १—ता० ३० सितम्बर १९५१ के रोज गुजरात विद्यापीठमें मिली हुअी हिन्दुस्तानी परीक्षा समितिने हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी वर्धा समितिके कार्यको संकुचित बताते हुअे तथा सरकार द्वारा वर्धाकी कोविद परीक्षाको मान्य न रखनेपर हार्दिक प्रसन्नता प्रगट करते हुअे सरकारको बधाअी देनेका प्रस्ताव किया है। अिस कार्यको अहमदाबाद शहरके प्रचारकोंकी यह सभा अत्यन्त संकुचित अेवं हेय समझती है और अपना स्पष्ट अभिप्राय व्यक्त करती है कि—

पूज्य बापूजीने सन् १९१८ से १९४५ तक हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें रहकर समस्त देशको राष्ट्रभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरीका संदेश दिया है। सन् १९३६ में पूज्य बापूजी तथा श्रद्धेय टण्डनजीकी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञाके ५ प्रकार

श्री. ह. शि. सहस्रबुद्धे, प्रमाणित प्रचारक, बम्बअी

संज्ञाकी परिभाषा:—जो विकारी शब्द किसी का नाम होता है अुसे संज्ञा कहते हैं। (किसी वस्तुको संज्ञा कभी नहीं कहते)

(१) जातिवाचक:—[अेक जातिके सभी पदार्थोंका बोध। घोड़ा, कुत्ता, नगर, नदी, पहाड़, पुस्तक, मनुष्य, लड़की, विद्यार्थी, कवि, आदि]

(२) नाम (व्यक्ति) वाचक:—[केवल अेक ही प्राणी या पदार्थका बोध।]

गंगा, सिन्धु, हिमालय, विन्ध्य, हरिद्वार, रामेश्वर, पटना, भारत, शेक्सपियर, आदि।

(३) भाववाचक:—[किसी पदार्थके गुण, स्वभाव, दशा, व्यापार आदिका बोध]

बचपन, झुकाव, शत्रुत्व, कठोरता, सर्दी, चतुराअी, पुकार, मिठाअी, बुड़ापा, थकावट, धैर्य, चिल्लाहट, आदि।

(४) समूहवाचक:—[प्राणियों वा पदार्थोंके समूहका बोध।]

सभा, भीड़, झुंड, गुच्छा।

(५) द्रव्य या पदार्थवाचक:—[किसी द्रव्य या पदार्थका बोध।]

घी, आटा, सोना, पानी, दूध आदि।

[वास्तवमें समूहवाचक और द्रव्यवाचक जातिवाचक ही के अंतर्गत हैं।]

निम्नलिखित शब्दोंसे भाववाचक संज्ञाअें बनती हैं:—

१. जातिवाचकसे — लड़का-(लड़कपन), मनुष्य-(मनुष्यता), शत्रु- शत्रुत्व, दास-(दास्य, दासता, दासत्व), चोर-(चोरी), पंडित (पांडित्य)।

२. विशेषणसे:—चतुर (चतुराअी, चातुर्य), बुद्धिमान (बुद्धिमानी), मूर्ख-(मूर्खता, मूर्खत्व), भद्दा-(भद्दापन), गर्म (गर्मी), लघु-(लघुता, लघुत्व), मीठा (मिठास)।

३. क्रियासे:—कूदना—(कूद), पुकारना—(पुकार, लड़ना-(लड़ाअी), सीना (सिलाओ), घबराना-(घबराहट), सजाना-(सजावट), लेना-देना-(लेन-देन), हँसना-(हँसी)।

अव्ययसे:—सम (समता), सदृश-(सदृशता, सादृश्य), मिथ्या-(मिथ्यात्व, मिथ्यापन)।

संज्ञाके सम्बन्धमें विशेष:—

१ कुछ जातिवाचक संज्ञाअें व्यक्तिवाचकके समान:—देवी-(दुर्गा, दाअू-(बलदेव), पुरी-(जगन्नाथ), संवत्—(विक्रमी संवत्)।

२ व्यक्तिवाचक संज्ञाअें जातिवाचक होती हैं:—आल्प्स् युरोपका हिमालय (अूँचा पहाड़) है। शेक्स्पियर यूरोपके कालीदास (महाकवि) थे।

३ भाववाचक संज्ञा अेकसे अेक अधिक भाव प्रकट करते समय जातिवाचक होती हैं:—कठिनाअियों का सामना करो।

४ विशेषण तथा क्रियाविशेषणका प्रयोग संज्ञाकी भाँति:—छोटोंकी भी बात माननी चाहिये। बड़ोंका कहा मानो। आगे-पीछेकी सोचकर बोलो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वनामके ६ प्रकार

श्री ह. शि. सहस्रबुद्धे, प्रमाणित प्रचारक, बम्बअी

१ पुरुषवाचकः—मैं, तू, आप, वे (तीनों पुरुषोंके लिये)

२ निश्चयवाचकः—वह, यह, सो (निश्चित पदार्थका बोध)

३ अनिश्चयवाचकः—कोअी, कुछ, कअी (अनिश्चित पदार्थका बोध)

४ सम्बन्धवाचकः—जो (संज्ञासे सम्बन्ध सूचित करनेवाला)

५ प्रश्नवाचकः—कौन, क्या (प्रश्नका बोध)

६ निजवाचकः—आप (स्वयं या निजका बोधक)

[निजवाचक 'आप' पुरुषवाचक 'आप' से भिन्न है]

१) निजवाचक 'आप' अेक ही रूपमें दोनों वचनोंमें आता है। (२) तीनों पुरुषोंमें प्रयोग होता है। (३) सदा अन्य सर्वनामोंके साथ आता है।

२) 'आप' में सम्बन्धसूचक 'ना' प्रत्यय लगाकर आरम्भका 'आ' कार ह्रस्व कर देनेसे बनाया हुआ रूप 'अपना' है। अिस रूपका सार्वजनिक अर्थमें कर्ता का अेकवचन रूप नहीं आता। 'के लिये' बदले केवल 'लिये' लगाते हैं तथा सम्बन्धकारकके चिन्ह नहीं लगाते। स्वयं 'ना' सम्बन्धसूचक है।

१) संज्ञाके समान सर्वनाममें भी वचन और कारकादिके कारण अुसका सामान्यरूप (विकृतरूप) होता है। केवल 'हम' 'तुम' 'आप' (म. पु.) का विकृतरूप नहीं होता। अुन्हींको कारकके चिन्ह लगाये जाते हैं:—हमारा, तुम्हारा।

२) सर्वनामका कोअी नियत लिंग नहीं है। अिसलिये लिंगके कारण अुसके मूलरूपोंमें कोअी विकार नहीं होता।

३) जिस संज्ञाके स्थानमें सर्वनाम आता है अुसीके अनुसार अुसके लिंग और वचन होते हैं।

४) सर्वनाममें केवल सात कारक होते हैं। सम्बोधन कारक नहीं होता।

५) 'मैं' और 'तू' में कर्ताकारक (अप्रधान प्रथमा) का 'ने' चिन्ह लगाते समय अुनके रूप 'मैंने', 'तूने' अिसी प्रकार होते हैं।

६) सर्वनामोंके विकृतरूपः—मैं (मुझ); तू (तुझ); वह (अुस); वे (अुन, अुन्हों); यह (अिस); ये (अिन, अिन्हों); जो (जिस); जो (जिन, जिन्हों), कौन (किस), कौन (किन, किन्हों), कोअी किसी), कोअी (किन्हीं)

७) समाचार पत्रका सम्पादक, बड़ा अधिकारी, राजा, महाराजा तथा बहुतोंकी ओरसे बोलनेवाला खुदके लिये 'हम' का प्रयोग करता है।

८) हिन्दीमें साधारण 'तुम' का ही प्रयोग होता है। तिरस्कार, निरादर, क्रोध, या प्रेममें 'तू' का प्रयोग करते हैं।

९) सर्वनामका प्रयोग कभी कभी अव्ययकी भाँति होता है।

१०) 'आपस' शब्द 'आप' ही का अनियमित रूप है। अिसके रूप केवल सम्बन्धकारक और अधिकरण कारकमें आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृदन्त

श्री ग. रा. वर्धे, प्रमाणित प्रचारक, पुणें

कृदन्तकी परिभाषाः–– क्रियाके जिन रूपोंका अुपयोग दूसरे शब्द-भेदोंके समान होता है, अुन्हें कृदन्त कहते हैं।

हिन्दीमें रूपके अनुसार कृदन्त दो प्रकारके होते हैं—(१) विकारी और (२) अविकारी। विकारी कृदन्तोंका प्रयोग बहुधा संज्ञा वा विशेषणके समान होता है। अविकारी कृदन्तोंका प्रयोग क्रियाविशेषण अथवा सम्बन्धसूचकके समान होता है।

विकारी कृदन्तः— (१) क्रियार्थक संज्ञा (२) कर्तृवाचक संज्ञा (३) वर्तमानकालिक कृदन्त (४) भूतकालिक कृदन्त।

१. धातुके अन्तमें 'ना' जोड़नेसे क्रियार्थक संज्ञा बनती है। अुदा०—कर+ना=करना; दौड़+ना=दौड़ना।

२. क्रियार्थक संज्ञाके विकृत रूपके आगे 'वाला' लगानेसे कर्तृवाचक संज्ञा बनती है।

अुदा०—गाने+वाला=गानेवाला।
पढ़ने+वाला=पढ़नेवाला।

३. धातुके अन्तमें 'ता' लगानेसे वर्तमानकालिक कृदन्त बनता है।

अुदा० —गा+ता=गाता (गाता आदमी)
बह+ता=बहता (बहता पानी)

[वर्तमानकालिक कृदन्तका अुपयोग प्रायः विशेषणके समान होता है। अुसका रूप भी आकारान्त विशेषणके समान बदलता है।]

४. भूतकालिक कृदन्त धातुके अन्तमें 'आ' जोड़नेसे— बनता है।

अुदा०—कहा+आ=कहा। पढ़+आ=पढ़ा।

भूतकालिक कृदन्तकी रचना निम्नलिखित नियमों के अनुसार होती है।

(अ) अकारान्त धातुके अन्तमें 'अ' के स्थानमें 'आ' करनेसे।

अुदा०—सुन—सुना (सुनी बात)
चुन––चुना (चुना लेख)

(आ) अेकाक्षरी धातुओंमें 'या' जोड़ा जाता है।

अुदा०—ला—लाया। खो––खोया।
खे—खेया।

(अि) धातुके अन्तमें 'ई' हो तो अुसे ह्रस्व कर देते हैं।

अुदा०—पीना––पिया। जीना—जिया।
सीना—सिया।

(अी) अूकारान्त धातुके 'अू' को ह्रस्व करके अुसके अन्तमें 'आ' लगाते हैं।

अुदा०—चूना—चुआ। छूना—छुआ।
अपवाद— होना—हुआ। करना—किया।
जाना—गया। लेना—लिया।
देना—दिया।

भूतकालिक कृदन्तका अुपयोग प्रायः आकारान्त विशेषणके समान होता है।

अुदा०—मरा घोड़ा। गिरा घर।
सुनी बात। लिखी चिट्ठियाँ

सूचना—१. वर्तमान कालिक और भूतकालिक कृदन्तोंके साथ प्रायः 'हुआ' लगाते हैं और अिसमें मूल कृदन्तोंके समान रूपान्तर होता है।

अुदा०—दौड़ता हुआ घोड़ा। देखी हुअी वस्तु।
चलती हुअी गाड़ी। मरे हुअे प्राणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. कभी कभी वर्तमानकालिक और भूतकालिक कृदन्त संज्ञाके समान प्रयुक्त होते हैं।

अुदा०—मरता क्या न करता।

डूबतेको तिनकेका सहारा।

हाथका दिया।

अविकारी कृदन्तः—(१) पूर्वकालिक (२) तात्कालिक (३) अपूर्ण क्रियाद्योतक (४) पूर्ण क्रियाद्योतक

१. पूर्वकालिक कृदन्त धातुके रूपमें रहता है अथवा धातुके अन्तमें 'के' 'कर' अथवा 'करके' जोड़नेसे बनता है।

अुदा०—जाके, जाकर, जा करके।

खाके, खाकर, खा करके।

[अिस कृदन्तसे बहुधा मुख्य क्रियाके पूर्व होनेवाले व्यापारकी समाप्तिका बोध होता है।]

२. वर्तमानकालिक कृदन्तके 'ता' को 'ते' आदेश करके अुसके अन्तमें 'ही' जोड़नेसे तात्कालिक कृदन्त बनता है।

अुदा०—करतेही, बोलतेही, दौड़तेही।

[अिससे मुख्य क्रियाके साथ होनेवाले व्यापार की समाप्तिका बोध होता है]

३. अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त भी तात्कालिक कृदन्तके समान 'ता' को 'ते' आदेश करनेसे बनता है; परन्तु अुसके साथ 'ही' नहीं जोड़ा जाता।

अु०—पुस्तक पढ़ते नींद आ गयी !

रमेश खेलते थक गया।

[अिससे मुख्य क्रियाके साथ होनेवाले व्यापार की अपूर्णता सूचित होती है]

४. भूतकालिक कृदन्तके अन्त्य 'आ' को 'ए' आदेश करनेसे पूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त बनता है।

अुदा०—मैं बिना सोचे अुत्तर दूँगा।

अिस कृदन्तसे बहुधा मुख्य क्रियाके साथ होनेवाले व्यापारकी पूर्णताका बोध होता है।

(पृष्ठ २ का शेषांश)

प्रेरणासे महामान्य राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रबाबूकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी स्थापना हुअी। अिसी समितिके तत्वावधानमें देशमें असम, बंगाल, अुड़ीसा, राजस्थान, दिल्ली, मध्यभारत, गोआ, गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बअी, विदर्भ-नागपुर, हैद्राबाद, कर्नाटक, आन्ध्र तथा विदेशमें लंका, अफ्रीका, अंडमनमें आज राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य अविरत चल रहा है।

आज करीब दो लाख भाअी-बहन प्रतिवर्ष अिन परीक्षाओंमें बैठ रहे हैं। और लगभग २५०० प्रचारक सम्पूर्ण पश्चिम, पूर्व तथा मध्य-भारतमें राष्ट्रभाषाके प्रचार-द्वारा राष्ट्रीयताका संदेश नगर-नगर और घर-घर फैला रहे हैं। अिस कार्यको कुछ थोड़ेसे अिने गिने हिन्दुस्तानीके आग्रही लोग संकुचित कार्य कर रहे हैं, अिससे हमें बड़ा दुःख है।

प्रस्ताव २—बम्बअी सरकारने सरकारी नौकरों की हिन्दी योग्यताके लिये जिन परीक्षाओंको आवश्यक माना है, अुसमें राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षाका समावेश नहीं किया गया है, अिस दुखद निर्णयका यह सभा अुग्र विरोध करती है, । यह सभा मानती है कि कोविद परीक्षाका अस्वीकार करना यह राष्ट्रीय दृष्टिकोणसे जरा भी सुसंगत नहीं है।

यह सभा सरकारसे आग्रह करती है कि वह कोविद परीक्षाकी सरकारी कर्मचारियोंके लिये स्वीकार की गयी परीक्षाओंकी नामावलीमें सम्मिलित करके कोविदको न्याय पूर्ण स्थान दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[निवेदन— राष्ट्रभाषा प्रचारकों और केन्द्र व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि वे कृपया "राष्ट्रभाषा" में प्रकाशनार्थ अपने केन्द्रके वर्ग, समारोह आदि राष्ट्र-भाषा-कार्यका विवरण, समाचार आदि प्रान्तीय **संचालकके** द्वारा भेजें। —व्यवस्थापक]

गुजरात

गुजरातमें राष्ट्रभाषा प्रचारका ठोस कार्यः— गुजरात प्रान्तमें राष्ट्रभाषाका प्रचार सन् १९३७ से हो रहा है। आजतक लाखोंकी संख्यामें भाअी-बहन राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें सम्मिलित हुअे हैं। साथ ही कअी प्रचारक और केन्द्र व्यवस्थापक निष्ठासे कार्य कर रहे हैं। संक्षिप्त विवरण अिस प्रकार है—

परीक्षा केन्द्रः—आज गुजरात प्रदेशमें कुल ५९४ केन्द्र हैं। केन्द्र व्यवस्थापकोंमें प्रधानतः शिक्षण संस्थाओंके प्रधानाध्यापक, सार्वजनिक संस्थाओंके मंत्री तथा योग्य कार्यकर्ता हैं। कअी केन्द्रोंमें नगर समितियाँ बन गयी हैं और बनती जा रही हैं।

जिलावार केन्द्र संख्या अिस प्रकार है—

कच्छ	२६	सौराष्ट्र	७८
अुत्तर गुजरात	९२	अहमदाबाद नगर	१
अहमदाबाद जिला	६०	खेड़ा	१०७
बड़ौदा	७१	पंचमहाल	३२
भरूच	६१	सूरत	६६

जिलावार प्रचारक— अिस वर्ष प्रमाणित प्रचारकोंकी संख्या ४७५ से ७३५ हो गयी है। सहयोगी प्रचारकोंकी संख्या भी लगभग अुतनी ही है।

कच्छ	१७	सौराष्ट्र	६३
अुत्तर गुजरात	६२	अहमदाबाद नगर	१२२
अहमदाबाद जिला	४०	खेड़ा	१२५
बड़ौदा	९६	पंचमहाल	३१
भरूच	५७	सूरत	१२२

समिति अिन सभी प्रचारक भाअी-बहनोंका हृदयसे आभार मानती है।

कालावडः—अिस केन्द्रमें राष्ट्रभाषा परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरण करनेका समारोह स्थानीय तालुका स्कूलके आचार्य श्री हरिशंकर भाअीकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

अध्यक्ष महोदयने अुपस्थित व्यक्तियोंको राष्ट्रभाषा सीखनेके लिअे आग्रह किया।

बीदड़ा (कच्छ)— बीदड़ा केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत ता० ६ अक्तूबरके दिन स्थानीय काँग्रेस कार्यकर्ता श्री खेतसी भाअीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर दो सद्गृहस्थोंकी ओरसे अप्रैल १९५१की राष्ट्रभाषा प्रारंभिक, प्रवेश और परिचयकी परीक्षाओंमें केन्द्रमें सर्वप्रथम आनेवालेको २) द्वितीय आनेवालेको १॥) और तृतीय आनेवालेको १) का पुरस्कार देनेकी घोषणा केन्द्र व्यवस्थापकने की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्पश्चात् अध्यक्ष महोदयने प्रमाण-पत्र तथा पारितोषिक वितरित किये। केन्द्रकी व्यवस्थाके कार्यका निरीक्षण करके आपने संतोष प्रदर्शित किया।

द्वारका— अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव गत् ता० ३ अक्तूबरको बड़ी धूमधामसे स्थानीय मुन्सफ साहब श्री बंसीलाल महेताकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर स्थानीय नगरपालिकाके अध्यक्ष और काफी संख्यामें नागरिक अुपस्थित थे।

अिस समारोहमें अध्यक्ष महोदय, केन्द्र-व्यवस्थापक और प्रमाणित-प्रचारक आदिके भाषण हुअे। तत्पश्चात् बम्बअी सरकारने 'राष्ट्रभाषा-कोविद' परीक्षाके प्रति जो पक्षपात् और अन्यायपूर्ण नीति अपनायी है; अुसका अुग्र विरोध प्रदर्शित करते हुअे सर्वसम्मतिसे अेक प्रस्ताव स्वीकृत किया जो अिसप्रकार है—

"हमारी बम्बअी सरकारने हमारे देशकी अेक सच्ची पवित्र और व्यापक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धासे संचालित 'कोविद' जैसी अुच्चकोटिकी परीक्षाको अमान्य करके हमारी अुपर्युक्त संस्थाको हमारे हजारों नहीं बल्कि लाखों विद्यार्थी भाअियों और बहनोंको अपमानित करके अन्याय किया है। बम्बअी सरकारका यह निर्णय बहुत दुःखमय और घृणास्पद है। सरकारसे हम निवेदन करते हैं कि वह हमपर किया गया अन्याय जल्दसे जल्द दूर करके हमारी राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति वर्धा द्वारा संचालित 'कोविद' जैसी सब तरहसे योग्य परीक्षाको मान्य करनेकी कृपा करे।"

चलोडा—अिस केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव स्थानीय शाला-कमेटीके अुप चैअरमेन श्री झवेरबहन पटेलकी अध्यक्षतामें गत् जुलाअी माहमें मनाया गया। अध्यक्ष महोदयाने हिन्दीके महत्वपर अपने भाषण द्वारा प्रकाश डाला।

मध्यप्रदेश (विदर्भ नागपुर):---

नागपुर कार्यालयसे— अिस वर्ष १९५१ के दो सत्रोंमें विदर्भ नागपुर प्रान्तके १३९ केन्द्रोंमें राष्ट्रभाषा-परीक्षाअें हुअीं। फरवरीके सत्रमें ९२ केन्द्रोंमें और सितम्बरके सत्रमें १३० केन्द्रोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार हुआ। परीक्षार्थियोंकी संख्या अिस प्रकार थी:— (१) प्रारंभिकमें— ६, ११६; (२) प्रवेशमें— ५, ८४७; (३) परिचयमें—२३५७; (४) कोविद'में— ६४४ और (५) "राष्ट्रभाषा रत्न" में — २०, कुल योग १४९८४। अिनमें सब नरनारी, आबाल वृद्ध, हिन्दु, मुस्लिम, क्रिश्चियन, पारसी, मराठी, तमिल, बंगला, तेलुगु, गुजराती, अुर्दू, अंग्रेजी— भाषा-भाषी लोग शामिल थे। महाराष्ट्रियोंकी संख्या प्रमाण-अनुपातमें सबसे ज्यादा रहती है। विदर्भ नागपुरके प्र० प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकोंको आभारपूर्वक हार्दिक धन्यवाद!

पदवीदान-प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव— ता.७ अक्टूबर रविवारको प्रातः ९ से ११ तक, नागपुर रीगल टाकीज़ सिनेमा-भवनमें नागपुर नगरका "राष्ट्रभाषा पदवीदान प्रमाण-पत्र वितरण अुत्सव" समितिके अध्यक्ष डा. सर भवानी शंकर नियोगीजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया। अिस अवसरपर मध्यप्रदेशके राज्यपाल श्रीमान् परमश्रेष्ठ मंगलदासजी पकवासाने अपने कर-कमलोंसे नागपुरके केन्द्रसे 'कोविद', 'राष्ट्रभाषा रत्न', 'विशारद' और 'साहित्यरत्न' आदिमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र दिये। और मध्यप्रदेश सरकारके शिक्षा तथा स्वास्थ्य मंत्री माननीय श्री डॉ. वा. शि. बारलिंगेजीने दीक्षान्त भाषण दिया।

साहित्य गोष्ठी और हिन्दी मराठी कवियोंका सत्कार— ता. २८ सितंबरको प्रांतीय समितिके कार्यालयमें, सायंकाल ६ बजे, हिन्दीके लब्ध प्रतिष्ठ कवि, श्रेष्ठ नाटककार और दिल्ली ऑलअिंडिया रेडियोके कलाकार पंडित अुदयशंकर भट्टजीके तथा ता. १ अक्टूबरको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ बजे सायंकाल, अुस्मानिया यूनिवर्सिटी हैदराबादके हिन्दी-विभागके अध्यक्ष प्राध्यापक श्री वंशीधरजी विद्यालंकारके स्वागत सत्कारार्थ 'साहित्यिक गोष्ठी' का सुन्दर छोटासा सांस्कृतिक आयोजन समितिकी ओरसे, प्राध्यापक श्री विनय मोहन शर्माजीके सभापतित्वमें किया गया था। सुन्दर मार्मिक चर्चाअें हुअीं।

ता. ११-१०-५१ गुरुवारको, सायंकालके समय, दो घंटेतक, प्रांतीय समितिकी ओरसे, विजयादशमीके अपलक्षमें ता. १० को नागपुर ऑ. अि. रेडियो स्टेशनपर आयोजित कवि-सम्मेलनमें पधारे हुअे हिन्दीके कविवर सर्वश्री सुमित्रानन्दनपंत, डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, 'बच्चन', नरेन्द्र शर्मा, अंचलजी, भवानीप्रसादजी तिवारी, पं. माखनलालजी चतुर्वेदी, प्रो. विनयमोहन शर्मा तथा मराठीके कवि सर्वश्री राजकवि यशवन्त, सोपानदेव चौधरी, प्रा. भवानीशंकर पंडित, प्रो. या. मु. पाठक आदिके स्वागत-सत्कारार्थ धंतोली नेशनल कालेज हालमें, बहुत शानदार कवि सम्मेलनका आयोजन हुआ। राष्ट्रभाषा हिन्दी और प्रान्त भाषा मराठीके श्रेष्ठ प्रख्यात प्रतिनिधि कवियोंने अपनी-अपनी श्रेष्ठ सत्यं-शिवं-सुन्दरं रचनाअें सुनाअीं। अिस समारोहका सभापतित्व ग्रहण किया था माननीय मंत्री श्री दुर्गाशंकरजी मेहताने। यह अपने ढंगका बहुत सुन्दर सामारोह था।

नागपुरकी प्रसिद्ध प्रतिष्ठित संस्था श्री दा. दे. हिन्दुकन्या शालामें राष्ट्रीयकवि, साहित्यदेवता और 'भारतीय आत्मा' के नामसे प्रख्यात पं. माखनलाल चतुर्वेदीजी ता. १२ को प्रांतीय संचालक हृषीकेश शर्माके साथ पधारे। शालाकी आचार्या अेवं महाल राष्ट्रभाषा केन्द्रकी व्यवस्थापिका श्री सौ. कोठीवानने चतुर्वेदीजीका स्वागत किया और चतुर्वेदीजीने लगभग आधा घंटेतक सरल, सुबोध सुन्दर शैलीमें बालिकाओंको सच्ची भारतीय नारी बननेका अुपदेश दिया। महालमें यह हमारा परीक्षाकेन्द्र १९४० से चालू है।

भारतीय भाषा-अध्ययन मन्दिर— ता. १४-१०-५१ रविवारको, प्रातःकाल ८ बजे, अुक्त मन्दिरका "शरद प्रमाण-पत्रवितरणोत्सव" श्री बिंझाणी सिटी कालेजके सभाभवनमें बड़े अुत्साही वातावरणमें मनाया गया। प्राध्यापक श्री सावलापुरकरजीकी अध्यक्षतामें, 'महाराष्ट्रके प्रख्यात मराठी कवि श्री सोपानदेव चौधरीने संस्कृत, मराठी और राष्ट्रभाषा परीक्षोत्तीर्ण छात्र-छात्राओंको प्रमाण-पत्र दिये। प्राध्यापिका श्रीमती सौ. कुसुमावती देशपांडेने दीक्षान्त भाषण दिया। श्रीमतीने मातृभाषा और राष्ट्रभाषाका महत्व प्रतिपादन किया। अिस मन्दिरके सभी कार्यकर्ता बड़े त्याग अेवं लगनके साथ निर्वेतन कार्य करते हैं।

बंगाल—

कलकत्ता—पश्चिम वंग राष्ट्रभाषा प्रचार समितिने सन् ४६-५० में पाँच वर्ष पूरे कर छठे वर्षमें पदार्पण किया। परिवर्तनशील परिस्थितियोंके बावजूद यह समिति राष्ट्रभाषा प्रचारके विस्तृत क्षेत्रमें जो कुछ कार्य कर सकी है, वह ठोस कार्य रहा है, अिसमें कोअी सन्देह नहीं है।

पश्चिम वंगके विद्यालयोंकी पञ्चम श्रेणीमें हिन्दी अनिवार्य शिक्षण विषय कर देनेके कारण हिन्दी शिक्षकोंकी बड़ी आवश्यकता है। पश्चिम वंग जनशिक्षा अधिकारके अुद्योग व समितिके तत्वावधानमें कलकत्तेके विभिन्न स्कूलोंके शिक्षक शिक्षयित्रियोंके लिये बालीगंज गवर्नमेंट हाअीस्कूल तथा हिन्दू स्कूलमें दो शिक्षक-शिक्षण-केन्द्र खोले गये जहाँ ७६ शिक्षक व शिक्षयित्रियाँ हिन्दी भाषा व शिक्षण पद्धतिकी शिक्षा पा रही हैं। अिस योजनाके लिये सरकारी सहायता स्वरूप ३०००) प्राप्त हुअे तथा दोनों केन्द्र सरकारी विद्यालयोंमें चालू हैं।

समावर्त्तनोत्सव २२ जनवरी तथा २७ अगस्त १९५० को दो बार मनाये गये। १९४९ सितम्बरकी परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण छात्रछात्राओंको प्रमाणपत्र, अुपाधिपत्र व पुरस्कार आदि प्रदान करनेका आयोजन आनन्द बाजार पत्रिकाके सम्पादक श्रीचपलाकान्त भट्टाचार्यकी अध्यक्षतामें पहली बार किया गया था। शान्तिनिकेतन हिन्दी भवनके अध्यक्ष डाक्टर हजारी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसाद द्विवेदीने दीक्षान्त भाषण प्रदान किया था तथा वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके प्रधान मंत्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन प्रधान अतिथि थे।

पश्चिम वंगके राज्यपाल महामहिम डाक्टर कैलाशनाथ काटजूकी अध्यक्षतामें दूसरी बार अुत्सव मनाया गया। पश्चिम वंग जनशिक्षा अधिकर्त्ता डाक्टर परिमल रायने दीक्षान्त भाषण दिया था। अिस अुत्सवमें १९५० अप्रैलकी परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण छात्र-छात्राओंको पुरस्कार, अुपाधिपत्र व प्रमाणपत्र आदि वितरित किये गये। अिस अुपलक्षमें डाक्टर परिमल रायका दीक्षान्त भाषण तथा महामहिम डाक्टर काटजूका अध्यक्ष पदसे दिया गया भाषण बड़ा ही फलप्रसू अेवं प्रभावोत्पादक रहा। महामहिम डाक्टर काटजूने समितिके अुल्लेखनीय अुद्यम कार्योंकी प्रशंसा करते हुअे कहा कि भविष्यमें समितिके अुत्सव समारोहादि लाटभवनमें मनाये जायें तो समितिको प्रचारकी ओरसे सुविधा होगी तथा अुन्हें भी प्रसन्नता होगी। अुन्होंने यह भी कहा कि ससम्मान अुत्तीर्ण होनेवाले परीक्षार्थियोंको अुनकी ओरसे पुरस्कार दिये जायेंगे तथा समितिकी शोचनीय आर्थिक दुरवस्था दूर करनेमें यथासम्भव व्यक्तिगत सहायता व चेष्टा करेंगे। महामहिम राज्यपालके प्रोत्साहनों अेवं आश्वासनोंके कारण समितिको बड़ा बल मिला है।

अिन दो समावर्त्तनोत्सवोंके अलावा पश्चिम-वंगके कअी केन्द्रोंमें पुरस्कार प्रमाणपत्र वितरणोत्सव अिस वर्ष आयोजित किये गये थे। अिनकी सूची अिस प्रकार हैः—

कर्सियांग—सभापति—महामहिम राज्यपाल डा० कैलाशनाथ काटजू;

अुत्तर कलकत्ता—सभापति—माननीय स्पीकर अीश्वरदास जालान,

प्रधान अतिथि—डाक्टर श्रीकुमार वंद्योपाध्याय;

नवद्वीप—सभापति—पण्डित सुरेन्द्रनाथ सप्त-तीर्थ,

प्रधान अतिथि—श्रीशचीन्द्र मोहन नन्दी, चैयरमैन, नवद्वीप म्युनिसिपैलिटी;

पूर्वस्थली - सभापति—प्रिन्सिपल अशोकनाथ मुखोपाध्याय, विद्यासागर कालेज, नवद्वीप,

प्रधान अतिथि—पण्डित गोपेन्दु भूषण सांख्य तीर्थ।

जिन महानुभाव हिन्दी प्रेमी दाताओंसे दान रूपमें सहायता प्राप्त हुअी अुनके नाम अिस प्रकार हैं—

श्रीतुषारकणा विश्वास १०००) श्रीजगन्नाथ बेरीवाला १०५१)

श्रीकृष्णचन्द्र कोठारी १७७४≡)॥। श्रीरामकुमार भुवालका ६००)

श्री आनन्दीलाल पोदार ६००) श्री बेणीशंकरशर्मा १००)

श्रीबनारसी प्रसादकोठरीवाला १००) श्रीआद्या प्रसाद शुक्ल ५१)

श्री महादेवलाल साहा ५१) श्रीरामेश्वर टाँकिया, पुरस्कार की पुस्तकोंके) मूल्यमें २१८)

आर्थिक सहायताके साथ साथ और भी विभिन्न प्रकारकी सहायताओंके बलपर यह समिति सुचारुरूपसे कार्य चला पा रही है। सूचना, विज्ञप्ति तथा समाचार आदि प्रकाशित कर आनन्द बाजार पत्रिका, हिन्दुस्थान स्टैण्डर्ड, नेशन, युगान्तर, अमृत बाजार पत्रिका, लोकसेवक स्टेट्समैन, लोकमान्य, सन्मार्ग, विश्ववन्धु, विश्वमित्र आदि पत्रिकाओंने हमें कृतार्थ किया है। समितिका प्रचार कार्य अिनके विना कभी अग्रसर नहीं हो पाता। अवैतनिक हिसाब परीक्षक सिंही अैंड कम्पनी, चार्टर्ड अेकाअुंटैन्टसके प्रति हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं और जिन व्यक्तियों, संस्थाओं—विद्यालयोंके अधिकारियोंने अपने भवनोंमें शिक्षा केन्द्र खोलने व राष्ट्रभाषाकी परीक्षाअें लेनेकी विशेष कृपा कर अनुमति दी तथा व्यवस्थाअें कीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम वंग सरकारने पश्चिम वंग राष्ट्रभाषा प्रचार समितिको वार्षिक सहायताके रूपमें अिस वर्षके-लिये भी (१९५१–५२) अेककालीन ३०००। तीन हजार रुपये प्रदान किये। अेतदर्थ हम पश्चिम वंग सरकारके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

बरहमपुर— गत १४ सितम्बरको महाराजा कृष्णनाथ कॉलेजियट स्कूल हालमें बरहमपुर केन्द्रका प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव महाराजा श्रीशचन्द्र नन्दी बहादुर अेम. अे, अेम. अेल. अे. की अध्यक्षतामें सुसम्पन्न हुआ। पश्चिम वंग राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके अवैतनिक मंत्री श्रीरेवती रंजन सिंह प्रधान अतिथिके रूपमें अुपस्थित थे। गत अप्रैल १९५१ की प्रारम्भिक व प्रवेश परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाणपत्र तथा अुस केन्द्रसे प्रारम्भिक और प्रवेशमें प्रथम तीन स्थान अधिकार करनेवालोंको केन्द्रकी ओरसे पुरस्कार दिये गये। सभामें स्थानीय गण्य-मान्य व्यक्ति व पदस्थ कर्मचारी अेवं महिलाअें काफी संख्यामें अुपस्थित थीं। जिला कांग्रेस कमेटीके भूतपूर्व मन्त्री श्री ज्ञानेन्द्रनाथ दासगुप्त तथा जिला संगठक–प्रचारक श्रीरामविलास अुपाध्यायके विशेष परिश्रमसे यह अुत्सव मनाया जा सका। राय सुरेन्द्रनाथ सिंह बहादुरने अन्तमें धन्यवाद ज्ञापन किया।

राजस्थान

चांदारुण — श्री हिन्दी व्यापारी विद्यालय चाँदारुणमें भाद्रपद शुक्ल ४ बुधवारको गणेश-चतुर्थी का अुत्सव विद्वद्वर पं० चतुर्भुज पुरुषोत्तमदासजी विशारद "विद्यारत्न" अेच. अल. अेम. अेस. की अध्यक्षतामें बहुत आनन्द अुत्साहसे मनाया गया। अिस अुत्सवमें अनेक सज्जनोंने शिक्षापर अपने अपने विचार प्रकट किये। जिसमें पं० श्री पुरुषोत्तमदासजी विशारद "विद्यारत्नादि" ने विद्यालयकी अवस्था और दिनोंदिन अुन्नति करने व अिस विद्यालयसे अनेक छात्रोंके अुन्नतिशील होकर निकलनेपर प्रकाश डाला तथा श्री मोहनलालजी मानधणाने गणेश–चतुर्थी क्यों मनाअी जाती है अिसपर पौराणिक प्रमाणसे सिद्ध करके समझाया तथा विद्यालयके विद्यार्थी राधेश्याम सोनीने विद्यालयकी दिनों दिन तरक्कीपर भली-भाँति प्रकाश डाला। तत्पश्चात भँवरलालजी झँवर प्रधान नगर कांग्रेसके हाथोंसे विद्यालयके छात्रोंको प्रमाण-पत्र वितरण किये गये। विद्यालय भवन सैंकड़ों आदमियोंसे भरा हुआ था। मिठाअी बाँटनेपर सभाका कार्य समाप्त हुआ।

मणिपुर

मणिपुर—लम्लाअि गाँवमें श्री अिबोचौसिंह की कोशिशसे राष्ट्रभाषाका वर्ग खुल गया है। वर्गमें छोटे-बड़े बालक-बालिकाअें और प्रौढ़ स्त्री-पुरुष काफी संख्यामें सम्मिलित हुअे हैं। श्री अिबोचौसिंह तथा श्री अिबोतोम्बासिंह वर्गोंमें पढ़ाते हैं और लाभ पहुँचाते हैं। अुम्मीद की जाती है कि वहाँ आगे चलकर राष्ट्रभाषा कार्यकी बड़ी अुन्नति होगी।

स्थानीय जनता परीक्षा-केन्द्रकी माँग कर रही है। वहाँ केन्द्र खोलनेमें कुछ कठिनाअियाँ हैं। अभी स्थानीय समिति जनताकी माँगपर विचार कर रही है।

ककचिंग— ता० १४-१०-५१ को ककचिंगमें अेक सार्वजनिक सभा हुअी। अिसमें राष्ट्रभाषाके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण पत्र वितरित किये गये। केन्द्रके सर्वप्रथम आनेवाले परीक्षार्थियोंको पारितोषिक भी प्रदान किये गये।

लंका

लंका – श्री लंका हिन्दी भाषा प्रचार समितिकी वार्षिक सभा पूज्य भदन्त सिरिसीवलाजीके सभापतित्वमें गत ता० ८ सितम्बरको रमटगोड धर्मप्रसाद विद्यालयमें हुअी। लंकाके हरअेक प्रान्तसे सैकडों हिन्दी-भाषा प्रेमी अुपस्थित थे। मन्त्रीने अपने वार्षिक विवरणमें बतलाया कि गत वर्षमें समितिने जो काम किये हैं अुनमें लंकाकी सरकारी अेस. अेस. सी. परीक्षाओं (सिंहली तमिल, अंग्रेजी) में हिन्दीको भी मान्यता दिलवाना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्धा समितिकी परीक्षाअें लंकामें चलानेके लिये अेक केन्द्रकी स्थापना करना, राष्ट्रभाषा समितिकी प्रकाशित "अुड़ते जुगनू" और "कहानी संग्रह भाग १" दो पुस्तकें लंकाकी प्राचीन परीक्षाओंके पाठ्यक्रमके लिये मंजूर करवाना, अेक हिन्दी विद्यालयकी स्थापना करना आदि कअी महत्वपूर्ण काम भी हैं। अिसके अलावा लंका रेडियो द्वारा भी हिन्दी सिखानेकी व्यवस्था कर ली है, जो आज बड़ी सफलताके साथ चल रही है। यहाँके लोग अुसके बारेमें बड़ी ही दिलचस्पी ले रहे हैं और रोज सैकड़ों पत्र अुसके बारेमें आते हैं। और भी बताया गया है कि यहाँके बहुत लोग वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी परीक्षाओंमें बैठना चाहते हैं।

नये वर्षके लिये निम्न पदाधिकारी चुने गये हैं।

सभापति–भदन्त सिरिसीवलीजी

अुपसभापति–श्रीयुत आर. प्रजालोक नायक पाद

मन्त्री–अेरत्ने रत्नसार

सहायक मन्त्री–श्री सी. अेच. अी. विक्रमसिंह

कोषाध्यक्ष–श्री ऑस्टिन् जयवर्धन

संचालक–श्री सुशील कुमार

अेक कार्य-समिति भी चुनी गयी है।

बम्बअी

१. सरस्वती हिन्दी वर्ग— अिस वर्गके अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाणपत्र देनेको ता. ८ सितम्बर ५१ को स्थानीय फॉर्बस-हाल गिरगांवमें श्री. कान्तिलाल जोशीकी अध्यक्षतामें समारोह मनाया गया। प्रमाणपत्र देनेके बाद अध्यक्षने अपने भाषणमें अिस बातपर जोर दिया कि अिस समय विद्यार्थियोंकी संख्या कम हो तो अुससे निराश हुअे बिना अुत्साहपूर्वक यदि कार्य करते रहें तो यह वर्ग लोकप्रिय बन सकेगा। बंबअी सरकारने अपने कर्मचारियोंके लिये जो आज्ञा निकाली है अिसपर प्रसन्नता व्यक्त की। परंतु अिस बातपर खेद व्यक्त किया कि सरकारने रा. प्र. समिति, वर्धाकी "कोविद" परीक्षा जो ज्यादा लोकप्रिय है, अुसे मान्य की हुअी परीक्षाओंमें स्थान नहीं दिया। आशा है बम्बअी सरकार अपनी अिस भूलको तुरंत सुधार लेगी।

वर्गके संचालक श्री. शिवकुमार जानीने कार्य विवरण पढ सुनाया था।

२. हिन्दी प्रचार सभा, वरसोवाका—वार्षिक अधिवेशन ता. ३० सितम्बर ५१ को डॉ. रामप्रकाश कपूरकी अध्यक्षतामें स्थानीय म्युनिसिपल स्कूल हॉलमें सम्पन्न हुआ। सभामें वार्षिक विवरण और हिसाब अेवम् नियमावली स्वीकृत की गयी। आगामी वर्षके लिये निम्नानुसार कार्य-समिति निर्वाचित की गअी—

१.	श्री. छगनभाअी दिवावाला	अध्यक्ष
२.	" डॉ. रामप्रकाश कपूर	अुपाध्यक्ष
३.	" अिंद्रकांत प्रा. शुक्ल	कोषाध्यक्ष
४.	" बलवन्तराय नायक	प्रधान मन्त्री
५.	" केशव सुब्बरायन	प्रचार मन्त्री
६.	" कृष्णन कुट्टी मेनोन	पुस्तकालय मंत्री
७.	" मनुभाअी देसाअी	सदस्य
८.	" निर्मला खटनहार	"
९.	" देवेंद्र व्यास	"
१०.	" पुष्पावती ढागिया	"
११.	" यशवंत कलसकर	"
१२.	" जयश्री डोंगरे	"
१३.	" रामजी अुन्नरकट	"
१४.	" शकुन्तला चिनाअी	"
१५.	" भिखूभाअी देसाअी	"

३. राष्ट्रभाषा केन्द्र कुर्ला— रविवार ता. १९ अगस्त ५१ को स्थानीय जनरल अेज्युकेशन अिन्स्टीट्यूट हाअीस्कूल, कुरलाके सभा-भवनमें प्रो. पांडेके सभापतित्वमें प्रमाणपत्र तथा पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। अध्यक्षने अपने भाषणमें राष्ट्रभाषा प्रचारका महत्व समझाया तथा अिस कार्यको दूने अुत्साहसे बढ़ानेका प्रोत्साहन दिया। अिस समारोहके अवसरपर ज. अे. अि. हाअीस्कूल कुरलाके प्रिंसिपल, श्री. प. ल. वैद्यजी तथा स्थानीय कार्यकर्ता श्री मुरलीधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेहता, कु. लीला जोशी, श्री विनायक पाठक, श्री भय्यालाल वर्मा तथा श्री कपूरकी अुपस्थिति अुल्लेखनीय है।

कोविद परीक्षाकी मान्यता— बम्बअी सरकारने अपने कर्मचारियोंके हिन्दी जाननेके लिये जो परीक्षाअें स्वीकृत की हैं, अुनमें "राष्ट्रभाषा कोविद"का अुल्लेख नहीं किया गया है। अिसपर दुःख व्यक्त करते हुअे सभाके अध्यक्ष तथा मंत्री अेवम् सभी प्रचार केन्द्रके व्यवस्थापकोंने तार अेवम् पत्र बम्बअी राज्यके प्रधान मन्त्री श्री बालासाहब खेरके नाम लिखे हैं। आशा है, सरकार शीघ्र ही अपनी भूलको "कोविद मान्यताकी पूरक आज्ञा" निकालकर सुधार लेगी।

सभाकी कार्य समितिने अेक प्रस्ताव भेजकर जिस बातकी मांग की है कि निकट भविष्यमें जो "हिन्दी-बोर्ड" सरकार नियुक्त करेगी अुसमें वह सभाको पर्याप्त प्रतिनिधित्व अवश्य देगी।

कोविद मान्यता संबंधी प्रस्ताव-- स्थानीय पोद्दार कॉलेजमें ता. ७ अक्टूबर ५१ को श्री अेच. के. गुडूरावकी अध्यक्षतामें प्रचारकोंकी अेक सभा हुअी। जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ —

"अिस सभाकी यह राय है कि राष्ट्रभाषा कोविदको अमान्य करनेसे बडा अन्याय हुआ है। अिसलिये यह सभा बम्बअी सरकारसे प्रार्थना करती है कि अिस अन्यायको जल्दसे-जल्द हटाया जाय। सुना है कि बम्बअी सरकार अिस विषयमें ता.१५ अक्टूबर तक अपना आखिरका निर्णय जाहिर करेगी। अुस विचार और चर्चामें हम बाधा डालना नहीं चाहते। फिर भी यह सभा जाहिर करती है कि यदि अन्याय जारी रहा तो अेक घोर आंदोलन शुरू होगा।"

५. राष्ट्रभाषा प्रचार सभा माटुंगाके तमिल, तेलगु, कन्नड तथा मलियालम भाषा-भाषी प्रचारकोंने श्री काशीप्रसाद द्विवेदीकी अध्यक्षतामें राष्ट्रभाषा कोविदको मान्यता देनेके सम्बन्धमें बम्बअी सरकारसे सानुरोध प्रार्थना करनेवाला प्रस्ताव पास किया।

बम्बअीके करीब-करीब सभी प्रचार केन्द्रोंसे तार तथा पत्र कोविदको मान्यता देनेके संबन्धमें सरकारके पास भेजे गये। कुछने अपने तारोंकी प्रतिलिपि भेजी है अुनके नाम नीचे अनुसार है---

१. चिकित्सक राष्ट्रभाषा वर्ग, गिरगांव।
२. राष्ट्रभाषा सम्मेलन, कोट।
३. आर्यन स्कूल रा. वर्ग. गिरगांव।
४. रा. प्र. सभा, माटुंगा।
५. डोंगरी हिन्दी वर्ग, डोंगरी।
६. महिला सेवा मंडल, मालाड।
७. पायोनियर हाअीस्कूल।
८. नवोदित प्रगत मंडल, गिरगाँव।
९. न्यू मझगांव स्कूल, मझगांव।
१०. रा. वर्ग, जोगेश्वरी।
११. रा. प्र. मंडल, मांडवी.
१२. रा. रत्न वर्ग, गिरगांव।
१३. कुमारिका स्त्री मन्डल, विलेपारले।
१४. राष्ट्रीय शाला, विलेपारले।
१५. रा. वर्ग, अंधेरी।
१६. रा. प्र. केन्द्र, लालबाग।
१७. रा. वर्ग, घाटकोपर।
१८. दादर पारसी युथ्स असेम्बली।
१९. कर्नाटक फ्री नाअीट हाअी०, माटुंगा।
२० स्वतंत्र हिन्दी वर्ग, गिरगांव।
२१. विजय मित्र मंडल, गिरगाँव
२२. हिन्दी प्रचार संघ, दादर।
२३. यंग मेन्स हिन्दु असो, गिरगांव।
२४. गोखले रोड हिन्दी वर्ग, दादर।
२५. हिन्दी प्रचार सभा, चेम्बूर केम्प।
२६. प्रो. हे. हाअीस्कूल, बोरिवली।
२७ रा. प्र. सभा, भांडूप।

महाराष्ट्र

धुलिया—ता० ६ अगस्त १९५१ को स्थानीय क० ग० हायस्कूलमें "तुलसी जयन्ती" मनायी गयी। अिसी अवसरपर मुख्याध्यापक श्री० शिंदोरेजीके श्री-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथों गत सत्रमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

सटाणा—निम्नलिखित परीक्षार्थियोंने गत अप्रैल १९५१ की परीक्षाओंमें नासिक जिलेमें सर्व-प्रथम सुयश प्राप्त किया।

प्रारंभिक—श्री. परशुराम शंकर भांबारे; येवला, ८८। प्रवेश—कु०अिंदुमति वि० कुलकर्णी; नाशिक-शहर; १५६। परिचय—श्री. सरूपचंद रामचंद्र आवड; चांदवड; १८२। कोविद—अनन्त देवीदास किन्ही-कर; सिन्नर; २०६। रा० भा० रत्न—गजानन पुरुषो-त्तम जोशी, नाशिक शहर; ३२४।

भिंगार—केन्द्र-व्यवस्थापक श्री. द. बा. डावरेजी तथा प्रचारक श्री. ता. हिरेजीके प्रयत्नोंसे मिलिटरी टेक्निकल डेवलपमेंट, विभागसे गत सत्रमें चौदह परीक्षार्थी सम्मिलित हुअे जो भिन्न-भिन्न मातृभाषी थे। परीक्षाअें समाप्त होनेके बाद ता० २३-६-५१ को मिलटरी दफ्तरमें अेक स्नेह-सम्मेलन हुआ जिसमें श्री हिरेजीका 'स्वतन्त्र भारत और हमारी राष्ट्रभाषा' विषयपर भाषण हुआ। अन्तमें प्रीति-भोज और ग्रुप-फोटोका कार्यक्रम भी हुआ। आगामी परीक्षाओंके लिये केन्द्रमें अुत्साहके साथ कार्य हो रहा है।

अहमदनगर—राष्ट्रभाषा सेवा संघ, अहमदन-गरका तृतीय स्नेह सम्मेलन तथा प्रमाण-पत्र वितरण श्री. सरोश के. ओीरानीकी अध्यक्षतामें ता० २६-८-५१ को म्युनिसिपल कौन्सिल हॉलमें सम्पन्न हुआ। विविध-कार्यक्रममें वार्तालाप द्वारा 'पंचवटी दर्शन' तथा "रक्षा-बन्धन" के कुछ अंश खेले गये। और कुछ गीत भी गाये गये।

रंजनकार्यक्रमके बाद मन्त्रीने अध्यक्ष महो-दयका परिचय करा दिया तथा सेवा-संघका अहवाल निवेदन किया। अध्यक्षके समयोचित भाषणके बाद प्रमाण-पत्र बाँटे गये। अध्यक्ष महाशयने म्युनिसिपाल-टीकी तरफसे सेवा-संघको आर्थिक सहायता देनेका अभिवचन दिया। अन्तमें फोटो-खींचा गया। और कलेवा-पानके बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ। सेवा-संघकी ओरसे निम्न लिखित केन्द्रोंमें प्रचार कार्य हो रहाहै -

१ अहमदनगर-शहर; २ भिंगार; ३ टेक्निकल डिपार्टमेंट; ४ सिन्धी कॉलनी; ५ मांडवगण; ६ मेहेकरी और ७ जोहरापुर।

सटाणा—ता० ६-१०-५१ के दिन दशहरेके शुभ अवसरपर "नाशिक जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समिति"—कार्यालयके नाम-पट्ट-अुद्घाटनका समारंभ बागलाण—केसरी श्री. धर्माजी पाटीलके शुभ हाथों बड़ी धूमधामसे मनाया गया। समारम्भमें गाँवके बहुत से नागरिक सम्मिलित थे। जिला सहायक मन्त्री श्री. भा. अ. चांदोरकरजीने जिला समितिके बारेमें स्थापना से आजतकके कार्यपर प्रकाश डाला। अन्तमें श्री. वांगीकरजीके आभार प्रदर्शनके बाद समारंभ समाप्त हुआ।

पुणें—अभिनव हिन्दी वर्गका अुद्घाटन समारोह—ता०६-१०-५१ विजय-दशमीके सुमुहुर्तपर महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके संचालक श्री० पं. मु. डांगरेजीके शुभ हाथों अभिनव हिन्दी वर्गका अुद्-घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। वर्गके संचालक श्री० दिवाकरजीने प्रास्ताविक भाषण और अध्यक्षजीका परिचय करा दिया। अध्यक्ष महोदयने अपने प्रभाव-शाली और काव्यात्मक भाषण द्वारा वर्गका रूप कैसा हो, हिन्दी सीखनेकी आवश्यकता, हिन्दी प्रचारका अर्थ, भारतीय परम्परा और हिन्दी आदि बातोंपर प्रकाश डाला।

अुपवक्ताके नाते श्री. रासनेजी, श्री. देवधरजी अेवं श्री. नेर्लेकरजी आदि सज्जनोंने भाषण दिये।

समारोहमें श्री. रहालकर, श्री. शान्तिभाओी जोबनपुत्रा श्री. रासने, श्री. देवधर, श्री. चिं. बा. ओंकार, श्री. अ० वा० ओंकार, श्री ल० पां० फाटक आदि निमन्त्रित सज्जन तथा विद्यार्थीगण अुप-स्थित थे।

श्री नेर्लेकरजीने अभिनव हिन्दी वर्गकी ओरसे श्री अध्यक्षजीको पुष्पमाला और पुष्प-गुच्छ समर्पण किया तथा आभारप्रदर्शन किया। अुपस्थित सज्जनोंको शारदा-प्रसाद और पुष्पगुच्छ दिये गये। राष्ट्रगीतके अनन्तर कलेवा-पानके साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलकर्णी— केन्द्रके राष्ट्रभाषा परीक्षार्थियोंका प्रमाण पत्र वितरण समारोह कोल्हापुर जिला लोकल-बोर्डके अध्यक्ष श्री श्रेष्ठीके शुभ हाथों मनाया गया। अिस अवसरपर शिक्षाधिकारी श्री देसाअी, श्री भट, श्री तेलवेकर, श्री घुगरी आदि सज्जन अेवं गाँवके नागरिक अच्छी संख्यामें अुपस्थित थे।

राष्ट्रभाषा सेवा मन्दिर, पुणें– नये सत्रका अुद्घाटन दि० १।१०।५१ को सेवामन्दिरके तुलसीबाग वर्गमें हुआ। अुस समय श्री ह. कृ. कुलकर्णीजीने यह कहकर कि "राष्ट्रभाषा सेवा मन्दिर, राष्ट्रभाषाके प्रचार कार्यमें अुत्साहके साथ अपना कार्य कर रहा है" पिछले सत्रका कार्य विवरण पढ़कर सुनाया। सेवा मन्दिरका कार्य सुचारू रूपसे चलनेकी दृष्टिसे अेक कार्यकारिणी बनायी गयी। विवरण यों है।

प्रचार प्रसिद्धि मन्त्री— श्री ना० ग० अरगडे,

अर्थ मन्त्री श्री ग० रा० वर्धे,

चुनाव परीक्षा मन्त्री-श्री शारदा पैठणकर,

कार्यालय मन्त्री-श्री दि० वा० पावड़े तथा श्री दा० द० कुलकर्णी

सहाय्यक-श्री बा० तु० कद्रे

अुत्सव-समारोह मन्त्री-श्री श्या० न० खुर्जेकर

वाचनालय मन्त्री-श्री के० ह० साठे,

चर्चा व्याख्यानमाला मन्त्री-श्री रा०र० गोखले

आशा है, सेवा मन्दिर अपने सहकारियोंके द्वारा प्रचार कार्यमें अग्रसर होता रहेगा।

मालेगाँव बुद्रुक—यहाँ शिक्षण सेवा मंडल, नामक संस्था द्वारा अेस्. अेस्. अेम्. हायस्कूल चलाया जाता है। अुस हायस्कूलमें १९४८ से हिन्दी पढ़ाअी जाती थी। लेकिन परिक्षार्थी बारामती केन्द्रमें परीक्षामें सम्मिलित होते थे। अिस साल यहाँ केन्द्र शुरू किया है। अुस केन्द्रके सब विद्यार्थियोंका स्नेह सम्मेलन रविवार दिनांक १६-९-५१ को श्री पं. ग. र. वैशंपायनजीकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ।

स्नेह सम्मेलनका प्रारम्भ बाल बालिकाओंके स्वागत पद्यसे हुआ। अुसके बाद श्री भोंसलेजीने अध्यक्ष महोदयका परिचय करा दिया। तदुपरान्त श्री शंकरराव शिन्दे, अेम्. अे. बी. टी. केन्द्र व्यवस्थापकजीने अिस संस्थाका और यहाँके हिन्दी प्रचारक वृत्त पढ़कर सुनाया। गत तीन वर्षोंसे श्री रणदिवेजीके परिश्रमसे यहाँ हिन्दीके वर्ग नियमित रुपसे शुरु हुअे। अिस साल श्री वि. रा. पुँगावकरजी, अेम. अे. साहित्य-रत्न, यहाँ आये। अध्यापन कार्यमें श्री राजोपाध्ये, श्री महाजनी भी सहायता कर रहे हैं। अुसके बाद अध्यक्ष महोदयने विद्वत्तापूर्ण, ओजस्वी और सहज भाषामें 'हिन्दी क्यों पढ़नी चाहिये' अिस विषयपर भाषण किया। आभार प्रदर्शन और राष्ट्रगीतके बाद सभा समाप्त हुअी। तदनंतर अल्पोपहार दिया गया।

विद्यार्थी और शिक्षकोंका अध्यक्षके साथ छायाचित्र खींचा गया।

अिस समारोहसे ग्रामस्थ लोगोंमें चैतन्य अुत्पन्न हो गया और हिन्दी पढ़नेमें लोगोंकी अिच्छा बढ़ गयी। आशा है, अप्रैल ५२ की परीक्षाओंमें अिस केन्द्रसे अत्यधिक संख्यामें परीक्षार्थी सम्मिलित होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा–विभाग

परीक्षाफल––

गत सितम्बर' ५१ की प्रचार परीक्षाओं और " राष्ट्रभाषा रत्न " परीक्षाका परीक्षाफल आगामी २६ नवम्बर' ५१ को प्रकाशित होगा।

परीक्षाफल जाननेके लिये अुत्सुक परीक्षार्थी अपने-अपने केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे ही पत्र-व्यवहार करें। परीक्षाफल सम्बन्धी पत्रोंका अुत्तर देनेमें वर्धा-कार्यालय असमर्थ रहेगा।

अलग-अलग प्राप्तांक—

जो अुत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपने अलग-अलग प्रश्न पत्रोंके प्राप्तांक मंगाना चाहें अुन्हें अपने नाम, परीक्षा, क्रमसंख्या, केन्द्र, माह, वर्ष आदिका स्पष्ट अुल्लेख करते हुअे चार आना शुल्क भेजना चाहिये।

"राष्ट्रभाषारत्न" परीक्षाके अुत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण परीक्षार्थीको अलग-अलग प्रश्नपत्रोंके प्राप्तांक के लिये १) रु० (अेक रुपया) भेजना पड़ेगा।

पुनर्निरीक्षण—

जो अुत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी अपनी अुत्तर-पुस्तकोंका पुनर्निरीक्षण कराना चाहें वे १६ दिसम्बर' ५१ तक प्रत्येक अुत्तर-पुस्तकके लिअे आठ आना निरीक्षण-शुल्कके साथ प्रार्थना-पत्र भेजें। प्रार्थना-पत्रमें अपना पूरा नाम, परीक्षा, क्रम-संख्या, प्रश्न–पत्र–संख्या, तथा केन्द्रका नाम स्पष्ट लिखना चाहिये।

पुनर्निरीक्षणमें केवल अितना ही देखा जायगा कि प्रत्येक प्रश्नके अुत्तरपर अंक दिये गये हैं या नहीं और जोड़ आदि ठीक हैं या नहीं।

" राष्ट्रभाषारत्न " परीक्षाके परीक्षार्थियोंको अपनी अुत्तर-पुस्तकोंकी दुबारा जाँच करवानेके लिये ता० २० दिसम्बर तक प्रत्येक अुत्तर-पुस्तकके लिअे २) रु० (दो रुपये) जाँच शुल्क भेजना चाहिये।

परीक्षा समितिके नये महत्त्वपूर्ण निर्णयः —

पुराने पाठ्यक्रमकी सुविधाः –

सन' ५२ की फरवरी और अप्रैलमें होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंके लिये पुराने (सन् ५१ के पाठ्यक्रम) और नये (सन्' ५२ के पाठ्यक्रम) दोनों ही पाठ्यक्रमोंसे प्रश्नपत्र चुने जायेंगे। कोअी भी परीक्षार्थी अिस सुविधाका लाभ अुठा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोविदके परीक्षार्थी ध्यान दें:—

सन् '५२ के लिअे प्रकाशित कोविदके पाठ्यक्रममें कुछ परिवर्तन किये गये हैं। परिवर्त्तित पाठ्यक्रम निम्न प्रकार है:—

प्रथम प्रश्न-पत्र— पूर्ववत्

प्रश्न पत्र— २	(गद्य और नाटक)	पूर्णांक १००
१. शशिगुप्त	(सेठ गोविन्ददास)	१–८–०
२. पाँच अेकांकी	(रा. भा. प्र. स. वर्धा)	१–०–०
३. आधुनिक गद्यसंग्रह	(१. चित्रकारसे, २. मनुष्यत्वकी हुंकार, ३. मैं और मेरा युग तथा शेष स्मृतियाँ छोड़कर)	१–८–०
प्रश्न-पत्र ३—	(कहानी, अुपन्यास, शीघ्रवाचन तथा समालोचना)	पूर्णांक १००
१. कहानी संग्रह भाग ३	(परिवर्तित संस्करण)	०–१२–०
२. गबन	(स्व. प्रेमचन्दजी) संक्षिप्त संस्करण	२–४–०
३. आत्म-कथा	(गांधीजी) संक्षिप्त संस्करण	१–८–०
४. साहित्यका साथी	(पृष्ठ सं. केवल कुछ अध्याय छोड़कर १ से १८; ३५ से ३६; ५८ से ६५ तथा ८२ से ८३ तकके परिच्छेद)	१–८–०
प्रश्न-पत्र-४—	(निबन्ध, सार लेखन, मुहावरे और कहावतें, अनुवाद, व्याकरण तथा राष्ट्रभाषा प्रचार सम्बन्धी ज्ञान)	पूर्णांक १००
१. राष्ट्रभाषा सर्वसंग्रह		२–०–०
२. राष्ट्रभाषा रचना—३		——
३. मुहावरे और कहावतें		०–१२–०
४. संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण		१–८–०
५. हिन्दीकी पत्र-पत्रिकायें तथा समितिका मुखपत्र—'राष्ट्रभाषा'		

कोविद मौखिक परीक्षा:—

मौखिक परीक्षा १०० अंकोंकी होगी। अिसमें अुत्तीर्ण होनेके लिये कम-से-कम ४० प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। अंक विभाजन निम्न प्रकार रहेगा:—

[हस्तलिखित पठन वाचन, २५ अंक; कंठस्थ-गद्य-पद्य १५ अंक और मौखिक बातें ६० अंक]

सहायक पुस्तकें:—

१. नेताओंकी कलमसे	(रा. भा. प्र. स. वर्धा)	१–०–०
२. कंठाभरण	(रा. भा. प्र. स. वर्धा)	०–१०–०

[सूचना—मौखिक कंठस्थ-गद्य-पद्यके लिये अिसी पुस्तकसे कम-से-कम तीन पद्यखंड और दो गद्यखंड कंठस्थ करने होंगे।]

लेखन-कार्य:—

कोविद परीक्षार्थियोंके लिअे चार लिखित प्रश्न-पत्र और मौखिक परीक्षाके अतिरिक्त लेखन-कार्य स्वतन्त्र रूपसे रहता है। अिसमें अुत्तीर्ण होना अनिवार्य है। कोविदके परीक्षार्थी तैयारीकी अवधिमें समिति द्वारा निर्धारित नीचे लिखे विषयोंमेंसे ही किन्हीं आठ विषयोंपर लेख लिखें और अपने हिन्दी शिक्षकसे जँचवाकर परीक्षा-तारीखसे अेक सप्ताह पहले अपनी निबन्ध-बही केन्द्र-व्यवस्थापकको दे दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी, अप्रैल' ५२ के लिये निबन्ध-सूची:--

१. गोस्वामी तुलसीदास और अुनकी सर्वप्रियता। २. देशकी वर्तमान स्थितिमें नागरिकोंका कर्त्तव्य। ३. आदर्श गाँव। ४. स्वावलंबन। ५. विश्वको भारतकी देन। ६. वर्षाऋतु। ७. मितव्ययिता ८. रचनात्मक कार्यक्रम। ९. सहशिक्षा। १०. साहित्य समाजका प्रतिविम्ब ११.। सहकारिता आन्दोलन। १२. अधिक अन्न अुपजाओ आंदोलन।

अतिरिक्त विषय-- पूर्ववत्

आवेदन-पत्र भरनेमें सुविधा:—

अेक केन्द्रसे आवेदन-पत्र भरकर किसी दूसरे केन्द्रमें यदि परीक्षार्थी नियत अवधिके भीतर वर्धा-कार्यालय आवेदन-पत्र भेजकर सम्मिलित होना चाहता है तो वह वैसा कर सकता है। किन्तु अैसे परीक्षार्थीको—

(अ) परीक्षा-शुल्कसे चार आना अधिक अतिरिक्त शुल्कके रूपमें देना होगा।

(ब) अैसे परीक्षार्थियोंका ब्यौरा केन्द्र-व्यवस्थापकको अेक विशेष पत्रपर भरकर भेजना होगा।

(स) अैसे आवेदन-पत्र अलगसे केन्द्र-व्यवस्थापक वर्धा-कार्यालय भेजेंगे।

अस्वीकृत आवेदन-पत्रमें संशोधन—

अैसे परीक्षार्थी जिनके आवेदन-पत्र, खानापूर्ति (वर्ष, माह, क्रमसंख्या) में किसी प्रकारकी गड़बड़ीके कारण अस्वीकृत हो गये हों, यदि अुसमें किसी प्रकारका संशोधन करना चाहते हों, तो अुन्हें परीक्षा-तिथिके १५ दिन पहले संशोधन-शुल्कके साथ प्रार्थना-पत्र भेजना चाहिअे। अुपरोक्त नियम फरवरी' ५२ से लागू होगा। संशोधन-शुल्कके पूर्ति रूपमें प्रवेशके परीक्षार्थीसे आठ आना और परिचय तथा कोविदके परीक्षार्थीसे अेक रुपया लिया जायगा।

अनुवादकी भाषा--

पूर्व-स्वीकृत भाषाओंके अतिरिक्त पंजाबी भी अनुवादकी भाषा स्वीकृतकी गयी है।

रत्नके परीक्षार्थी ध्यान दें:--

अेक सुविधा—

'राष्ट्रभाषा रत्न' के वे परीक्षार्थी जो रत्नके किन्हीं चार अलग-अलग प्रश्न-पत्रोंमें अुत्तीर्ण हों परन्तु अन्य दो प्रश्न-पत्रोंमें अनुत्तीर्ण हैं, अुन्हें आगामी केवल अेक परीक्षामें सिर्फ अनुत्तीर्ण प्रश्न-पत्रोंमें बैठनेकी सुविधा मिलेगी। यह नियम सितम्बर' ५१ की परीक्षाके परीक्षार्थियोंसे लागू होगा।

रत्न मौखिक सुविधा--

अप्रैल' ५२ से रत्न-मौखिक-सुविधा-प्राप्त परीक्षार्थियोंको ५) रु. (पाँच रुपये) परीक्षा-शुल्क देना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् ५२ के लिये परीक्षा सम्बन्धी तिथियाँ—

अुत्कल, राजस्थान, विदर्भ-नागपुर तथा हैदराबाद (दक्षिण) के लिये—

फ र व री
१. परीक्षा तारीख— १६,१७ फरवरी १९५२
२. सीधे प्रार्थना-पत्र वर्धा कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख—२७ नवम्बर' ५१
३. केन्द्र-व्यवस्थापकके पास आवेदन-पत्र देनेकी अन्तिम तारीख—२० दिसम्बर' ५१
४. वर्धा-कार्यालय आवेदन-पत्र पहुँचानेकी अन्तिम तारीख— २७ दिसम्बर' ५१

शेष प्रान्तोंके लिये—

अ प्रै ल
१. परीक्षा तारीख—१९,२० अप्रैल ५२
२. सीधे प्रार्थना-पत्र वर्धा-कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख—१० फरवरी' ५२
३. आवेदन-पत्र केन्द्र-व्यवस्थापकोंके पास पहुँचानेकी अन्तिम तारीख—३ मार्च' ५२
४. आवेदन-पत्र वर्धा-कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख—१० मार्च' ५२

भूल-सुधार

अक्तूबर' ५१ की 'राष्ट्रभाषा' में प्रकाशित नये प्रमाणित प्रचारकोंकी सूचीमें कुछ भूलें रह गयी थीं। पाठक कृपया सुधारकर पढ़ें —

प्रान्त	नाम	क्रमांक	स्थान
महाराष्ट्र	श्री धनाजी कृष्ण राणे	२७११	जलगाँव
गुजरात	,, मथुरभाअी जीवाभाअी पटेल	२६६६	वालासिनोर

हमारे नये प्रमाणित-प्रचारक

प्रान्त	प्रचारकका नाम	क्रमांक	स्थान
अुत्कल	श्री पंडित श्रीनारायण मिश्र 'साहित्याचार्य'	२७६२	जाजपुररोड
राजस्थान	,, सत्यदेवराव 'सत्य'	२७६३	अजमेर
गुजरात	,, पुष्पावती भाअीलाल देसाअी	२७६४	अहमदाबाद
,,	,, श्रीकृष्ण वृन्दावन त्रिपाठी	२७६५	,,
,,	,, रतिलाल अम्बालाल जानी	२७६६	वड़ौदा
,,	,, छगनलाल प्रेमानन्द पटेल	२७६७	,,
,,	,, लालभाअी छेलभाअी दवे	२७६८	,,
,,	,, शंकर रामचन्द्र नीमकर	२७६९	व्यारा
,,	,, त्रिभुवन वजेराम दरजी	२७७०	,,
,,	,, मंगुभाअी भोगीलाल शाह	२७७१	ठासरा
,,	,, दिनकरराअी चन्द्रशंकर भट	२७७२	वलसाड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	प्रचारकका नाम	क्रमांक	स्थान
,,	,, कंचनबहन हरिलाल शाह	२७७३	कडी
,,	,, अनसुख तुलजाशंकर वोरा	२७७४	जुनागढ़
,,	,, नारायणभाअी रामजीभाअी पटेल	२७७५	वालम
,,	,, मनहरलाल जयशंकर जोशी	२७७६	शिवराजपुर
,,	,, नटवरलाल डाह्याभाअी पटेल	२७७७	अंकलेश्वर
,,	,, विष्णुशंकर माणेकलाल त्रिवेदी	२७७८	सरखेज
,,	,, बाबूभाअी सोमचन्द मोतीवाला	२७७९	सूरत
,,	,, वैकुंठलाल साकेरलाल दलाल	२७८०	नवसारी
,,	,, वजेशंकर दयाशंकर महेता	२७८१	धोराजी
महाराष्ट्र	,, सुका नामदेव भंगाले	२७८२	जलगाँव
,,	,, हीरालाल खिलनदास सभनदासाणी	२७८३	कल्याणकैम्प
,,	,, कन्हैयालाल खटनमल सभनदासाणी	२७८४	,,
,,	,, मोहनलाल नारवाणी	२७८५	,,
,,	,, आर्तमल चोअिथराम गंगवानी	२७८६	,,
,,	,, सौ० राधाबाअी परांजपे	२७८७	वेलगाँव
,,	,, जीवाजी पांडुरंग कुलकर्णी	२७८८	घटप्रभा
,,	,, प्रभाकर रघुनाथ जोशी	२७८९	वेलगाँव
,,	,, विनायक नारायण कुलकर्णी	२७९०	कोल्हापुर
,,	,, रवीन्द्र शंभू शेणवीं केंकरे	२७९१	गोवा
विदर्भ-नागपुर	,, श्री मणिराम रामाजी देवधरे	२७९२	खापा
,,	,, गोविन्द धुंडिराज जोशी	२७९३	नागपुर
आसाम	,, चारुशीला देवी	२७९४	लाबान
मध्यभारत	,, रूपलाल चौहान 'ग्रामिक'	२७९५	मन्दसौर

नये केन्द्र

क्रमांक	केन्द्र	जिला	प्रान्त
१०२४	दंमण	सूरत	गुजरात
१०५०	ओलपाड़	,,	,,
१०५३	जेतपुर	बड़ौदा	,,
१०४९	थुवावी	,,	,,
१०२८	नागौर	नागौर	राजस्थान
१०३३	मंडला	मंडला	मध्यप्रदेश
१०४२	सावर	वर्धा	,,
१०४३	सेवडाफुलि	हुबली	प० बंगाल
१०४७	तिनसुकिया	लखिमपुर	आसाम
१०३५	सावंतवाडी	रत्नागिरी	महाराष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयभारती

महाराष्ट्रकी अभिनव हिन्दी मासिक पत्रिका

संपादक— पं. मु. डांगरे

अुद्देश्य

१. सुविचारोंकी लेन-देनसे अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार सुकर करना।

२. राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा राष्ट्रलिपि देवनागरीके यथोचित प्रचारसे "अेक हृदय हो भारत जननी" सिद्ध करना।

३. भारतीय संस्कृति-साहित्य, प्रकृति परंपराका यथार्थ दर्शन करना।

४. राष्ट्रभाषा प्रचारकों, परीक्षार्थियोंकी सहायता करना।

५. विविध वृत्तियोंके अनुकूल साहित्य-सामग्री देकर महाराष्ट्रका अखिल भारतको परिचय देना तथा पारस्परिक परिचय बढ़ाकर समूचे भारतका अद्वैत आनंद प्रसारित करना।

विशेष स्तंभ

१. प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय, कोविद, रत्न, बातचीत, हिन्दी शिक्षक सनद, मध्यमा, अुत्तमा, परीक्षोपयोगी साहित्य—

२. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा प्रचार परीक्षा-विषयक सूचनाअें, आदेश —

३. हिन्दी-जगत—

४. महाराष्ट्र-दर्शन-साहित्य-परंपरा-संस्कृति विषयक--

५. केन्द्रीय प्रांतीय वृत्त

६ कहाँपर कौन क्या पढ़े ?—

७. शंका-समाधान

८. मधु-चयन

९ साहित्य-परिचय -

वर्षारंभ-जनवरीसे। प्रकाशन तिथि-हर माहकी १९ वीं तारीख। वार्षिक मूल्य ३) रु०
प्रमाणित प्रचारक तथा परीक्षार्थियोंको २) रु०—।

[व्ही. पी. का नियम नहीं है।]

पत्र-व्यवहारका पता -
'जयभारती' कार्यालय,
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
८६६ सदाशिव, ताराचंद मार्केट, शनिपारके पास,
पो. बॉ. नं० **५५८ पूना** २
(महाराष्ट्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अहमदाबाद

के तत्त्वावधानमें

हिन्दीकी साहित्यिक और

राष्ट्रभाषा-प्रचारकों अेवं परीक्षार्थियोंके अुपयोगकी

अर्ध-वार्षिक पत्रिका

"राष्ट्रवीणा"

संपादक—जेठालाल जोषी, संचालक, गुजरात प्रां. रा. भा. प्र. समिति

प्रबंध-संपादक—प्रा. रणधीर अुपाध्याय, अेम. अे., 'साहित्य-रत्न'

*** प्रथमांक प्रकाशित हो गया है। ***

विद्वज्जनोंके चिंतन प्रधान लेख, कलापूर्ण रसभरी कविताअें, परीक्षोपयोगी ठोस लेख आदि सामग्री, चयनिका, संस्कृतिस्रोत, साहित्य समीक्षा, राष्ट्रभाषा-क्षेत्रकी विशेष जानकारी आदि।

वार्षिक मूल्य २) रु० **अेक प्रति १)**

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाके प्रमाणित प्रचारकों और केन्द्र-व्यवस्थापकोंको 'राष्ट्रवीणा' आधे मूल्यमें दी जायगी।

शीघ्र मँगायें। शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ अुठायें।

जेठालाल जोशी,
संचालक
गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
खजूरी पोल, कालूपुर, अहमदाबाद (गुजरात)

गुरुराम शर्मा द्वारा राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धामें मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

न्याय और शान्ति

हृदयमें न्यायका निवास होनेसे,
चरित्रमें सौंदर्यका विकास होगा।

चरित्रमें सौंदर्यका निवास होनेसे,
घरमें सामंजस्यका वास होगा।

घरमें सामंजस्यका निवास होनेसे,
राष्ट्रमें व्यवस्थाका विस्तार होगा।

राष्ट्रमें व्यवस्थाका विस्तार होनेसे,
विश्वमें शान्तिका प्रसार होगा।

दिसम्बर १९५१

ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रा ष्ट्र भा षा

राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका मुखपत्र
संपादक
भदन्त आनन्द कौसल्यायन

विषय-सूची

१.	साहित्यका स्वरूप	...	...	२१
२.	समितिसे संबंधित ज्ञातव्य बातोंपर प्रकाश		...	२३
३.	गबनका ग्राफ	...	...	२४
४.	हिन्दी साहित्यका अितिहास	...	...	२५
५.	हमारी दृष्टिमें	...	...	२६
६.	प्रान्तीय हलचल	...	...	२७
७.	परीक्षा विभाग	...	...	३३

अेक अच्छा सुझाव

प्रचारक बन्धुओंकी ओरसे हमें कभी-कभी बड़े अच्छे सुझाव मिला करते हैं। अेक भाअीने अपना सुझाव देते हुअे जो पत्र भेजा है अुसे हम ज्योंका त्यों दे रहे हैं।

आदरणीय दुबेजी,

अपनी पिछली भेंटमें आपने मुझसे कहा था कि मैं अपनी हिन्दीकी योग्यता बढ़ाअूँ। कोविद पास किये हुअे मुझे ६ वर्ष हो चुके हैं। मैं प्रचारक भी हूँ, किन्तु अिस ओर मेरा ध्यान नहीं गया था। आपके कहनेसे मैं राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षामें बैठनेका विचार कर रहा हूँ। पुस्तकोंकी कठिनाअी है अुसे मैं अब अैसे हल करना चाहता हूँ।

मेरा जाँच पारिश्रमिक ३२।।) आपके पास जमा है; अुसी रकमसे मुझे राष्ट्रभाषा रत्नकी पुस्तकें भेज दीजिये। पैसा आवेगा तो अिधर अुधर हो जाता है। पुस्तकें आ जावेंगी तो फिर पढ़ूँगा ही और फिर परीक्षा दूँगा ही। अतः आप पैसा न भेजकर पुस्तकें ही भेज दें।

छोटे मुँह बड़ी बात क्या लिखूँ? अगर मेरा यह सुझाव आप अन्य प्रचारकोंको दे सकें तो अच्छा होगा।

आपका

(हस्ताक्षर)........

प्रमाणित प्रचारक

पत्र जिस पवित्र अुद्देश्यसे लिखा गया है अुसका मैं आदर करता हूँ। आशा है, हमारे अन्य प्रचारक अिस सुझावसे लाभ अुठावेंगे।

—परीक्षा-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा

वर्ष ११] वर्धा, दिसम्बर— १९५१ [अंक २

साहित्यका स्वरूप

विश्वव्यापी घृणा-विद्वेष अेवं हिंसा-प्रतिहिंसाके विषाक्त वातावरणके बीच हमें अेक नूतन मानवताकी सृष्टि करनी है—वैसी मानवता जिसमें प्रेम, जिसके रोम-रोम अेवं स्तर-स्तरमें न्याय, सद्भाव, सहानुभूति, समवेदनाकी भावना भरी हो। आज अेक अैसी नैतिक शक्तिकी अनिवार्य अपेक्षा है जिससे मानव जीवनकी मुरझायी हुअी लता फिर प्रेम–जलसे सिक्त होकर लहलहा अुठे। मानव जीवनके लिअे यह नैतिक शक्ति सत्य, अहिंसा और प्रेम ही हो सकता है। भारतके तपोवनसे यह अुद्‌गार अभिव्यक्त हुआ था। वल्कल-धारी ज्ञानी तपस्वियोंने बहुत पहले ही जीवनके अिस तत्वको जान लिया था कि वास्तविक आनन्द अुद्दीप्त वासनाओंकी पूर्तिमें नहीं, बल्कि मानवमात्रके साथ आत्मीयताका सम्बन्ध जोड़नेमें है। हाँ, मानवके साथ अपनापन, अुनके प्रति सेवामयी, त्यागमयी, स्नेहमयी भावनासे ओत-प्रोत होकर संवेदनशील बननेमें ही मानवताका सच्चा आनन्द है।

विश्व-मानवताके ज्योतिर्मय भविष्यमें जो विश्वास करनेवाले हैं, जिनके स्वच्छ नेत्रोंमें अनागत भविष्यका स्वप्न है, जिनके प्राणोंमें नवजीवनका स्पन्दन है, हृदयमें आशा अेवं अुत्साह है, वे युगके मंगलप्रभातकी सुनहली आभा सुदूर क्षितिजमें देख-देखकर अनुमान करने लगे हैं कि मानवकी अेकताकी अनुभूतिमें ही मानवताका जीवन दर्शन होगा। यही मनुष्यका प्रकृत धर्म होगा जो समग्र मानव जातिके लिअे मानव धर्मके रूपमें प्रतिष्ठित होगा। मनुष्य जिस दिन अिसकी ओर अग्रसर होगा अुसी दिन सभ्यता और संस्कृतिका अेकमात्र संरक्षक साहित्यका भी परिष्कार होगा।

क्षुद्र स्वार्थके कारण मानवकी निर्मल दृष्टि धूमिल बन गयी है। बिना अन्तरदृष्टिको निर्मल किये हुअे मानवताकी रक्षा, मानवका कल्याण किस प्रकार हो सकता है? यह तभी सम्भव है जब मानव सेवाका, प्रेमका मार्ग ग्रहण करे।

और अिस सेवा अेवं प्रेम धर्मके आधारपर जो साहित्य बनेगा वह साहित्य मानव मात्रका होगा, सर्व-साधारणका साहित्य होगा। वह साहित्य जो जन-युग का साहित्य कहा जायेगा। साहित्यकी साधना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुसकी सिद्धि दोनों ही दृष्टिसे श्रेष्ठ साहित्य वही है जो अधिकसे अधिक लोगोंमें प्रचारित और अधिकसे अधिक लोगोंके लिअे अुपयोगी हो। साहित्य रचनामें साहित्यकारकी कौनसी प्रेरणा काम करती है ? यही कि अपनी आत्माके प्रकाशन द्वारा बहुतोंमें, बहुत दिनोंके लिअे प्रतिष्ठित होना चाहता है। व्यापकताकी यही तीव्र प्यास साहित्य सृष्टिकी जननी है, यही साहित्यकी साधना है और साहित्यकी सिद्धि है—जन कल्याण।

हमारे विचारसे आजके मानवको मानव ही बना देना परमावश्यक है अिसलिये साहित्यकारका प्रधान कर्तव्य बन जाता है, अपनी अनुभूतिकी डोरीमें टूटे हुअे दिलोंको बाँध दे, अुसमें नवीन आशाका संचार करे, वेदनासे बन्द हुअे कंठोंमें वाणी दे। यह महान कार्य साहित्य द्वारा साध्य हो सकता है। दुख-दग्ध संसारके अुत्तप्त मरुस्थलमें जो मानवता निर्जीव हो गयी है, अुसके पुनर्जीवनकी शक्ति साहित्यके अमृत-रसमें ही संचित है। सगरकी सन्तान जब दग्ध होकर मर गयी थी, तो स्वर्गसे मन्दाकिनीकी धाराको पृथ्वी पर लाना पड़ा था। आजकी मरी हुअी मानवताको पुनरुज्जीवित करनेके लिअे साहित्य-गंगाका प्लावन चाहिये। सूरके शब्दोंमें—

चरण कमल बन्दौ हरिराअी !
जाकि कृपा पंगु गिरि लंघै,
अंधेको सब कुछ दरसाअी।
बहिरो सुनै गूँग पुनि बोलै,

यह भावना होनी चाहिये। क्योंकि आजका मानव लंगड़ा है, अंधा है, बहिरा है, गूँगा और दरिद्र है। अुसे अपनी जीवन यात्रामें पहाड़को लांघना है, विश्वको देखना है, सन्तों और साधकोंकी वाणीको सुनना है और वाचाल होकर बोलना है।

—आचार्य श्री श्रीरामवरणसिंह

(पृष्ठ २३ का शेषांश)

वर्धा' की परीक्षाओंमें भारतके अन्य प्रान्तोंके अनुसार महाराष्ट्र, गुजरात, बम्बअीसे भी सन् १९३७ से परीक्षार्थी सम्मिलित हो रहे हैं। अिस हिस्सेसे आज भी अत्यधिक संख्यामें परीक्षार्थी वर्धा समितिकी परीक्षाओंमें सम्मिलित होते हैं। देखिये—

सन् १९४८—१, २०, ९८६
,, १९४९—१, ४३, ४२७
,, १९५०—१, ८५, ७४४

सन् १९५१ में भी लगभग दो लाख (२,००,०००) परीक्षार्थी सम्मिलित हुअे हैं।

वर्धा समिति न केवल विद्यार्थियोंकी अत्यधिक संख्याके आधारपर कोविदकी मान्यता माँगती है अपितु भारतीय विधानके ३५१ कलमके अनुसार कार्य करनेवाली यह संस्था विधान स्वीकृतिके पूर्व १२ वर्षोंसे अपना काम अव्याहत रूपसे करती आ रही है। अेक दो प्रान्त अथवा प्रान्त विशेषको लेकर नहीं भारत भरमें यह संस्था अपना कार्य कर रही है।

बम्बअी सरकारको यह मालूम हो जानेपर वह अिस लोकादर पात्र संस्थाकी परीक्षाओंकी और परीक्षार्थियोंकी अर्थात् जनताकी अुपेक्षा नहीं करेगी। दृढ़ मनोवृत्तिके साथ-साथ अन्याय दूर करनेकी हार्दिक अिच्छा और अुसके लिअे भरसक प्रयत्न यह भी हमारे बम्बअी सरकारके शिक्षण मन्त्रीजीका गुण विशेष रहा है। किया गया अन्याय दूर करनेके लिअे हम प्रयत्नशील हैं, अन्याय दूर होगा और कोविदको मान्यता शीघ्र मिलेगी अैसा हमें विश्वास है। सत्यमेव जयते।

(अेक विस्तृत लेखका सारांश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितिसे संबंधित ज्ञातव्य बातोंपर प्रकाश

श्री बा. पुं. मोहरीर, नसिराबाद

बम्बअी राज्यके कुछ भाअियोंने 'कोविद' अमान्य किये जानेका गलत मत बनाकर बम्बअी सरकारने अुसे अमान्य क्यों किया, अिसके सम्बन्धमें कारण बताये हैं जो अप्रस्तुत हैं, गलत हैं, भ्रामक हैं। अिन कारणोंके साथ सही सही जानकारी दी जा रही है जो ज्ञातव्य है।

सर्वप्रथम मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि "कोविद" परीक्षा बम्बअी सरकारने अमान्य नहीं की है। यह स्पष्ट और सत्य है कि "कोविद" परीक्षा 'हिन्दी शिक्षक सनद' के लिअे मान्य की गयी है। सरकारी पत्रकमें अुल्लेखित चार परीक्षाओंके साथ कोविद परीक्षाका नाम क्यों नहीं जोड़ा गया अिसकी आवश्यक कार्यवाही सरकार कर रही है। निकट भविष्यमें शीघ्र ही कोविद परीक्षाको भी मान्यता मिलेगी अिसमें कोअी सन्देह नहीं है।

वर्धा समिति हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी परीक्षा समिति है यह कहना भी असत्य है। सम्मेलनकी स्वतन्त्र परीक्षा समिति अलग है और अुनकी परीक्षाअें भी। वर्धा समिति अेक स्वाधिकारसम्पन्न संस्था है। सम्मेलनकी परीक्षाअें और वर्धा समितिकी परीक्षाअें दोनोंमें महत् अन्तर है।

और अेक विचित्र कारण बताया जाता है कि वर्धा समिति मातृभाषा हिन्दीका प्रचार करती है। मातृभाषा हिन्दी क्या चीज है ? वस्तुतः हिन्दी भाषाकी अितनी शैलियाँ स्थान स्थानपर प्रचलित हैं कि अुसकी फलानी अेक भाषा ही हिन्दी (मातृभाषा) है, अन्य हिन्दीकी शैलियाँ हिन्दी (मातृभाषा) नहीं हैं यह कहना असम्भव है।

और जब कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन भी यह घोषित करता है कि "राष्ट्रभाषाकी दृष्टिसे हिन्दीका यह स्वरूप मान्य समझा जाय जो हिन्दू मुसलमान आदि सब धर्मोंके ग्रामीण और नागरिक व्यवहार करते हैं; जिसमें रूढ़ सर्वसुलभ अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों या मुहावरोंका बहिष्कार नहीं होता" अिसी प्रकार प्रादेशिक भाषाके आवश्यक शब्द हिन्दीतर भाषियों-द्वारा हिन्दीमें सम्मिलित कर हिन्दीके विकास सम्बन्धी अबोहरके प्रस्तावमें कहा गया है।

राष्ट्रभाषाके अिस स्वरूपका पुरस्कार और प्रचार वर्धा समितिने किया है। भारतीय संविधानके ३५१ कलमके अनुसार यही बात आवश्यक अेवं अुचित रही है।

अतः अिसके सम्बन्धमें यह कह देना पर्याप्त है कि वर्धा समिति राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार कर रही है।

अिससे यह भी स्पष्ट है कि वर्धा समितिकी नीति सम्पूर्ण राष्ट्रीय और भारतीय संविधानके साथ है।

सन् १९३६ के नागपुरके हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें बाबू राजेन्द्रप्रसादकी अध्यक्षतामें बाबू पुरुषोत्तमदास टंडनने वर्धा समितिकी स्थापना की।

तबसे आजतक संपूर्ण राष्ट्रीय दृष्टिसे अिस समितिने अहिन्दी प्रान्तोंमें राष्ट्रभाषाका प्रचार और प्रसार किया है। अिस संस्थाके आजतकके पदाधिकारी और सदस्य नामावलीको देखनेपर यह मालूम होगा कि पूज्य महात्मा गांधी, डा. राजेन्द्रप्रसाद, पं. जवाहरलाल नेहरू, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, श्री शंकरराव देव आदि नेताओंके मार्गदर्शनका लाभ अिस संस्थाको प्राप्त हुआ है।

यह किसीसे छिपा नहीं है, वह सूर्य-प्रकाश जैसा स्पष्ट और जाहिर है कि 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

(शेष पृष्ठ २२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गबनका ग्राफ

श्री चन्दूलाल दुबे, अेम. अे., साहित्य-रत्न

गबनकी प्रारम्भिक कथावस्तुका केन्द्र 'चन्द्रहार' ही है। बिसाती मार्मिक भावसे सिर हिलाकर कहता है—बहूजी, चार दिनमें बिटियाको असली चन्द्रहार मिल जायगा। जालपाके विवाहकी चर्चा आरंभ होती है तो पाठक सोचता है कि संभवतः जालपाको चन्द्रहार मिल जायगा। लेकिन चढ़ावेमें चन्द्रहार न पाकर अुन सहेलियोंकी बातचीत ध्यानसे सुनने लगता है। चढ़ावेमें चन्द्रहारके न रहनेसे कथावस्तु दूसरी ओर मुड़ जाती है।

प्रस्तुत अुपन्यासकी कथावस्तुको हम दो भागोंमें विभाजित कर सकते हैं। पहला भाग वहाँतक होगा जहाँ रमानाथ प्रयागसे रफूचक्कर हो जाता है अर्थात प्रयागकी घटनाओंसे संबद्ध भाग। दूसरा भाग कलकत्तेकी घटनाओंको लेकर चलता है। प्रथम भागमें कथावस्तु केवल जालपा तथा रतनकी आभूषणप्रियतासे घेरी गयी है। कथा केवल अिसी विषयको लेकर आगे बढ़ती है मगर दूसरे भागमें अिस समस्याकी चर्चा बिलकुल नहीं आती है। दूसरे भागकी कथा वस्तुका केन्द्र जालपाका आदर्श चरित्र मात्र है। अिस भागमें पाठक बिलकुल भूल जाता है कि कथाका आरम्भ आभूषणप्रियतासे हुआ था। हाँ, लेखक जरूर दो बार अिसकी याद दिलाता है। अेक बार देवीदीन कहता है कि जग्गोको भी गहने प्यारे हैं। पुलिस अधिकारीके कहनेके अनुसार जालपाको मनानेके लिअे रमानाथ गहने ले जाता है—यह दूसरी बार है। कथा वस्तुका दूसरा भाग बिलकुल दूसरी पटरीपर चलता है। कुतूहलकी मात्रा पहले भागकी अपेक्षा दूसरे भागमें अधिक है। पहले भागमें जालपाकी स्थितिपर तरस खाते हैं और रमानाथ क्या-क्या करता है, अिसकी ओर तमाशाकी नजरसे देखते हैं। द्वितीय भागमें रमानाथकी दशा देखकर घृणा अुत्पन्न होती है और जालपाकी कुशलतापर मुग्ध हो जाते हैं।

कथावस्तुके प्रथम भागमें रतनके प्रवेशसे कथा-वस्तु चक्रव्यूहमें घुस जाती है। अिस चक्रव्यूहसे बाहर निकलनेके लिअे रमानाथ प्रयागसे नौ दो ग्यारह हो जाता है। प्रश्न यह अुठता है कि गजब किनके कारण हुआ? अिसके लिये दोषी रतन है या जालपा? अगर रतन रमानाथको कंगनके लिअे रुपये न देती तो यह मुसीबत कहाँसे आती? कहनेका अभिप्राय यह है कि रतनके प्रवेशने कथावस्तुकी गतिको और भी जोर दिया है, साथमें कथावस्तुकी दिशा ही बदल जाती है। गबनका असली मोड़ यहीं है।

गाड़ीमें देवीदीन तथा रमानाथकी मुलाकात कथा विकासमें क्या स्थान रखती है? देवीदीनका मिलना अेक आकस्मिक घटना है। अगर देवीदीनसे भेंट न होती तो न जाने रमानाथकी गाड़ी कहाँ रुकती! अिस कथा भागमें देवीदीनका खास हाथ है। देवीदीनसे सहायता और सहानुभूति न मिली होती तो अनुभव-हीन रमानाथ शायद बहुत जल्दी जेलकी हवा खाता। फिर भी आखिर वह पुलिसके पंजोंमें फंस ही गया।

'गबन' की कथावस्तुमें 'मनोरमा थियेटर' में राधेश्यामका नया ड्रामा यद्यपि कोअी विशेष महत्त्व नहीं रखता, फिर भी, कथावस्तुके विकासमें यह मोड़ ध्यान देने लायक है। अगर रमानाथ ड्रामा देखनेके वास्ते टिकट कटाने नहीं गया होता तो संभवतः अुसकी छोटीसी चायकी दूकान अेक बड़े होटलका रूप धारण कर लेती और वह जालपाको कलकत्ते बुलवाकर अुसे सेठानी बना, चैनकी बंशी बजाता। होनी कुछ और ही लेकर आयी थी। यह ड्रामा कथावस्तुमें अैसा मोड़ लाया कि जालपाका जीवन ही बदल गया। तबसे जालपाको हम अेक तपस्विनीके रूपमें देखते हैं।

अिस प्रकार पूरी कथावस्तुमें पाठक चार-पाँच मोड़ देखते हैं और हरअेक मोड़पर ग्राफकी रेखा बदलती तथा अूँची होती जाती है और कुतूहलकी रेखा भी अुसीके साथ चलती है। अितने मोड़ होते हुअे भी चरम सीमाअें अधिक नहीं है। कथावस्तुका ग्राफ सुन्दर बन पड़ा है।

—'राष्ट्रवीणा' से सादर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्यका अितिहास

(रचयिताः— श्री चिं० वा० ओंकार, प्रमाणित प्रचारक)

(संक्षिप्तावलोकन)

- चारण — आदिकाल — संवत् १०५०-१३७५
  - अपभ्रंश — संवत् १०५०-१२०० — विद्यापति
  - वीरगाथा — संवत् १२००-१३७५ — खुसरो
- धार्मिक, पूर्वमध्य, स्वर्णयुग — भक्तिकाल — संवत् १३७५-१७००
  - निर्गुण
    - ज्ञानाश्रयी (सन्त) — कबीर
    - सूफ़ी (प्रेम) — जायसी
  - सगुण
    - राम — तुलसीदास
    - कृष्ण — सूरदास
- अुत्तरमध्य — रीतिकाल — संवत् १७००-१९०० — केशवदास
- स्वातंत्र्य, गद्य — आधुनिक काल — संवत् १९०० से आजतक
  - गद्य
    - प्रादुर्भाव — १ लल्लूलाल, २ सदलमिश्र, ३ सदासुखलाल, ४ अिंशा अल्ला
    - आविर्भाव — शिवप्रसाद, लक्ष्मणसिंह
    - प्रथम अुत्थान (संवत् १९२५-५०) — भारतेन्दु-हरिश्चंद्र
    - द्वितीय अुत्थान (संवत् १९५०-७५) — महावीर प्रसाद द्विवेदी
    - तृतीय अुत्थान (संवत् १९७५-से आजतक) — प्रेमचंद
  - पद्य
    - ब्रजभाषा
      - पुरानी परिपाटीके
      - पुरानी परिपाटीपर चलनेवाले
      - प्रथम अुत्थान (सं.१९२५-५०) — भारतेन्दु हरिश्चंद्र
      - द्वितीय अुत्थान (सं.१९५०-७५) — (महावीर प्रसाद द्विवेदी)
      - तृतीय अुत्थान (सं. १९७५ से आजतक) — वियोगी हरि
    - खड़ीबोली
      - पुरानी परिपाटीके
      - पुरानी परिपाटीपर चलनेवाले
      - प्रथम अुत्थान (सं.१९२५-५०) — भारतेन्दु हरिश्चंद्र
      - द्वितीय अुत्थान (सं. १९५०-७५) — मैथिलीशरण गुप्त
      - तृतीय अुत्थान (सं. १९७५ से आजतक) — सुमित्रानंदनपंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दृष्टिमें

गांधी और साम्यवाद—ले०—श्री किशोरलाल मशरूवाला, प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद। पृष्ठ संख्या १३२; मूल्य १।)

प्रस्तुत पुस्तक 'हरिजन सेवक' में प्रकाशित लेखककी अेक लेखमालाका संग्रह है। आज संसारके सामने विशेषकर भारतके सामने गान्धीवाद और साम्यवाद मुख्य प्रश्नके रूपमें अुपस्थित है। कितने तो दोनोंके साधनमें भिन्नता मानते हुअे भी साध्यकी अेकता माननेका आग्रह करते हैं। पर लेखकने दोनों का स्पष्ट वर्णन करते हुअे दोनोंकी विभिन्नताका चित्रण बड़े अच्छे ढंगसे किया है। अिससे गान्धीवाद तथा मार्क्सवादकी सूक्ष्म बातोंके विवेचनकी जानकारी की अपेक्षा तो नहीं रखनी चाहिये, पर मोटी-मोटी साधारण बातोंकी जानकारी तो अिससे मिल ही सकती है। पुस्तक कअी सामयिक प्रश्नोंका समाधान कर सकनेमें समर्थ है।

पुस्तकके आदिमें विनोबाजीने विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखकर पुस्तकमें चार चाँद लगा दिये हैं।

—प्रभुनाथ मिश्र

मंगल हो तुम्हारा!—लेखक और प्रकाशक—वि० द० घोटणे, ४०२ सी संजाला, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)। पृष्ठ संख्या ४४, मूल्य ॥=)

बीसवीं सदीमें स्त्री और पुरुष दोनों अेक दूसरेका जरा भी बन्धन न मानते हुअे अपना जीवन सुखी बनाना चाहते हैं। अिस स्थितिको लेकर यह नाटिका लिखी गयी है। अेक प्रेमविवाहिता स्त्री अपने पतिके समक्ष विवाह पूर्वके अपने प्रेमीके साथ स्वच्छन्द बर्ताव करती है। अिधर वह प्रेमी भी दूसरी युवतीको अपने प्रेम जालमें फँसाये रहता है। अिसके द्वारा प्रेम विवाह को आदर्श रूपमें मार्गदर्शनका सफल प्रयास किया गया है। अहिन्दी-भाषी लेखकका यह प्रयास स्तुत्य है। मंचपर खेले जानेका भी ध्यान लेखकने रखा है।

—कु० पा० पाटील

प्राप्ति-स्वीकार

ग्रामणी—लेखक-गिरिजाशंकर पांडेय, प्रकाशक-शारदा लाअिब्रेरी शिवानगर (औरंगाबाद), काशी। पृष्ठ संख्या ४६, मूल्य ।।।)

हिन्दी भाषा और लिपि परिचय और मौखिक परीक्षा प्रश्नोंकी सूची—लेखक अेवं प्रकाशक—वि. श्री. चौधरी, मन्त्री, राष्ट्रभाषा प्रचार मंडल, सांगवी पू. खा.। पृष्ठ संख्या क्रमशः १४,१८ मूल्य =)

प्रारम्भिक सत्वदर्शन—लेखक अेवं प्रकाशक—कान्तिभाअी पु. पटेल, बांधणी (गुजरात)। पृष्ठ संख्या ५६, मूल्य ।।।=)

पंचवटी अेक सरल अध्ययन—लेखक अेवं प्रकाशक—श्री रामुलु गुप्त, लोकमान्य हिन्दी मन्दिर, गवर्नर पेट, विजयवाड़ा २। पृष्ठसंख्या ७२, मूल्य १।)

राष्ट्रभाषा-गीतांजलि—रचयिता अेवं प्रकाशक—पं. रूपकुमार जेठानी 'घायल', व्यवस्थापक, राष्ट्रभाषा विद्यालय, बैरागढ़ (भोपाल)। पृष्ठसंख्या २४, मूल्य ।)

विकास (हस्तलिखित)—प्रकाशक—साहित्य-विकास मंडल, जावरा (मध्यभारत)।

राही (कहानी अंक)—संपा. अेवं प्रकाशक—श्री. कृष्ण शर्मा, कोलूपाड़ालेन, सलकिया, हवड़ा। पृष्ठ संख्या ५४, मूल्य ।)

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा (पन्द्रह वर्ष)—ले०—श्रीराम शर्मा, प्रकाशक—हैदराबाद राज्य हिं. प्र. सभा, हैदराबाद दक्षिण। पृष्ठ संख्या १३०, मूल्य १।) हाली

रचनात्मक कार्यक्रम—ले०—मो. क. गान्धी, अनु०—काशिनाथ त्रिवेदी, प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद। पृष्ठ संख्या ५१, मूल्य ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रांतीय हलचल

[**निवेदन**—राष्ट्रभाषा प्रचारकों और केन्द्र-व्यवस्थापकोंसे निवेदन है कि वे कृपया "राष्ट्रभाषा" में प्रकाशनार्थ अपने केन्द्रके वर्ग, समारोह आदि राष्ट्र-भाषा-कार्यका विवरण, सामाचार आदि **प्रान्तीय संचालकके** द्वारा भेजें। --व्यवस्थापक]

महाराष्ट्र—

पूर्व खानदेश रा० भा० प्रचार सम्मेलनका द्वितीय अधिवेशन :—

खिर्डी :—पू. खा. राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलनका द्वितीय अधिवेशन अिस छोटेसे देहातमें दि. ४-११-५१ रविवारको श्री रामेश्वर दयाल दुबे, अेम्. अे., साहित्य-रत्न, परीक्षा मन्त्री राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

सबेरे आठ बजे श्री ह. शं. मेहताजीके हाथों ध्वजवंदनके साथ सम्मेलनका कार्यक्रम शुरू हुआ। श्री दादासाहेब धामणकर, चेअरमन, डि० स्कूलबोर्ड पू. खा. ने सम्मेलनका अुद्घाटन करते हुअे कहा कि राष्ट्रभाषा प्रचारके राष्ट्रीय कार्यमें संघर्ष नहीं होना चाहिये। राष्ट्रभाषा प्रचारका कार्य 'अेक हृदय हो भारत जननी' की भावना दृढ़ करनेके लिअे है। सरकारकी नीतिके लिअे क्या कहें? जनताके लिअे आपका कार्य आवश्यक है। अुसे जारी रखें।

स्वागताध्यक्ष श्री चां. ग. चौधरीजीने अुपस्थित राष्ट्रभाषा प्रेमियोंका स्वागत किया।

अध्यक्ष श्री दुबेजीने बतलाया कि राष्ट्रभाषा प्रचारका कार्य अब व्यापक हो रहा है। करीब-करीब ३००० प्रचारक तथा केन्द्र-व्यवस्थापक निष्ठा अेवं लगनसे राष्ट्रभाषाका कार्य कर रहे हैं। प्रारंभसे ही हिन्दीको संतोंका आशीर्वाद, जनताका समर्थन मिला है। किन्तु सरकारका आवश्यक अेवं अुचित सहयोग नहीं मिल पाया। राष्ट्रभाषा प्रचारके विकासको देखते हुअे बम्बअी सरकारकी नीतिसे हमें निराश नहीं होना चाहिये। वर्धा समितिके विशाल दृष्टिकोण तथा व्यापक क्षेत्रको देखते हुअे निकट भविष्यमें बम्बअी सरकार "कोविद" को अवश्य मान्यता देगी। हम भीख नहीं माँगते हैं। हमारी माँगके पीछे हमारा बल, हमारी भावना तथा हमारी लगन और हमारा विस्तृत कार्य है। आपने प्रचारकोंसे अनुरोध किया कि वे अपनी राष्ट्रभाषाकी योग्यताको अधिकसे अधिक बढ़ावें।

अेक बजेसे दो बजेतक प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकोंका परस्पर परिचयका कार्यक्रम हुआ।

दुपहरको ३ बजेसे खुला अधिवेशन शुरू हुआ। श्री वा. ना. सारंगजीने सम्मेलनके लिअे प्राप्त शुभ-संदेशोंको पढ़ सुनाया। स्वागत मन्त्री श्री रा. वा. पाटीलजीने अपने वक्तव्यमें राष्ट्रभाषा प्रचार तथा प्रसारमें स्नेह सम्मेलनकी आवश्यकता बताते हुअे कहा कि अिस तरहके सम्मेलनसे ही हम अेक दूसरेके अधिक निकट पहुँचते हैं और अिससे राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें बल मिलता है। पिछले वर्षके कार्य विवरणके साथ आपने कहा, प्रचार कार्यको बढ़ाकर अुसको हम सब अधिक सुचारु तथा सुगठित रूप दे सके हैं। यद्यपि आज बम्बअी सरकारने हमारी परीक्षाओंके बारेमें अुपेक्षा दिखलायी है तो भी हमारा विश्वास है कि हमारी तपश्चर्याका फल निकट भविष्यमें अवश्य मिलेगा।

अधिवेशनमें ४-५ प्रस्ताव स्वीकृत किये गये। अेक प्रस्ताव द्वारा बम्बअी सरकारसे अनुरोध किया गया कि वह शीघ्रातिशीघ्र 'कोविद' को मान्य परीक्षाओंमें स्थान दें।

अध्यक्ष श्री दुबेजीने समारोप करते हुअे बड़ा आनन्द व्यक्त किया। राष्ट्रगीत होकर सभाका विसर्जन हुआ। शामको ६ बजेसे ७॥ बजेतक फैजपूरके गायन-शिक्षक श्री निंबराज नेहेतेजीका गायन हुआ। आपका गायन बहुत दिलचस्प रहा।

खटाव :—अप्रैल १९५१ की रा० भा० परीक्षाओंका प्रमाण-पत्र-वितरण सभारंभ दि० ७-६-५१ को श्री शं० ना० जोशी, सदस्य 'भारत अितिहास संशोधन मंडल, पुणें' के शुभ हाथों हुआ। काफी संख्यामें ग्रामस्थ अुपस्थित थे। केन्द्रका अहवाल पढ़नेके-बाद अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र दिये गये।

शिंदखेड़ा :—गत अप्रैल १९५१ की रा० भा० परीक्षाओंमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र देनेका समारोह यहाँके न्यू अिंग्लिश स्कूलके सेक्रेटरी श्री रा० रा० भय्यासाहब कुलकर्णीजीकी अध्यक्षतामें मनाया गया।

समारोहमें केन्द्र-व्यवस्थापक और पश्चिम-खानदेश रा० भा० प्र० समितिके अध्यक्ष, प्रायः सभी प्रचारक और हिन्द प्रेमी सज्जन बड़ी संख्यामें अुपस्थित थे। राष्ट्रभाषाका महत्व बतलाते हुअे अध्यक्षजीने अपना सुश्राव्य भाषण पूरा किया।

मोरगाँव :—अिस केन्द्रके अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका प्रमाण-पत्र-वितरण समारोह दि० २२-७-५१ को प्रा० प्र० रा० भुपटकरजी, अेम्. अे., सा. रत्नकी अध्यक्षतामें मराठी स्कूल नं० १ में बड़े अुत्साहके साथ सम्पन्न किया गया। गाँवके नागरिकोंने समारोहमें बड़ी संख्यामें सम्मिलित होकर हिन्दीके प्रति अपना प्रेम व्यक्त किया। गाँवके प्रतिष्ठित नागरिक श्री प्रेमचन्द देवचन्द दोशीजीने प्रथम श्रेणीमें अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंको पुरस्कृत किया।

अध्यक्षजीने भाषणमें कहा कि हरअेक स्वावलंबी बने तथा राष्ट्रभाषाका महत्व समझते हुअे अुसका आसन स्थिर करे।

हिन्दीके प्रेमी-सज्जनों तथा प्रचारकोंकी सहायतासे केन्द्रका कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है।

चिंचूर :—१५ अगस्त १९५१ स्वातंत्र्य-दिनके सुअवसरपर श्री काशीकरजीकी अध्यक्षतामें प्रमाण-पत्र वितरण समारोह मनाया गया। अिस अवसरपर आमदार श्री रणखाँबेजी भी अुपस्थित थे। अध्यक्ष श्री काशीकरजीने अपने भाषणमें राष्ट्रभाषाका महत्व बताया।

केन्द्र-व्यवस्थापक श्री निकालेजीने समयोचित भाषणके साथ केन्द्रके कार्यका ब्यौरा दिया। प्रमाणित प्रचारक श्री सोमवंशीजीने अुत्साहवर्धक भाषण देकर अिस कार्यक्षेत्रकी महत्ता गायी।

मंगसुली :—गत अप्रैल १९५१ की परीक्षामें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र देनेका समारोह बॅरिस्टर श्री जी डी. पाटीलजीकी अध्यक्षतामें सफलतासे मनाया गया।

यहाँके अिनामदार श्रीमंत सरकार विलासराजे पवार, प्रधान मन्त्री श्री राघवेंद्रराव देशपांडे, देशभक्त श्री अेस्. अेम्. कोष्टी और पंचायत मेंबर्स, प्रतिष्ठित नागरिक तथा अन्य सज्जन अिस समारोहमें अुपस्थित हुअे थे।

अध्यक्षजीने राष्ट्रभाषाकी आवश्यकतापर गौरवपूर्ण भाषण किया। राष्ट्रका महत्व राष्ट्रभाषापर निर्भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। लगभग अेक-घंटेतक सुश्राव्य भाषण हुआ। आभार प्रदर्शनके बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

मुधोळ:— दिनांक २६ अगस्त १९५१ रविवार को सुबह मराठी-शालागृहमें स्थानीय परीक्षा-केन्द्रसे अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र देनेका समारोह बम्बअी सरकारके महसूल विभागके अुपमन्त्री माननीय श्री के. अेफ्. पाटीलजीकी अध्यक्षतामें सुसम्पन्न हुआ। प्रचारक श्री जगन्नाथ टंकसालीजीने अनुमोदन देते हुअे, "कर्नाटकके त्यागी नेता, और कार्यकुशल अुपमन्त्री"— अिन शब्दोंमें अध्यक्षजीका परिचय करा दिया।

श्री पाटीलजीने अपने अध्यक्षीय भाषणमें हिन्दीके प्रति प्रेम व्यक्त किया। माननीय श्री अुपमन्त्रीजीने कहा कि राष्ट्रभाषा प्रादेशिक भाषाओंपर आक्रमण करनेके लिअे नहीं है। अुनका प्रसार और महत्व भी बढ़ रहा है।

अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको प्रमाण-पत्र देकर सर्व-प्रथम आये हुअे विद्यार्थियोंको पुरस्कार बाँटे गये (१) कुमारी शान्ता जंवगी (प्रारम्भिक), (२) सौ. कमलाबाअी (प्रवेश), (३) कुमारी शारदा कुलकर्णी (परिचय)। वन्देमातरम् होकर कार्यक्रम समाप्त हुआ।

नासिक जिला राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन:

प्रथम अधिवेशन—दिसम्बर ५१ के अन्तिम सप्ताहमें मनमाड़में नासिक जिला राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन होगा। सम्मेलनके निमन्त्रणपत्र यथासमय नासिक जिलेके राष्ट्रभाषा प्रचारक, केन्द्र-व्यवस्थापक, और प्रेमी सज्जनोंके पास पहुँच जायेंगे। हमारा सभीसे साग्रह निवेदन है कि वे हमें सक्रिय सहयोग दें और अिस सम्मेलनमें अवश्य पधारकर अुसे सफल बनावें।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति; पुणे कार्यालयसे—

माननीय केन्द्रव्यवस्थापकों तथा प्रमाणित प्रचारको! बम्बअी सरकारने अपने ता. १ सितम्बर १९५१ के आदेशपत्रक नं. २५४१।३४ के द्वारा राज्य के सरकारी कर्मचारियोंके लिये जिन चार परीक्षाओं को मान्य घोषित किया है अुनमें "राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति", वर्धाकी परीक्षाओंका अुल्लेख नहीं है; अिस बातका हम सभीको बड़ा दुख है।

अुक्त मान्य परीक्षाओंमें परिचय-कोविदका भी समावेश हो अिसलिये हमने कोशिशें की हैं और आज भी हम अुसीमें लगे हुअे हैं। बम्बअी राज्यके पन्तप्रधानादिसे हम लोग मिले। हमारा पाठ्यक्रम सभी अधिकारियोंके पास पहुँच गया है; और बम्बअी-राज्यके पोलिटिकल और सर्व्हिसेस तथा शिक्षा-विभागोंकी तरफसे अिस दिशामें आवश्यक पूछताछ हो रही है। और अबतकके प्रयत्नोंसे तथा मुलाकतोंसे हमें यही लग रहा है कि थोड़े ही दिनोंमें हमारी परीक्षाअें भी मान्य हो जाअेंगी। अिस सम्बन्धमें विचार चालू हैं और शीघ्र ही निर्णय प्रकट कर देंगे;' अिस प्रकार सहानुभूतिके पत्र व तार (दि. ७, और ८ नवम्बर) हमें सरकारकी ओरसे प्राप्त हुअे हैं। यद्यपि सरकारी रूटीनके कारण अिस बातके होनेमें कुछ विलम्ब-सा हो जानेकी सम्भावना है, अिससे हमें नाअुम्मीद होनेकी कोअी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

सन् १९३७ से हमने अपना राष्ट्रभाषा प्रचारका कार्य विशेष अुद्देश्योंको लेकर शुरू किया। वे हमारे अुद्देश्य राष्ट्रीयता और अेकता ये ही थे। अिन्हींको लक्ष्य करके हमने राष्ट्रभाषा हिन्दी व राष्ट्रलिपि देवनागरीका प्रचार अबतक लौ-लगनके साथ किया, कर रहे हैं और भविष्यत्में करेंगे भी; बीचमें तरह-तरहकी बाधाअें, रुकावटें आयीं; हमने अुन सबका सामना करके अपने प्रचार कार्यको अक्षुण्ण तथा अग्रसर रखा।

जहाँ १९३७ में आठों प्रान्तोंको मिलाकर सिर्फ ६०० परीक्षार्थी परीक्षाओंमें सम्मिलित होते थे वहाँ आज डेढ़-डेढ़, दो-दो लाख सम्मिलित होते हैं और वह भी सालमें दो बार। अिसमें हमारे सिद्धान्त, नीत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीत, पाठ्यक्रम, परीक्षा-प्रणाली आदि बातोंकी ही महत्ता तथा अुपयोगिता सिद्ध होती है। बीचमें बम्बअी सरकारने अपनी हिन्दुस्तानी लोअर स्टँडर्ड परीक्षाके समकक्ष कोविदको माना था और शिक्षक-सनद परीक्षाके लिये कोविद आज भी मान्य है। फिर भी अुक्त जिन परीक्षाओंको सरकारी कर्मचारियोंके लिये आज आवश्यक घोषित किया गया है, अुनमें कोविदका अुल्लेख न पाकर हमें सखेद आश्चर्य होना स्वाभाविक है। परन्तु निरुत्साहित होनेकी आवश्यकता बिलकुल नहीं दिखायी देती। सरकारने कोविदको अमान्य घोषित नहीं किया है और जब हम यह देखते हैं कि कुछ संस्थाअें 'कोविद अमान्य—कोविद अमान्य' अिस प्रकार पत्रक-पर्चे बाँटकर, समाचार-पत्रोंमें अुसकी छान-बीनकर रहे हैं तब हमें बड़ा ही दुख होता है। राष्ट्रभाषा प्रचार क्षेत्रमें काम करनेवाले हमारे ही भाअी सहयोगी रा. भा. प्रचार कार्यको जब दोष लगाते फिरते हैं, जनतामें विभ्रम, विद्वेष फैलाते हैं और वास्तविकताका विपर्यास करते हैं और अपने हृदयकी क्षुद्रताका परिचय देते हैं तब हमें दुख होना स्वाभाविक ही है। किन्तु अैसे ही समयपर हमें अपने सिद्धान्त पर शान्तिसे अटल रहनेकी नितान्त आवश्यकता है। हमारी परीक्षा-प्रणाली, हमारी रीत-नीत, हमारे सिद्धान्त, पूरेका-पूरा हमारा प्रचार राष्ट्रभाषा प्रचार की दृष्टिसे सौ प्रतिशत निर्दोष ही रहा है। जनताने लाखोंकी संख्यामें शामिल होकर अिस सम्बन्धमें हमें सर्टिफिकेट दिया है और भारतकी बहुतांश सरकारोंने हमें स्वीकृत भी समझा है। हमें पूरा विश्वास है कि शीघ्र ही बम्बअी सरकारकी दृष्टिमें भी हमारा प्रचार खरा सोना अुतर आयेगा। अिस विश्वाससे हमें अुत्साहसे अपने कार्यमें बराबर लग जाना चाहिये।

अब प्रार्थना यही है कि हम अपने प्रचार कार्यमें अधिक सुदृढ़तासे, सतर्कतासे जुटकर आगे बढ़ें। केवल सरकारी कर्मचारी ही हमारा लक्ष्य नहीं है, शेष ९८ प्रतिशत जनताको भी राष्ट्रीयता तथा अेकताके सूत्रमें पिरोकर अुन्हें राष्ट्रकी सेवाके लिये राष्ट्रभाषाका ज्ञान देकर पुरुषोत्तम महात्मा बनाना है।

जैसे कि प्रारम्भमें लिखा है, अबतककी घोषित परीक्षाओंमें राष्ट्रभाषा कोविदका समावेश सरकार शीघ्र ही करे अिस दिशामें हम बम्बअी, गुजरात और महाराष्ट्र प्रान्तीय समितियोंके यत्न चालू हैं। सरकारी कार्यवाहीकी रूटीनमेंसे निकलकर निर्णय प्रकट होनेमें कुछ विलम्ब हो जाय तो हमें अपने प्रचार-कार्यको नहीं रोकना है। सत्त्व-परीक्षाके अवसरपर हमें अति शान्त, शुद्ध रहकर अपने कार्यको आगे बढ़ाना ही है। लोगोंमें तरह-तरहकी गलत फहमियाँ फैली हुअी हैं, फैलायी जा रही हैं; अुनको दूर करना हमारा परम कर्तव्य है। अिस कर्तव्यको निबाहनेमें हम मानवताको राष्ट्रभाषा प्रचारके चरम लक्ष्य-राष्ट्रीयता तथा अेकता को कभी न भूलें। कुल्हाड़ीके मुकाबिलेमें सूअीसे काम लें। अुसीमें हमारे कार्यकी सफलता है।

—पं. मु. डांगरे, संचालक

बंबअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा कार्यालयसे—

बम्बअी नगर तथा अुपनगरोंके राष्ट्रभाषा प्रचारकोंकी तारीख ११ नवम्बर १९५१ की सभामें स्वीकृत प्रस्तावः—

"बम्बअीके राष्ट्रभाषा प्रचारकोंकी यह सभा बम्बअी सरकारकी हिन्दी परीक्षाओंको मान्यता देनेकी पक्षपातपूर्ण नीतिपर बड़ा क्षोभ प्रकट करती है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धाकी प्रचार परीक्षाअें, न केवल बम्बअी राज्यमें बल्कि देशके दूसरे अहिन्दी राज्योंमें अेवं दूर विदेशोंमें पिछले १५ वर्षोंसे लोकप्रिय हैं। अैसी राष्ट्रीय संस्थाकी "राष्ट्रभाषा-कोविद" परीक्षाको मान्यता न देकर हिन्दीके व्यापक प्रचारमें सरकारने रुकावट पैदा कर दी है। जिन परीक्षाओंको मान्यता दी गयी है अुनसे अिस समितिका कार्य कअी गुना अधिक है और अिसका संगठन देशके कोने-कोनेमें फैला हुआ है। हमारा बम्बअी सरकारसे अब भी सानुरोध निवेदन है कि वह देशके अन्य प्रान्तोंकी सरकारोंकी तरह हिन्दीके सम्बन्धमें अुदार नीतिको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनाकर अुनकी तरह वर्धा समितिकी कोविद परीक्षाको मान्यता देकर प्रोत्साहन दे।"

"अिस सभाको अिस बातसे बड़ा ही आश्चर्य होता है कि कोविद परीक्षा जो आजतक सरकारी कर्मचारियोंके लिये मान्य थी और आज भी बम्बअी सरकारकी हिन्दी शिक्षक सनद परीक्षाके लिये वह मान्य है, अुसको अन्य परीक्षाओंके साथ मान्यता क्यों नहीं दी गयी? हमारा विश्वास है कि मान्यता सम्बन्धी यह दोष बम्बअी सरकार तुरन्त सुधार लेगी और बम्बअी राज्यकी सबसे बड़ी और पुरानी हिन्दी प्रचारके संस्थाके अनुभवका लाभ अुठावेगी। अन्यथा हमें सरकारकी हिन्दी सम्बन्धी अिस नीतिका घोर विरोध करना होगा।"

"यह सभा बम्बअी प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभाकी कार्य समितिसे यह अनुरोध करती है कि वह, बम्बअी सरकार द्वारा जो अन्याय हुआ है अुसे दूर करवानेके लिये जरूरी कार्रवाही करे और यदि अिसमें वह तारीख २५ नवम्बर ५१ तक विफल हो तो जल्दी ही अिस नीतिका विरोध करनेको महाराष्ट्र तथा गुजरातकी प्रान्तीय समितियोंके साथ मिलकर आन्दोलन शुरू करे।"

"हम सभाको अिस बातका पूर्ण विश्वास देते हैं कि सरकारके मान्यता सम्बन्धी अिस निर्णयका विरोध करनेको तथा हमारी न्यायपूर्ण मांगका समर्थन करनेको जो कोअी भी आन्दोलन सभा द्वारा शुरू किया जायगा अुसमें न केवल हम प्रचारक, बल्कि हजारों विद्यार्थी जो आज हिन्दी पढ़ रहे हैं, अपना पूरा सहयोग देंगे।"

——कान्तिलाल जोशी, मन्त्री

मणिपुर—

अिम्फालः— ता० २८-१०-५१ को आर्यन थिअेटर हालमें पंडित कालाचाँदजी शास्त्रीकी अध्यक्षतामें मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका वार्षिक अधिवेशन सुसम्पन्न हुआ।

प्रारम्भमें मन्त्री श्री छत्रध्वज शर्माजीने समितिका वार्षिक कार्य विवरण पढ़कर सुनाया। अिस अधिवेशनमें कअी प्रस्ताव भी पास हुअे हैं। कुछ प्रस्ताव अिस प्रकार हैं—

स्थानीय सरकारने सूचित किया है कि आजतक मणिपुरी भाषा बंगला लिपिमें लिखी जाती है। अिसके बजाय पाँच सालके भीतर मातृभाषाकी लिपिके स्वरूप देवनागरी लिपिका प्रयोग किया जायगा। यह खुशीका विषय है अतः यह सभा सरकारके प्रति हर्ष प्रकट करती है और अिसका हार्दिक समर्थन करती है।

यह सभा सरकारसे अनुरोध करती है कि मणिपुर के प्रत्येक राष्ट्रभाषा विद्यालयको आर्थिक सहायता दी जाये।

अिसके अुपरान्त सभापति महोदयने राष्ट्रभाषापर प्रकाश डाला और अधिवेशन समाप्त किया।

मध्यप्रदेश—

जबला बु० केन्द्र—खामगाव तहसीलके अन्दर हमारा पुराना प्रचार परीक्षा केन्द्र है। वहांके केन्द्र-व्यवस्थापक श्री कि. तु. मसनेजीकी अभी हालमें मृत्यु हो गयी। बड़े दुःखकी घटना है। हम सभी सहयोगी केन्द्र-व्यवस्थापक अेवं प्रमाणित प्रचारक बन्धु-भगिनी परमात्मासे स्वर्गीय आत्माकी शान्ति और अुनके शोकातुर परिवारको धैर्य प्रदान करनेकी मौन प्रार्थना करें।

अिस केन्द्रमें श्री सी. गो. जोशीजी (प्रधानाध्यापक) ने केन्द्र-व्यवस्थापकका कार्यभार स्वीकार कर लिया है।

गुजरात—

मांडवी (कच्छ)— स्थानीय सज्जन श्री कृष्णकुमार शर्माने अपनी ओरसे कच्छ विभागमें सन् १९५१ की सितम्बरकी 'कोविद' परीक्षामें सर्वप्रथम आनेवाले परीक्षार्थीको "रामचरित मानस" देनेका जाहीर किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरत—राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडलकी ओरसे प्रति वर्ष होनेवाली "पं. परमेष्ठीदासजी जैन निबन्ध स्पर्धा" अिस वर्ष गत् ता. ७ अक्तूबरको मण्डलके कार्यालयमें हुअी। अिसमें राष्ट्रभाषा विद्या मन्दिरके परिचय, कोविद और राष्ट्रभाषा रत्नके परीक्षार्थियोंने काफी संख्यामें भाग लिया।

परिचय, कोविद और रत्नके परीक्षार्थियोंमें प्रथम आनेवालेको पुरस्कार भी दिया जाता है।

लुणावाडा—गत् ता. १२ सितम्बरको लुणावाडा तालुका मुख्य शालामें शामको छः बजे पंचमहाल जिला राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलनका द्वितीय अधिवेशन गांधी आश्रम, गोधराके संस्थापक श्री मामासाहब फड़केकी अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। अधिवेशनमें पंचमहाल जिला स्थानीय बोर्डके अध्यक्ष श्री डाह्याभाअी नायक, गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री-संचालक श्री जेठालालजी जोशी, जिलेके राष्ट्रभाषा कें. व्य. और प्र. प्रचारक तथा रा. भा. प्रेमी काफी संख्यामें अुपस्थित थे।

अधिवेशनमें भाषण करते हुअे श्री डाह्याभाअी नायकने कहा कि हमारे विधान द्वारा हिन्दीको राष्ट्रभाषाका स्थान प्राप्त हुआ है; अतः प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है कि वह अपने राष्ट्रकी राष्ट्रभाषाको अपनावे और अुसका गौरव बढ़ावे।

तत्पश्चात् श्री जेठालालजी जोशीने अपने भाषणमें कहा कि लुणावाडामें पंचमहाल जिला राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलनका द्वितीय अधिवेशन हो रहा है; अुसका श्रेय स्थानीय राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यकर्ताओं और प्रधानतः श्री जटाशंकरजी पण्ड्याको है। आगे आपने कहा कि जनतामें राष्ट्रभाषाके प्रति दिलचस्पी बढ़ती जा रही है और फलतः राष्ट्रभाषाके परीक्षार्थियोंकी संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। राष्ट्रभाषाके राष्ट्रीय कार्यमें हमें जनताका बल मिलता रहा है; और जनताका बल ही सच्चा बल है।

बादमें अध्यक्ष महोदयने अपना भाषण दि और कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पंचमहाल जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका निर्माण हो गया है; जिसके पदाधिकारी और सदस्योंकी नामावली बादमें घोषित की जायगी।

महेसाणा—स्थानीय प्रोग्रेसिव हाअीस्कूलका तृतीय स्नेह-सम्मेलन ता. २१ अक्तूबरसे ता. २५ तक मनाया गया। ता. २५ रातको ८ बजे गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री श्री जेठालालजी जोशीकी अध्यक्षतामें मनोरंजनका कार्यक्रम रखा गया था। अध्यक्ष महोदयने अपने हाथों विद्यार्थियोंको पुरस्कार वितरित किये और राष्ट्रभाषामें अपना भाषण दिया।

सूरत—गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री-संचालक श्री जेठालालजी जोशी ता. १५ नवम्बरको यहाँ आये। आपने राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडलके अध्यक्ष श्री अीश्वरलालजी देसाअी, मन्त्री श्री विपिनबिहारी चटपट, कोषाध्यक्ष श्री साकरचन्द सरैया और केन्द्र व्यवस्थापक श्री नृसिंहप्रसाद अुपाध्यायसे परामर्श करके राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य दृढ़ता और निष्ठासे करनेके बारेमें निर्णय किया।

स्थानीय प्रचारकोंने दृढ़ संकल्प किया है कि राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धाकी परीक्षाओंके लिअे ही हम अपना समय और शक्ति देंगे।

कुशलगढ़—ता. ७-११-५१ को यहाँ शिक्षण सप्ताह समारोह मनाया गया। सप्ताहके आखिरी दिन श्री जेठालालजी जोशीकी अध्यक्षतामें अेक सार्वजनिक सभाका भी आयोजन किया गया। सभामें अध्यक्षने अपने हाथों पुरस्कार दिये और बापूके रचनात्मक कार्यको अपनानेके लिअे अुपस्थित जनतासे अनुरोध किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा-विभाग

आगामी राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंकी तिथियाँ: –

अुत्कल, राजस्थान, विदर्भ-नागपुर तथा हैदराबाद (दक्षिण) के लियेः—

फरवरी १९५२

१. परीक्षा तारीख— १६, १७ फरवरी १९५२

२. सीधे प्रार्थना-पत्र वर्धा-कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख— २७ नवम्बर '५१

३. केन्द्र-व्यवस्थापकके पास आवेदन-पत्र देनेकी अन्तिम तारीख— २० दिसम्बर '५१

४. वर्धा-कार्यालय आवेदन-पत्र पहुँचानेकी अन्तिम तिथि— २७ दिसम्बर '५१

आसाम, बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र, बम्बअी, मध्यभारत, लंका, आफ्रिका, तथा अंडमानके लियेः—

अप्रैल १९५२

१. परीक्षा तारीख— १९, २० अप्रैल १९५२

२. केन्द्र-व्यवस्थापकके पास आवेदन-पत्र देनेकी अन्तिम तारीख -- ३ मार्च १९५२

३. आवेदन-पत्र वर्धा-कार्यालय पहुँचानेकी अन्तिम तारीख— १० मार्च १९५२

४. सीधे प्रार्थना-पत्र वर्धा-कार्यालय-पहुँचानेकी अन्तिम तारीख— १० फरवरी १९५२

राष्ट्रभाषा रत्नकी परीक्षा अप्रैलमें होनेवाली प्रचार परीक्षाओंके साथ १९ और २० अप्रैल '५२ को होगी। शेष प्रश्न-पत्रोंकी परीक्षा ता. २१ और २२ अप्रैलको सुबह ७ से १० बजे तक होगी।

आवेदन-पत्र भरते समय ध्यान दें:—

(अ) अुत्तीर्ण परीक्षाकी क्रम-संख्या, परीक्षाका माह और वर्ष ठीक-ठीक लिखें। गलत और अधूरे आवेदन-पत्र स्वीकृत नहीं किये जायँगे।

(आ) वर्धा-कार्यालयमें आवेदन-पत्र पहुँच जानेके बाद केन्द्र-परिवर्तन नहीं किया जाता है। अतअेव आवेदन-पत्र भरते समय सोच समझकर ही केन्द्रकी खानापूर्त्ति करनी चाहिये।

(अि) साधारणतया आवेदन-पत्र अुसी केन्द्रके व्यवस्थापक द्वारा आना चाहिये जिस केन्द्रसे परीक्षामें बैठना हो। परन्तु यदि किन्हीं कारणोंसे परीक्षार्थी अैसा न कर सकें तो वे किसी दूसरे केन्द्रके व्यवस्थापक द्वारा भी अपना आवेदन-पत्र भेज सकते हैं। किन्तुः—

(१) अैसे परीक्षार्थीको परीक्षा-शुल्कसे चार आना अधिक अतिरिक्त शुल्कके रूपमें देना होगा।

(२) अैसे परीक्षार्थियोंका ब्यौरा केन्द्र-व्यवस्थापकको अेक विशेष पत्रपर भरकर भेजना होगा।

(३) अैसे आवेदन-पत्र अलग बण्डलमें बाँधकर केन्द्र-व्यवस्थापक-वर्धा-कार्यालय भेजेंगे।

(अी) सभी आवेदन-पत्र सशुल्क केन्द्र-व्यवस्थापकके द्वारा अेक साथ ही आना चाहिये।

(अु) कोविदके परीक्षार्थियोंको समिति द्वारा स्वीकृत कोविद-केन्द्रके व्यवस्थापक द्वारा ही आवेदन-पत्र भेजना चाहिये।

नया केन्द्रः—

समितिके स्वीकृत केन्द्रोंके अलावा यदि कोअी राष्ट्रभाषा प्रेमी भाअी या बहन नया केन्द्र खोलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहें तो अिसके लिये अुन्हें परीक्षा-केन्द्र व केन्द्र-व्यवस्थापक-आवेदन-पत्र अपने प्रान्तीय संचालकसे मंगाकर परीक्षा-तिथिसे कम-से-कम ढाअी महीने पहले वर्धा-कार्यालय भेजना चाहिये।

नया केन्द्र खोलनेके लिये भेजे गये आवेदन-पत्र-पर प्रान्तीय संचालककी सिफारिश अवश्य होनी चाहिये।

समितिके कार्यक्षेत्रके अन्तर्गत किसी भी स्थान-पर राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंका केन्द्र खोला जा सकता है। परन्तु—

१. अुस केन्द्रसे बैठनेवाले परीक्षार्थियोंकी संख्या १५ से कम नहीं होनी चाहिये; और--

२. अुस स्थानके आसपास तीन मीलके अन्दर समितिका कोअी दूसरा स्वीकृत केन्द्र नहीं होना चाहिये।

प्रारम्भिकके परीक्षार्थी और प्रचारक बन्धु ध्यान दें—

सन्' ५२ के लिअे प्रचारित पाठ्यसूचीमें राष्ट्र-भाषा प्रारम्भिकके पाठ्यक्रममें "अुड़ते जुगनू" किताबके सामने "डिटो" (,, ,,) चिन्हसे कुछ गलत फहमीकी सम्भावना है। असलमें 'अुड़ते जुगनू' किताब केवल सितम्बरके लिये ही नहीं बल्कि फरवरी, अप्रैल और सितम्बर तीनों बारकी परीक्षाओंके लिअे है।

पुराने पाठ्यक्रमकी सुविधाः--

सन् '५२ की फरवरी और अप्रैलमें होनेवाली राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंमें पुराने (सन् '५१ के) और नये (सन् ५२ के) दोनों ही पाठ्यक्रमोंके अनु-सार प्रश्न-पत्र बनाये जायेंगे।

परीक्षार्थी दोमें से किसी भी अेक पाठ्यक्रमके आधारपर परीक्षाकी तैयारी कर सकते हैं।

प्रश्न-पत्र छपाअीकी सुविधाको देखते हुअे, पुराने और नये पाठ्यक्रमके लिये अलग-अलग भी रह सकते हैं, या फिर अेक हीमें वैकल्पिक रूपसे।

कोविदके पुराने (सन् '५१ के) पाठ्य-क्रममें बैठनेवाले परीक्षार्थी ध्यान दें:--

परीक्षा समितिकी गत बैठकके निर्णयके अनुसार कोविदके पाठ्यक्रममें सामान्य परिवर्तन किया गया है। प्रश्नपत्र अिस प्रकार होंगेः—

प्रश्न-पत्र १—

१. जयद्रथ-वध

२. गुलदस्ता भाग ३-- नीचे लिखी कवितायें छोड़कर—

१. कबीरदासजीका तीसरा पद 'झीनी झीनी बीनी चदरिया'। २. तुलसीदासजीका 'विजय-रथ' ३. 'जय-जय प्यारा भारत देश', ४. विधवा, ५. जगत अुबारो, ६. ग्राम, ७. अुर्दू पद्योंमेंसे 'चुने फूल'।

प्रश्न-पत्र-२— (गद्य और नाटक)

१. शाहजहाँ

२. पाँच अेकांकी

३. आधुनिक गद्य संग्रह--निम्न चार पाठ छोड़कर:-

१. चित्रकारसे २. मनुष्यत्वकी हुँकार ३. मैं और मेरा युग ४. शेष स्मृतियाँ

प्रश्न-पत्र ३— (कहानी, अुपन्यास, शीघ्रवाचन तथा समालोचना)

१. ग़बन या निशागीत

२. आत्मकथा

३. कहानी संग्रह भाग ३

४. साहित्यका साथी

केवल नीचे लिखे परिच्छेद रहेंगे :--

पृष्ठ-संख्या १ से १८; ३५ से ३६; ५८ से ६५ तथा ८३ से ९३

प्रश्न-पत्र ४— (निबन्ध, सारलेखन, मुहावरे, कहावतें, अनुवाद, व्याकरण, तथा राष्ट्रभाषा प्रचार सम्बन्धी ज्ञान)

१. राष्ट्रभाषा-सर्व संग्रह, २. राष्ट्रभाषा रचना ३. मुहावरे और कहावतें, ४. संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण ५. हिन्दीके समाचार-पत्र, मासिक-पत्र-पत्रिकायें, समितिका मुखपत्र 'राष्ट्रभाषा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर ५१ की राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा

का

परीक्षाफल

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा संचालित राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षाके लिये सभी प्रान्तोंसे २३३ परीक्षार्थियोंने आवेदन-पत्र भरे थे । अुनमेंसे १८६ परीक्षार्थी राष्ट्रभाषा-रत्न परीक्षामें सम्मिलित हुअे ।

अुत्तीर्ण परीक्षार्थियोंका परीक्षा-फल श्रेणीवार निम्न प्रकार है:—(नामकी बांअी ओर क्रम-संख्या और सामने कुल प्राप्तांक दिये गये हैं ।)

पहली श्रेणी

१५८ श्री. गिरीधरलाल रत्नग्राही -४५४ (सर्वप्रथम)
१८० ,, कु. मालती ह. देसाअी ४४३ (द्वितीय)

दूसरी श्रेणी

१५	श्री. सुब्रह्मण्य सां. शर्मा	३५२
७३	,, छगनलाल व. परमार	३७५
८४	,, कैलाश बहन छ. घीवाला	३६७
१२८	,, बबन का. विप्रदास	४११
१४८	,, अेकनाथ दा. कामते	३५५
१८४	,, रविशंकर ल. याज्ञिक	३७६
१६४	,, सौ. शान्ता दि. चाटी	३६३
७०	,, ब्रजलाल ही. हसाणी	३७०
७६	,, मुकुन्दराय ज. कक्कड़	३८५
१२६	,, परशराम पु. मेहेंन्दले	३७२
१२६	,, दत्तात्रय ग. नेरलेकर	३५६
१६५	,, कु. देवी तो. तन्नानी	३५६
१६२	,, ब्रजलाल पी. शाह	३६८
२०८	,, कुंजबिहारी अ. मेता	३६४

तीसरी श्रेणी

५	श्री. गिरधारी वा. मिश्र	२६६
२८	,, सेवाराम गंगाराम	३३४
३०	,, ताराचन्द ज्ञा. सौगाणी	३३५
३६	,, चिमनलाल क. शाह	३०७
४४	,, नटवरलाल र. पंड्या	२८०
४८	,, मोहनलाल घो. खोलकिया	२८६
५२	,, नारणीभाअी ही. पटेल	३१३
५४	,, केशवलाल ना. पटेल	२६१
५८	,, स्नातिका शांतिदेवी शुक्ल	२६८
६०	,, जान्हविका द. त्रिवेदी	२६४
७१	,, लक्ष्मीशंकर अं. भट्ट	२६०
७८	,, कुसुम व. रेशमदलाल	२८२
८७	,, हरगोविन्द गी जोशी	२८६
६०	,, पार्वतीशंकर ह. दवे	३२७
६३	,, माखनलालजी व्यास	३०८
६६	,, मगनलाल चं. महेता	३१०
६	,, प्रकाशचन्द्र बु. मिश्र	२८१
२६	,, मुरलीधर तो. केशनानी	३३६
३२	,, महेन्द्रकुमार म. पटेल	३०२
४०	,, जीवनलाल बा. आचार्य	२८७
४६	,, भानुशंकर ध. त्रिवेदी	२८८
४६	,, साधु रामनिवास	२६७
५३	,, रमणिकलाल मो. गान्धी	३२६
५६	,, चंपकलाल ची. भट्ट	३२१
५६	,, कुमुदराय पु. पंड्या	३१०
६६	,, गोवरधनदास चु. शाह	३२६
७२	,, कान्तिलाल द्वा. निम्बार्क	३२०
७६	,, वीरमती छ. बंगाली	२६३
८६	,, माणिकलाल मो. मास्तर	२६७
६१	,, त्र्यंबकलाल ह. सेवक	३०२
६४	,, कंचनलाल अं. अुपाध्याय	३३६
१०४	,, अीश्वरलाल चं. ख्याली	२८८
१०७	,, विट्ठलराम के. त्रिवेदी	२८३
११२	,, अिन्दु रा. कुलकर्णी	३१७
११५	,, जगन्नाथ ग. यादव	३०५
१२४	,, यशवन्त ना. पाटील	३१३
१३०	,, नागेश गं. दिवाकर	२८०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३३ ,,	केशव द. सोनोने	२६१
१४१ ,,	मधुकर ल. प्रधान	३१२
१४६ ,,	धनुप्रसाद म. त्रिवेदी	३१५
१५३ ,,	अुर्मिला हेमराव नगरेचा	३१०
१६६ ,,	नारायण गं. तुक्र	३०६
१७५ ,,	भानुवती ही काटबामना	३१०
१८२ ,,	मोहिणी चो गाजरा	३३३
१८७ ,,	वनलता ही दलाल	३१३
१६८ ,,	सरला ची. महेता	३०७
२०४ ,,	हंसा बा. देसाअी	२६५
२२३ ,,	सदाशिव किसन हुमने	२८५
२३३ ,,	अयूर शामसुन्दर देव	२८८
३६ ,,	कंचन डा. शाह (मौ० प्राप्तांक)	४८
६७ ,,	चिमनलाल छगनलाल (,,)	४३
१०६ ,,	बाबुभाअी प्रे. पटेल (,,)	४०
११० ,,	सूर्यकान्त पु. क्षीरसागर (,,)	४०
१०८ ,,	सरस्वती ग. फड़के	३१७
११४ ,,	अंबाताअी देसाअी	२६६
१२१ ,,	हरिकृष्णदास मेहता	३०२
१२७ ,,	विष्णु ग. जोशी	३४३
१३२ ,,	कृष्णाजी गं. दिवाकर	३०६
१३७ ,,	कृष्णा र. क्षीरसागर	३०५
१४४ ,,	मोहनलाल न. पटवारी	३०४
१५२ ,,	अिन्दिराशंकर भिड़े	३३५
१६० ,,	चन्द्रकान्त बा. वैद्य	२६७
१६८ ,,	पद्मावती ठा. पटेल	३१६
१७७ ,,	मधुकर ल. दिवाड़कर	३०४
१८६ ,,	लक्ष्मणदास चु. शाह	३०२
१८८ ,,	विजयकुमार रा. त्यागी	३०७
२०० ,,	सिन्धु म. दामले	२८६
२१७ ,,	लक्ष्मी अ. पोद्दार	२८५
२२४ ,,	शंकर लि. लोखंडे	३०१
५० ,,	रा० न० भागचन्दानी	२८६
१२५ ,,	ह० गो० मारवाड़ी	२८५
३७ ,,	चन्द्रकान्त गो. चौक्सी (मौ० प्राप्तांक)	४६
७७ ,,	ब्रजलाल म. राणा (,,)	४७
१०६ ,,	कु० रोहिणी देसाअी (,,)	४७
१११ ,,	प्रहलाद म. भावसार (,,)	४३

मौखिक-सुविधा

२१ श्री. कोटेला वेंकटराव
१३१ ,, विनायक गो. कर्डे
६६ ,, जमनादास जोशी
७५ छगनलाल ह. ठक्कर

अेक सुविधाः—जो अनुत्तीर्ण परीक्षार्थी रत्नके किन्हीं चार प्रश्न-पत्रोंमेंसे प्रत्येकमें कम-से-कम ४० प्रतिशत अंक प्राप्त कर चुके हों, परन्तु शेष दो प्रश्न-पत्रोंमें अनुत्तीर्ण हों, अुन्हें केवल अनुत्तीर्ण प्रश्नपत्रोंमें ही दुबारा बैठनेकी सुविधा दी जायगी। अैसे परीक्षार्थियोंसे परीक्षा-शुल्कके रूपमें ५) रु० (पाँच रुपये) लिये जाँयगे।

यह नियम सितम्बर '५१ की परीक्षाके परीक्षार्थियोंसे लागू होगा।

अिस नियमके अनुसार नीचे लिखे परीक्षार्थियों को अुनके सामने दिये हुअे प्रश्न-पत्रोंमें बैठनेकी सुविधा दी गयी हैं। ये परीक्षार्थी अप्रैल-५२ में परीक्षा दे सकेंगे।

१० श्री.	भागीरथी श्री. महन्ति	४ और ६
८१ ,,	बसन्तबहन ह. सेट	४ और ६
१७४ ,,	मनुमती ज. महेता	१ और ४
६४ ,,	भुजंगीलाल पु. दलाल	१ और ६
६७ ,,	शान्तिलाल का. चौहान	१ और ६
१६२ ,,	टिचर बैंकटेश्वर	१ और ४
२०३ ,,	हंसराज, ज. नेगांधी	१ और ४

२११ श्री अमृत नी. पाटील धारवाड़का परीक्षा-फल बादमें घोषित किया जायगा।

फरवरी और अप्रैल '५२ के लिये कोविद निबन्ध-सूचीः—

१. गोस्वामी तुलसीदास और अुनकी सर्वप्रियता। २. देशकी वर्तमान स्थितिमें नागरिकोंका कर्त्तव्य। ३. आदर्श गाँव। ४. स्वावलम्बन। ५. विश्वको भारतकी देन। ६. वर्षा-ऋतु। ७. मित-व्ययिता। ८. रचनात्मक कार्यक्रम। ६. सहशिक्षा। १०. साहित्य समाजका प्रतिबिम्ब। ११. सहकारिता आन्दोलन। १२. अधिक अन्न अुपजाओ आन्दोलन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर '५१ की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओंके अखिल भारतमें सर्वप्रथम तथा प्रान्तमें प्रथम और द्वितीय

पुरस्कार-विजेता परीक्षार्थी

विशेष— अखिल भारतमें सर्वप्रथम आनेवाले पुरस्कार-विजेता परीक्षार्थियोंको प्रान्तमें प्रथम आनेका पुरस्कार भी दिया गया है।

+ निशानवाले प्रान्तमें प्रथम हैं किन्तु प्रथम श्रेणीमें न आनेके कारण पुरस्कार पानेके अधिकारी नहीं हैं।

० निशानवाले प्रान्तमें द्वितीय हैं किन्तु प्रथम श्रेणीमें न आनेके कारण पुरस्कार पानेके अधिकारी नहीं हैं।

राष्ट्रभाषा कोविद

अखिल-भारतमें सर्व-प्रथम

क. सं. ४०७५ कु. कमल सखाराम जोशी, नासिक शहर, प्राप्तांक २५८ सर्वप्रथम पुरस्कार (मीनाकारी चाँदीका पदक तथा ५) की पुस्तकें)

असम प्रान्तमें

	क. सं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	पुरस्कार
प्रथम	१५४७	श्री मीरा गुह	शिलांग	१६५	+
	१५५१	,, लतादास गुप्ता	,,	१६५	+
द्वितीय	१५४८	,, आशा चक्रवर्ती	,,	१८४	०

बंगाल प्रान्तमें

प्रथम	१६११	,, बेलादास गुप्ता	द. कलकत्ता	२०५	+
द्वितीय	१६३२	,, किरण चक्रवर्ती	उ. कलकत्ता	१८४	०

उत्कल प्रान्तमें

प्रथम	१६७४	,, गोपीनाथ महापात्र,	पुरी	२२०	+
द्वितीय	१६५६	,, कमलाकान्त द्विवेदी,	कटक	२१५	०

राजस्थान (सिंध समितिसे)

प्रथम	१७४६	,, उत्तम रीझूमल मीरचन्दाणी,	उदयपुर	२४०	१०)
द्वितीय	१७८६	,, सलामतराय ओचीराम गुरबानी,	जयपुर	२३६	०

गुजरात प्रान्तमें

प्रथम	३०५४	,, राधेकान्त वल्लभराम दवे,	भावनगर	२४६	१०)
द्वितीय	२२४	,, कृष्णस्वरूप रामप्यारामल गुप्ता,	अहमदाबाद	२४१	८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र प्रान्तमें

प्रथम	४०७५	,, कु. कमल सखाराम जोशी,	नाशिक शहर	२५८	१०)
द्वितीय	४२६२	,, कु. नलिनी वैकुण्ठ मजूमदार,	पूना	२५३	८)

बम्बअी प्रान्तमें

प्रथम	५६२	,, अेस. अेन. राघवन्	किंग्जसर्कल	२४९	१०)
द्वितीय	५५६	,, अेम. कल्याणन्	,,	२४४	८)

विदर्भ-नागपुर प्रान्तमें

प्रथम	४८९०	,, कु. शान्ति नागजीशाह	नागपुर (धन्तोली)	२२६	+
द्वितीय	४९७६	,, कु. सुधा बालकृष्ण नागले	वर्धा	२१४	०

हैदराबाद प्रान्तमें

प्रथम	५०४४	,, शालिग्राम दे. जोशी,	परभणी	१८४	+
द्वितीय	५०३३	,, बद्रीनारायण बालमुकुन्द सारस्वत,	जालना	१५९	०

राष्ट्रभाषा परिचय

अखिल-भारतमें सर्व-प्रथम

क्र. सं. १६६३३ श्री केशव माधवराव मुन्शी, खामगाँव, प्राप्तांक २२६, १०) सर्वप्रथम पुरस्कार

असम प्रान्तमें

प्रथम	४३०१	श्री कालीचरण,	अिम्फाल	१९४	८)
द्वितीय	४२३२	,, अपर्णा दे.,	शिलांग	१९१	६)

बंगाल प्रान्तमें

प्रथम	४५२५	,, सरस्वती सरकार,	अु. कलकत्ता	२०४	८)
द्वितीय	४४३६	,, यशोदा कुमारी अग्रवाल,	कर्सियांग	१९५	६)

अुत्कल प्रान्तमें

प्रथम	४७४२	,, गौरीशंकरलाल,	पुरी	१८१	८)
द्वितीय	४८१२	,, विनोदबिहारीदास देवशर्मा	बलांगीर	१७१	०

राजस्थान प्रान्तमें

प्रथम	५१९२	,, छगनलाल तोसनीवाल	चित्तौड़गढ़	२१०	८)
द्वितीय	४९३२	,, चेतनदास सुगनोमल	अजमेर	१९३	६)

गुजरात प्रान्तमें

प्रथम	१३५६	,, जगदीश प्रेमशंकर द्वे	अहमदाबाद	२२५	८)
द्वितीय	७४७२	,, अुषा त्र्यंम्बकलाल जोषी	जामनगर	२२१	६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र प्रान्तमें

प्रथम	१४१६१	,, प्रभावती सदाशिव खाड़िलकर,	गारगोटी	२२४	८)
द्वितीय	१५६१८	,, नारायण मारोती भोंसले	मालेगांव	२२०	६)

बम्बअी प्रान्तमें

प्रथम	३७४६	,, कु. पद्मा रमेश अध्वर्यु,	माटुंगा	२१५	८)
द्वितीय	३६१२	, कु. रजनी वसन्त अष्टमकर	माहिम	२१३	६)

विदर्भ-नागपुर प्रान्तमें

प्रथम	१६६३३	,, केशव माधवराव मुन्शी	खामगांव	२२६	८)
द्वितीय	१६६५५	,, शंकर विष्णु पन्त	,,	२०६	६)

हैदराबाद प्रान्तमें

प्रथम	१८१०४	,, ललितकुमार परीख,	हैदराबाद	१८८	८)
द्वितीय	१७९८४	,, जगन्नाथ गणेशलाल गिलड़ा,	लातूर	१८७	३)
,,	१८०३६	,, केशवराव नरसिंहराव,	हैदराबाद	१८७	३)

राष्ट्रभाषा प्रवेश

अखिल भारतमें सर्वप्रथम

क्र. सं. - १५९६ श्री मोहनसिंह प्रभातसिंह चौहान, अहमदाबाद,प्राप्तांक १९६, ८) सर्वप्रथम पुरस्कार

असम प्रान्तमें

	क्रमांक	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	पुरस्कार
प्रथम	६४०१	श्री रत्नकांत गोस्वामी	पलासवाड़ी	१३६	६)
द्वितीय	६४३३	,, लखिमी चौधरी	शिलांग	१३०	४)

बंगाल प्रान्तमें

प्रथम	७००२	,, निर्मला जसानी	बड़ाबाज़ार	१५४	३)
	७०४२	,, गोपालचन्द्र भड़	,,	१५४	३)
द्वितीय	७०३६	,, पुष्पावती शाह	,,	१४७	१।-)।
	७०००	,, चंपा अजारिया	,,	१४७	१।-)।
	६९७०	,, विमलेन्दु विकास चौधरी	अु० कलकत्ता	१४७	१।-)।

अुत्कल प्रान्तमें

प्रथम	७१५२	,, सुदर्शन पाणिग्रही	आस्का	१५६	३)
	७७५४	,, त्रिलोचन पंडा	बालिकुदा	१५६	३)
द्वितीय	७१४४	,, विजयकेतन पट्टनायक	आस्का	१५०	४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान (सिन्ध समितिसे)

	क. सं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	
प्रथम	८४०४	,, नारायण रुधमल वरीदानी	अजमेर	१४३	६)
द्वितीय	८६६६	,, हासाराम पेसूमल गोमवाणी	जयपुर	१४०	४)

गुजरात प्रान्तमें

प्रथम	१५६६	,, मोहनसिंह प्रभातसिंह चौहान	अहमदाबाद	१६६	६)
द्वितीय	१६८०३	,, चन्द्रशेखर शंकर मोहिल	विसनगर	१६१	४)

महाराष्ट्र प्रान्तमें

प्रथम	२३६७२	,, गोविन्द भीमाजी कुलकर्णी	कोल्हापुर	१६१	६)
द्वितीय	२६३७८	,, वसन्त शंकर देशपांडे	मलकापुर	१६०	४)

बम्बई प्रान्तमें

प्रथम	५७१४	,, शान्ता गजानन वीरकर	माटुंगा	१५६	६)
द्वितीय	३६३७	,, शान्ता परशराम जोगलेकर	गिरगाँव	१५६	२)
	६१२७	,, माधव बालकृष्ण पन्नसुले	विलेपार्ले	१५६	२)

विदर्भ-नागपुर प्रान्तमें

प्रथम	२८८८८	,, गणेश अमृतराव निमोरकर	करजगाँव	१५४	६)
द्वितीय	२८६००	,, गोविन्द भास्कर देशपांडे	कलम्ब	१५३	३)

हैदराबाद प्रान्तमें

प्रथम	३१६३६	,, मीर अुस्मान अली	सदाशिवपेठ	१०१	+
द्वितीय	३१६४०	,, चितापुर बसवराजु	,,	६३	०

राष्ट्रभाषा प्रारम्भिक

अखिल भारतमें सर्वप्रथम

क. सं. १३२८४ श्री नन्दाबा हिम्मतसिंह परमार, जामनगर, प्राप्तांक ६२, ५) सर्वप्रथम पुरस्कार

असम प्रान्तमें

प्रथम	६०१५	श्री अहैबम मधुसूदनसिंह	मालोम	७२	४)
द्वितीय	५४६८	,, कु. नफीसा खातुन	शिलांग	७१	२)

बंगाल प्रान्तमें

प्रथम	६३८२	,, अनिलकुमार वंद्योपाध्याय	द. कलकत्ता	८३	४)
द्वितीय	६२०३	,, मिसेस लीला दत्त	,,	७६	।=)॥
	६२३२	,, शंकरी मुखर्जी	,,	७६	।=)॥
	६२७३	,, सुजाता सेन	,,	७६	।=)॥
	६२७४	,, विजु राय	,,	७६	।=)॥
	६४२५	,, कमल मुखर्जी	,,	७६	।=)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कल प्रान्तमें

	क्र. सं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	
प्रथम	७२१३	,, अद्वैत चरण शतपथी	कामाक्यानगर	७६	४)
द्वितीय	६८८८	,, दामोदरदास शर्मा	आस्का	७५	॥≋)
	७७६६	,, राधाकान्त मिश्र	बडम्बा	७५	॥≋)
	८३८१	,, वैद्यनाथ महापात्र	राजसुनाखला	७५	॥≋)

राजस्थान (सिन्ध समितिसे)

प्रथम	८६६३	,, त्रिलोचनसिंह दिललसिंह	अजमेर	८२	४)
द्वितीय	८८२६	,, वीरू डीलाराम लुड	कोटा	७५	२)

गुजरात प्रान्तमें

प्रथम	१३२८४	,, नन्दावा हिम्मतसिंह परमार	जामनगर	६२	४)
द्वितीय	१०५५७	,, चिमनभाओी बाभओीदास पटेल	अुमता	८६	१)
,,	१०५६५	,, चन्द्रकान्त छोटालाल शाह	अुमरेठ	८६	१)

महाराष्ट्र प्रान्तमें

प्रथम	२६४३८	,, करमचन्द पण्डित शर्मा	भिंगार	८८	४)
द्वितीय	२५३२८	,, ज्ञानू बापू नागांवकर	कारदगा	८३	१)
	३१३६४	,, नारायण नरहर भिसे	सातारा	८३	१)

बम्बओी प्रांतमें

प्रथम	२८३०	,, कनुभाओी सोमाभाओी शाह	गिरगांव	८७	४)
द्वितीय	३८३६	,, अनुसूया केशव अलूरकर	दादर	८६	२)

विदर्भ नागपुर प्रांतमें

प्रथम	३२७१६	,, कलावती सेवकराम गुप्ता	आकोट	८६	४)
द्वितीय	३२८३१	,, सिन्धू दामोदर रेखड़े	आर्वी	८४	२)

हैदराबाद प्रांतमें

प्रथम	३६२८१	,, अम. रामलिंगम्	सदाशिव पेठ	५२	×
द्वितीय	३६२७६	,, के. रामरेड्डी	,,	५१	०

सितम्बर ५१ की राष्ट्रभाषा अध्यापन-विशारद परीक्षा का परीक्षा-फल

क्रमांक	नाम	प्राप्तांक	श्रेणी	क्रमांक	नाम	प्राप्तांक	श्रेणी
१	श्री. शं. कृ. वेलमकर	१३५	३	६	श्री. कलमेश्वर जोशी	१३०	३
२	,, ल. दा. नवरे	१६९	२	७	कु. गो. ज. देव	१५१	२
४	सोनूताओी पालकर	१५५	२	८	सौ. क. छ. परदेशी	१४०	३
५	कु. मन्दा ग. थत्ते	१२५	३				

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112531

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रमाणित-प्रचारक

प्रान्त	प्रचारकका नाम	क्रमांक	स्थान
महाराष्ट्र	श्री विश्वनाथ गोपाल माली	२७९६	चोपडा
”	” किशनचन्द ठा. वास्नाणी	२७९७	पंचवटी
”	” भाऊ कल्लापा शहापुरे	२७९८	शेडशाल
”	” नारायण वेंकटराव हंचाटे	२७९९	हुबली
”	” भाऊराव वाजीराव पाटील	२८००	चोपड़ा
”	” रामचन्द्र ओश्वरय्या अक्षंतल	२८०१	सोलापुर
”	” कुंजबिहारी अमृतलाल म्हेता	२८०२	नारगोल
”	” शिवाजी मोनापा भोसले	२८०३	वेलगांव
”	” राजाराम गंगाराम चौधरी	२८०४	जामनेर
”	” टोपा गणपत बोंडे	२८०५	खिर्डी
”	” काशीनाथ सोनजी झांबरे	२८०६	”
”	” बचाराम लीलाराम लेदवाणी	२८०७	कल्याण कॅम्प
”	” चिन्तामण केशव देवरे	२८०८	पूना
”	” सौ. दमयंती खंडेराव सोलापुरकर	२८०९	कोल्हापुर
”	” कृष्णाजी नारायण मेढ़ेकर	२८१०	पूना
”	” जगदेव लक्ष्मण कदम	२८११	रेवड़ी
”	” मनोहर गजानन जोशी	२८१२	पूना
”	” मुरलीधर कृष्णचन्द्र जेतली	२८१३	”
”	” श्रीपाद लक्ष्मण मुले	२८१४	घोड़नदी
बम्बओी	” निर्मला त्रिभुवनदास दोशी	२८१५	बम्बओी
”	” मोहन न. मेन्डन	२८१६	”
”	” मनूबाओी सीताराम वैद्य	२८१७	”
”	” महेन्द्रकुमार परशुराम भट्ट	२८१८	”
”	” अेलायझा मोजस आब्राहाम	२८१९	”
”	” अमाओीदास रामजीभाओी पटेल	२८२०	”
”	” भगवतीदीन गुप्त	२८२१	”
”	” सुशीला भास्कर कुन्दर	२८२२	”
”	” मधुकर सीताराम शेटगे	२८२३	”
”	” वीरमती छोटालाल मेधा	२८२४	”
”	” मुरलीधर गुरुनाथ सवदी	२८२५	”
”	” मनोहरलाल पन्नालाल जोशी	२८२६	”
”	” परशुराम विश्वनाथ पुराणिक	२८२७	”
”	” विद्यावती दासराम खेड़ा	२८२८	”

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त	प्रचारकका नाम	क्रमसंख्या	स्थान
,,	,, गिरधरलाल तुलसीदास रत्नग्राही	२८२६	,,
,,	,, द्वारकादास जीवनदास वेद	२८३०	,,
,,	,, रविन् जगमोहन जोशी	२८३१	,,
,,	,, वामन मोरेश्वर बापट	२८३२	,,
,,	,, मोहनलाल गोरधनदास दवे	२८३३	,,
विदर्भ-नागपुर	,, दत्तात्रय यशवन्त खपली	२८३४	बुलढ़ाणा
,,	,, नारायण झावनसा नाफड़े	२८३५	नांदुरा (बु॥)
,,	,, हरिश्चन्द्र राँ. सोजरानी	२८३६	वर्धा
,,	,, मदनलाल गौर	२८३७	,,
हैदराबाद	,, अेस् व्यंकटेश्वरराव	२८३८	हैदराबाद

नये केन्द्र

क्रमांक	केन्द्र	जिला	प्रान्त
१०५४	संजेली	पंचमहल	गुजरात
१०६७	कोटंबा	,,	,,
१०५८	वणोली	खेड़ा	,,
१०७१	संभा	भड़ोंच	,,
१०७३	चवेली	महेसाणा	,,
१०७८	नवापुर	प. खानदेश	महाराष्ट्र
१०८१	नारगाँव	अु. सातारा	,,
१०८४	ढेबेवाडी	,,	,,
१०८७	रेवडी	,,	,,
१०८६	नांदगाँव	,,	,,
१०६०	अहेरगाँव	चांदा	म. प्रदेश
११०३	बल्लारपुर	,,	,,
११०५	विंचोरी	अमरावती	,,
१११५	वलगाँव	,,	,,
११०८	आर्णी	यवतमाल	,,
११२१	बोलंगड़	पुरी	अुत्कल
११२६	गुजीदरड़ा	बालेश्वर	,,
११२७	अकोढ़ा	भिन्ड	म. भारत
११२८	श्योपुर कलां	मुरेना	,,
१११७	शहापुर	बुलढाना	म० प्रदेश
१११६	सावर गाँव (डुकरें)	,,	,,
११२०	साखली (बुद्रक)	,,	,,
१११८	अजनसिंगी	अमरावती	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पूना

के तत्त्वावधानमें

राष्ट्रभाषा-प्रचारकों अेवं परीक्षार्थियोंके अुपयोगकी

हिन्दीकी अभिनव साहित्यिक मासिक पत्रिका

"जयभारती"

संपादक अेवं प्रकाशक— श्री. पं. मु. डांगरे

★

प्रारंभिकसे लेकर अूँची परीक्षाओंतककी परीक्षोपयोगी सामग्री: साहित्य, परंपरा, संस्कृति विषयक लेख, शंका समाधान; साहित्य परिचय; मधुसंकलन; हिन्दी जगत; परीक्षा विषयक सूचनाअें, आवश्यक जानकारी, कहाँपर कौन क्या पढे ? आदि नाविण्यपूर्ण अेवं समयोचित रचनाओं अेवं विशेषताओंसे भरपूर।

चार वर्षोंसे बराबर निकल रही है।

प्रतिमास दि० १९ को निकलती है।

वार्षिक मूल्य ३) रु० राष्ट्रभाषा परीक्षार्थियोंको २) रु०

वर्धा समितिके प्र. प्रचारकोंको १) रु० वी. पी. का नियम नहीं है।

शीघ्र मँगायें। शीघ्र ग्राहक बनकर लाभ अुठायें।

पं. मु. डांगरे
संचालक,
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
८६६ सदाशिव पेठ, ताराचंद मार्केट, शनिपारके पास,
पो. बॉ. नं० ५५८, पूना २ (महाराष्ट्र)

गुरुराम शर्मा द्वारा राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धामें मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112531

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar